



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

तरंग

संयुक्तांक 147-148

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

हिन्दी

भारतीय संस्कृति
की आत्मा है



सोंधी सुगंध,
मीठी सी भाषा ।
गर्व से कहो
हिन्दी है मेरी भाषा ॥

हिन्दी दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएँ

तरंग

संयुक्तांक
147-148

केवल विभागीय वितरण हेतु



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिंदी पत्रिका

तरंग

(संयुक्तांक : 147-148)

सितम्बर, 2024-अगस्त, 2025

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-प्रथम)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

- ▶ टिप्पणियाँ हिंदी में लिखिए।
- ▶ मसौदे हिंदी में तैयार कीजिए।
- ▶ शब्दों के लिए अटकिए नहीं।
- ▶ अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
- ▶ अभ्यास अविलम्ब आरम्भ कीजिए।

सम्पादक मण्डल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।
रचनाकारों के विचार उनके व्यक्तिगत विचार हैं।

मूल्य: “राजभाषा के प्रति निष्ठा”

आवरण पृष्ठ : महाकुंभ का विहंगम चित्रण

अन्तिम आवरण पृष्ठ : प्रकाशमान कार्यालय का मनोरम दृश्य

तरंग परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री राजकुमार

प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

प्रधान एवं कार्यकारी संरक्षक

सुश्री प्रोमी

वरिष्ठ उप महालेखाकार प्रशासन एवं /ए.एम.जी.- III

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

सुश्री पूजा कुमारी

उप महालेखाकार/ए.एम.जी.- II

(लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

श्री रवि कथूरिया

उप महालेखाकार/ए.एम.जी.- I

(लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

श्री अमृतेश शुक्ला

उप महालेखाकार/ए.एम.जी.- IV

(लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

श्री लोकेश चौधरी

उप महालेखाकार/ए.एम.जी.- V

(लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

संपादक

सुश्री किरन लता

सहायक निदेशक/राजभाषा

सह-संपादक मण्डल

सुश्री रीनू गुप्ता

कनिष्ठ अनुवादक

श्री सुधीर कुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सुश्री अन्जू कुमारी

वरिष्ठ लेखापरीक्षक



संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का अवसर है कि कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'तरंग' के नवीनतम अंक (147-148 वें संयुक्तांक) का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका 'तरंग' से जुड़े हुए समस्त रचनाकारों, लेखकों एवं संपादन मंडल के सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके उत्तम, सराहनीय एवं रचनात्मक प्रयास से पत्रिका में विभिन्न समसामयिक विषयों पर आधारित लेख, कहानी, कविता, सामान्य एवं महत्वपूर्ण जानकारीयों कतिपय ज्ञानवर्धक, रुचिपूरक तथा सारगर्भित जानकारीयों का समावेश है।

मेरा मानना है कि संघ कि राजभाषा नीति के बेहतर क्रियान्वयन एवं व्यापक प्रचार-प्रसार में गृह पत्रिकाओं की अहम भूमिका है एवं इस भूमिका के निर्वहन में कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'तरंग' हमेशा अग्रणी रही है।

जो कार्मिक तथा उनके प्रियजन यह सोचते थे कि, हम कैसे लिख सकते हैं ? क्या लिख सकते हैं ? हमारा लिखा हुआ कौन प्रकाशित करेगा ? कौन पढ़ेगा ? उन सभी को यह पत्रिका अपनी रचनात्मक क्षमता प्रकट करने का एक सुअवसर प्रदान कर रही है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य कार्मिकों तथा उनके प्रियजनों को अपने समाज, भाषा, संस्कृति, साहित्य के प्रति जागरूक करते हुए उनकी बातों को लेखनी के माध्यम से मंच प्रदान करना है।

अतः मैं राजभाषा पत्रिका 'तरंग' में आशातीत प्रगति एवं उद्देश्यपूर्ण सफल प्रकाशन हेतु नित नए विचारों के समावेश और उत्तम लेखों से युक्त अनुभवों को व्यक्त करने के लिए सभी कार्मिकों एवं संपादन मंडल के सदस्यों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। शुभकामनाओं सहित।

राज कुमार

(राज कुमार)

प्रधान महालेखाकार

लेखापरीक्षा प्रथम

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

कार्यालय की गृह पत्रिका 'तरंग' का प्रकाशन अत्यंत हर्ष एवं प्रसन्नता का विषय है। पत्रिका के माध्यम से कार्यालय की सृजनात्मक प्रतिभाओं के लेखन कौशल को अभिव्यक्त करने का प्रयास सफल रहा है।

कार्यालय की यह पत्रिका कार्मिकों को अपनी लेखन क्षमता विकसित एवं संवर्धित करने के लिए एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करती है। इस पत्रिका के प्रकाशन से एक ओर जहाँ राजभाषा हिंदी का संवर्धन होता है तो वहीं दूसरी ओर ज्ञानार्जन एवं एक दूसरे कार्मिकों के अनुभव भी साझा होते हैं। यह पत्रिका न केवल इस कार्यालय के कार्मिकों की भावनाओं एवं विचारों की धोतक है, अपितु राज्य की कला और संस्कृति की सुन्दर झलकियाँ भी प्रस्तुत करने का भी माध्यम बन गयी है।

अग्रेतर, अपनी रचनाओं यथाय लेखों, कहानियों, कविताओं, प्रेरक प्रसंगों इत्यादि विभिन्न साहित्यिक विधाओं से पत्रिका को जीवंत और संपन्न बनाने वाले पदाधिकारियों की सृजनशीलता सराहनीय है। आशा है कि कार्यालय के पदाधिकारियों द्वारा जिस उत्साह से उक्त पत्रिका हेतु सृजनात्मक कार्य किया गया है, उसी उत्साह से वे कार्यालयीन कामकाज में भी हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देते हुए राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान प्रदान करते रहेंगे।

Dedicated to Truth in Public Interest

(राजीव कुमार पाण्डेय)

प्रधान महालेखाकार

लेखापरीक्षा द्वितीय

उत्तर प्रदेश, लखनऊ



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि कार्यालय की विभागीय राजभाषा पत्रिका तरंग का नवीनतम अंक प्रकाशित होने जा रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे साहित्यिक और रचनात्मक प्रयासों को प्रदर्शित करती है, बल्कि राजभाषा हिन्दी के प्रति हमारे कर्तव्य, गौरव और समर्पण की भावना को भी दर्शाती है।

पत्रिकाएं भाषा को बढ़ावा देने का एक प्रभावी मंच हैं। ये विचारों को व्यक्त करती हैं और राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधती हैं। किसी भी देश की भाषा उसकी संस्कृति और एकता की पहचान होती है। हमारा दृढ़ संकल्प है कि हम राजभाषा हिन्दी को व्यवहार में लाएँ। हमारा सामूहिक प्रयास इसके प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह हमारा कर्तव्य है कि हम कार्यालय के निर्धारित राजभाषा लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हमेशा तैयार रहें और उसके मानकों पर खरे उतरें।

मैं 'तरंग' के प्रकाशन के लिए संपादन मंडल और सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ और पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

SUPREME AUDIT INSTITUTE OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

शंजय कुमार

प्रधान निदेश लेखा परीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ



संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि हमारी कार्यालयीन गृह पत्रिका "तरंग" के 147-148 वें संयुक्तांक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी भाषा हमारे देश की समृद्ध संस्कृति एवं संस्कारों का प्रतिबिम्ब है और साथ ही राजभाषा के रूप में भी हिंदी राष्ट्रीय स्वाभिमान और सांस्कृतिक गौरव का प्रतिनिधित्व करती है। अतः हिंदी के प्रति प्रेम एवं सम्मान व्यक्त करना हम सभी का राष्ट्रीय कर्तव्य है। हिंदी पत्रिकाओं के माध्यम से कार्यालय स्तर पर हिंदी में विचारों की अभिव्यक्ति का उचित अवसर प्रदान करना है, ताकि व्यापक पैमाने पर हिंदी भाषा का विकास एवं प्रचार-प्रसार किया जा सके। 'तरंग' पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए कार्यालय के अधिकारीगण और कर्मचारीगण ने प्रेरणा एवं लगन से साहित्यिक प्रतिभा को नवीनतम रूप में अभिव्यक्त किया है। मैं "तरंग" के अविराम प्रकाशन से जुड़े हुए सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और साथ ही साथ आशा करता हूँ कि भविष्य में भी हिंदी पत्रिका "तरंग" का सफल प्रकाशन होता रहेगा।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

(डा. शुबेन्द्र कुमार)

महालेखाकार

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी-प्रथम व द्वितीय)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि कार्यालय द्वारा 'तरंग' का यह नवीनतम अंक प्रकाशित किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित इस पत्रिका ने कार्मिकों की साहित्यिक अभिव्यक्ति को प्रखर एवं स्पन्दनशील बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

हिंदी के रूप में प्रदत्त भाषायी विरासत की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व है। इसका समृद्ध इतिहास एवं साहित्यिक प्रचुरता पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने में सक्षम रहा है, इसी कड़ी में विभागीय पत्रिका 'तरंग' कर्मचारियों की सृजनशीलता का माध्यम होने के साथ-साथ राजभाषा के प्रति गौरव का भाव भी भरती है।

हिंदी पत्रिका 'तरंग' के इस नूतन अंक के प्रकाशन में योगदान देने हेतु सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ एवं आशा करती हूँ कि पूर्व की भाति पत्रिका का यह अंक भी राजभाषा की प्रगति में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करेगी। पत्रिका की प्रगति एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु हार्दिक शुभकामनायें।

SUPREME AUDIT INSTITUTE OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

(प्रोमी)

वरिष्ठ उप महालेखाकार/ प्रशासन एवं ए.एम.जी.-III

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'तरंग' अपने 147-148 वें संयुक्तांक की स्वर्णिम यात्रा पूर्ण कर रही है, जिसके लिए मैं संस्थापक मंडल एवं समस्त रचनाकारों को बहुत-बहुत बधाई देती हूँ

हिन्दी भारत की संविधान सम्मत राजभाषा है। नदी के सुन्दर, और मजबूत तटबंधों और उस पर बसे नगरों की भाँति ही वर्तमान समाज का दायित्व राजभाषा हिन्दी की शब्द संपदा और उसके शब्दानुशासन को सुंदर और मजबूत बनाना है, जिससे यह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति सहजता और सुदृढ़ता से कर सके। यह वर्तमान समाज का कर्तव्य और उत्तरदायित्व दोनों ही हैं और यही भविष्य का आधार भी बनेगा। हम अपनी भाषा से जितना दूर रहेंगे अपनी धरोहर, अपनी विरासत और अपनी संस्कृति से उतने ही दूर होते जायेंगे। यह समय है हिन्दी राजभाषा को सहज रूप में आत्मसात् करने और इसकी समृद्धि में योगदान देने का।

यह पत्रिका हिन्दी के सहज और शाश्वत प्रवाह में सहयोगी बने तथा निरंतर अपने प्रगति पथ पर गतिमान रहे इस हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

पूजा

(पूजा कुमारी)

उप महालेखाकार ए.एम.जी.द्वितीय

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका तरंग का 147-148 वाँ संयुक्तांक प्रकाशित होने जा रहा है। कार्यालय की यह पत्रिका कार्मिकों के मनोभाव को व्यक्त करने का माध्यम है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का काम हिन्दी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस दौर में हिन्दी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी। उन्होंने कहा था, 'जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिन्दी है।

मातृ भाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।

राजभाषा पत्रिका 'तरंग' के इस अंक के प्रकाशन में अपना योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को मैं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ और आशा करता हूँ कि कार्यालय की यह पत्रिका राजभाषा के विकास में अपना अमूल्य योगदान देती रहेगी।

हिन्दी पत्रिका 'तरंग' के सफल प्रकाशन एवं उद्देश्यपूर्ण प्रगति के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं।

(**रवि कथूदिया**)

उप महालेखाकार/ए.एम.जी.-I

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'तरंग' का 147-148 वा संयुक्तांक प्रकाशित होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकारों तथा संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ जिनके अथक प्रयास से पत्रिका इस उन्नति तक पहुँचने में सफल रही है।

भाषा हमारे असंख्य भावों तथा विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है जिसके द्वारा हम न केवल दूसरों के विचारों एवं ज्ञान से अवगत हो सकते हैं अपितु अपने विचारों को जनमानस तक सरलता से पहुँचा भी सकते हैं। पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के कार्मिकों को अपने सृजनशील कौशल एवं मनोभावों को अपनी राजभाषा हिन्दी में व्यक्त करने का अवसर मिलता है।

'तरंग' पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु संपादक मण्डल एवं रचनाकारों को बधाई देते हुए मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित ।

अमृतेश

(श्री अमृतेश शुक्ल)

उप महालेखाकार/ए.एम.जी.-IV

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)



संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका तरंग का 147-148 वां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। यह पत्रिका केवल भाषा के संवर्धन का माध्यम नहीं है, बल्कि हमारे सांस्कृतिक मूल्यों और प्रशासनिक अनुभवों को साझा करने का भी एक सशक्त मंच है।

हिन्दी भाषा हमारी पहचान और आत्मा की अभिव्यक्ति है। प्रशासनिक कार्यों में इसका प्रयोग न केवल कार्यकुशलता को बढ़ाता है, बल्कि आमजन में सीध जुड़ने का अवसर भी प्रदान करता है। राजभाषा के माध्यम से हम शासन-प्रशासन को अधिक सहज, पारदर्शी और जनोन्मुखी बना सकते हैं।

हमे यह स्मरण रखना चाहिए कि किसी भी समाज की प्रगति उसकी मातृभाषा के सम्मान और उपयोग से गहराई से जुड़ी होती है। हिन्दी केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि एक ऐसी डोर है जो विविधता में एकता का भाव जगाती है।

तरंग के इस अंक में सभी लेखकों और सहयोगियों के प्रयासों से निश्चित ही पाठकों को ज्ञानवर्धक तथा प्रेरणादायी सामग्री प्राप्त होगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक राजभाषा हिन्दी के प्रसार और समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

मैं सम्पादक मंडल एवं सभी सहयोगियों को इस सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

Dedicated to Truth in Public Interest

लोकेश

(डॉ. लोकेश चौधरी)

उप महालेखाकार/ए.एम.जी.-V

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

संपादक की कलम से....



राजभाषा की प्रगति में निरंतर क्रियाशील हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका तरंग के 147-148 वें संयुक्तांक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। पत्रिका अपने साज-सज्जा एवं ज्ञानवर्धक सामाग्री के साथ आप सभी सुधी पाठकों के हाथों में है, जिस हेतु राजभाषा का कार्य देख रहे समस्त अधिकारी एवं कर्मचारीगण बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में सम्मिलित रचनाएँ न केवल कार्मिकों की साहित्यिक अभिव्यक्ति हैं बल्कि उनके कार्यालयी निष्ठा की भी द्योतक हैं।

प्रधान महालेखाकार महोदय के संरक्षण में प्रकाशित पत्रिका का वर्तमान अंक मुख्यतः तीन खंडों में विभाजित हैं। पत्रिका के प्रथम खंड में प्रगति प्रतिवेदन को स्थान दिया गया है जिसके अंतर्गत कार्यालय का संक्षिप्त परिचय, शासन को प्रेषित प्रतिवेदन का संक्षिप्त विवरण, निष्पादन/विषयगत लेखापरीक्षा से संबन्धित विषय एवं कार्यालय स्तर पर राजभाषा हिन्दी की प्रगति को शामिल किया गया है। पत्रिका का द्वितीय खंड कार्मिकों की विविधतापूर्ण साहित्यिक अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व कर रहा है। राज्य के प्रमुख पर्यटन स्थल, वनस्पति एवं स्थानीय संस्कृति पर विषयगत आलेख आदि को सँजोये हुये यह खंड साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामयिक दृष्टि से अत्यंत रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। इसके अतिरिक्त विभिन्न कार्मिकों की मौलिक रचनाएँ उनके सकारात्मक विचारों की अभिव्यक्ति हैं।

तृतीय खंड के अंतर्गत कार्यालय की आंतरिक एवं बाह्य गतिविधियों को प्रमुखता से शामिल करते हुये इन सभी का सचित्र विवरण प्रस्तुत किया गया है, जो अत्यंत आकर्षक एवं प्रभावशाली है। इसके अतिरिक्त कार्यालय से सेवानिवृत्त हुये कार्मिकों की खट्टी-मीठी यादें तथा दिवंगत आत्माओं के स्मृति शेष उनके प्रति हमारी गहरी संवेदनाओं को बयां करते हैं।

गृह पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग प्रदान करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के प्रति आभार प्रकट करते हुये मैं इसके स्वर्णिम भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करती हूँ।

(किट्टण लता)

सहायक निदेशक / राजभाषा

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

अनुक्रमणिका

क्र.सं. शीर्षक	लेखक (सर्व श्री / सुश्री)	पृष्ठ संख्या
----------------	---------------------------	--------------

➤ खण्ड-1 : प्रगति प्रतिवेदन

1. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का संक्षिप्त परिचय
2. लेखा परीक्षा रिपोर्ट
3. निष्पादन लेखापरीक्षा
4. हिन्दी की वार्षिक प्रगति

➤ खण्ड-2 : कार्मिकों की अभिव्यक्ति

गद्य		
1. पीली बजरी का देश	अनंत कुमार त्रिपाठी	29-30
2. यातायात और नागरिकता बोध	गणेश शंकर निषाद	31
3. स्मृति शेष	अनंत कुमार त्रिपाठी	32-33
4. भारत मंडपम में राजभाषा स्वर्ण जयंती	रीनू गुप्ता	34
5. योग शास्त्र और स्वास्थ्य	कीर्ति मेहरा	35-37
6. एक पिता की सीख	सत्य प्रकाश सिन्हा	38
7. भाषा - अभिव्यक्ति का माध्यम, पहचान का आधार	शिवम सिंह	39-40
8. समस्या एवं निदान	कमला शंकर मिश्र	41
9. सफलता का दूसरा नाम परिश्रम	किरण लता	42
10. भारत की नैचुरोपैथी एवं उपभोक्तावाद	शाहिल पथिक	43-45
11. महाकुंभ : भारतीय संस्कृति का एक उज्ज्वल अध्याय	उमा शंकर दूबे	46-48
12. "मैं समाज हूँ"	रामाश्रय राय	49-50
13. "माँ अजनबी शहर	आशुतोष कुमार	51
14. इथनॉल आधारित ईंधन : उपयोग और प्रभाव	नीरज कुमार	52-53
15. देश की एकता, अखंडता	सदानंद चर्टर्जी	54
16. पर्यावरण : हमारी जिम्मेदारी	विनय कुमार गुप्ता	55-57
17. प्रेरक कहानी	ललित कुमार सेन	57
18. NOKAI 1310	अंबरीष श्रीवास्तव	58
19. मैं कौन हूँ?	गौरव कुमार	59
20. कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भविष्य : संभावनाएं एवं खतरे	किरण लता	60-61
21. अपनी "पहचान" खोते गाँव	सुधानंदन अंकित	62-63

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक (सर्व श्री / सुश्री)	पृष्ठ संख्या
22.	भारत और जलवायु परिवर्तन	रीनू गुप्ता	64-65
	पद्		
23.	सन्नाटा	अर्चना प्रसाद	66-68
24.	राजभाषा : नव प्रभात, नव विश्वास	विनय कुमार गुप्ता	69-70
25.	कलयुग की सन्तान	कमला शंकर मिश्र	70
26.	हमारा प्रयागराज	सत्य प्रकाश सिन्हा	71
27.	आँसू और मुस्कान	सुधीर कुमार	72
28.	डिप्रेशन यानि अवसाद	सुधानंदन अंकित	73
29.	सच की परछाई	अन्जू कुमारी	74
30.	मुझे चाहिए ऐसा भारत	मीनू श्रीवास्तव	75
31.	वतन से ही मोहब्बत है	मीनू श्रीवास्तव	76
32.	वक्त यूँ निकलता जा रहा	रोशनी कुमारी	77
33.	सत्य असत्य	रोशनी कुमारी	78
34.	दो छोटी कविताएं	अंबरीष श्रीवास्तव	79
35.	शाश्वत जीवन	अर्चना गुप्ता	80
36.	हिंदी भाषा	शिव कुमार सेन	81
37.	मुक्तक	किरण लता	82
	खण्ड-3 : कार्यालय की गतिविधियां		83-95
1.	हिन्दी पखवाडा		84
2.	सेवानिवृत्ति कार्यक्रम		85
3.	आडिट दिवस		86-87
4.	गणतंत्र दिवस समारोह		88
5.	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस		89
6.	स्वतंत्रता दिवस समारोह		90
7.	उत्तर क्षेत्रीय हॉकी टूर्नामेंट		91
8.	विभिन्न सेमीनार का आयोजन		92
	सेवानिवृत्त कार्मिकों की सूची		93-94
	स्मृतिशेष		95



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

खण्ड - 1

प्रगति प्रतिवेदन

लोक लेखा समिति की बैठकों में कार्यालय के अधिकारियों की सहभागिता



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का संक्षिप्त परिचय

मार्च 01, 1984 से भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के कार्यालयों को अलग-अलग लेखापरीक्षा एवं लेखा एवं हकदारी कार्यालयों में पुनर्गठित किया गया था। इस प्रकार, महालेखाकार (लेखापरीक्षा) -1 और महालेखाकार (लेखापरीक्षा) -2 के कार्यालय उसी तिथि से अस्तित्व में आए। महालेखाकार (लेखापरीक्षा) -1 का कार्यालय पुराने परिसर में लेखा एवं हकदारी कार्यालयों के साथ स्थित था। जनवरी 1996 में लेखापरीक्षा कार्यालयों को 'सत्यनिष्ठा भवन' में स्थानांतरित कर दिया गया। महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-1 के कार्यालय को अगस्त 2002 में प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-1 के कार्यालय में उच्चीकृत किया गया और सितंबर 2004 से इसका नाम बदलकर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सिविल लेखापरीक्षा) नामित कर दिया गया। उत्तर प्रदेश राज्य के पुनर्गठन और उत्तराखंड राज्य के निर्माण के परिणामस्वरूप, 2004 में कैंडर का पृथक्करण हुआ। 01.06.2006 को इन दोनों राज्यों के बीच लेखापरीक्षा और लेखा व्यवस्था को पुनर्गठित करने के लिए प्रधान महालेखाकार (सिविल लेखापरीक्षा) के प्रशासनिक और तकनीकी नियंत्रण के तहत वरिष्ठ उप महालेखाकार (स्थानीय निकाय) का एक अलग कार्यालय जुलाई 2004 में मुख्यालय कार्यालय द्वारा बनाया गया था।

मुख्यालय कार्यालय द्वारा कार्यालय आदेश क्रमांक. 109. एस.एम.यू./ पी.पी./ पुनर्गठन/ 5-2011 दिनांक 27 मार्च 2012, द्वारा निर्देश दिया गया कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सिविल ऑडिट), उत्तर प्रदेश, अब उत्तर प्रदेश सरकार के सामाजिक और सामान्य सेवा विभागों का प्रधान लेखापरीक्षक होगा और अब से इसे कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), उत्तर प्रदेश कहा जाएगा। स्थानीय निकायों के लेखापरीक्षा और लेखा से संबंधित सभी तकनीकी मार्गदर्शन और सहायता कार्य और कर्तव्य भी इस कार्यालय द्वारा निष्पादित किए जाएंगे। कार्यालय वरिष्ठ उप महालेखाकार (स्थानीय निकाय लेखापरीक्षा एवं लेखा) को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), उत्तर प्रदेश में विलय कर दिया गया और कार्यालय में उप महालेखाकार के पद को प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), उत्तर प्रदेश के कार्यालय में स्थानांतरित कर दिया गया।

कार्यालय महालेखाकार (वाणिज्यिक एवं प्राप्ति लेखापरीक्षा), उत्तर प्रदेश, उत्तर प्रदेश सरकार के आर्थिक सेवा विभागों का प्रधान लेखापरीक्षक होगा और अब से इसे महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) का कार्यालय कहा जाएगा। इस विषय के सभी पिछले आदेशों का अधिक्रमण कर दिया गया।

मुख्यालय कार्यालय ने कार्यालय आदेश संख्या 108- एसएमयू/पी पी/ पुनर्गठन/5-2011 दिनांक 27 मार्च 2012 के तहत उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार और झारखंड राज्यों में स्थित सभी केंद्र सरकार इकाइयों (स्वायत्त निकायों सहित) की सभी प्राप्ति और व्यय के लेखापरीक्षा के लिए इलाहाबाद और पटना में शाखा कार्यालयों के साथ लखनऊ में

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का एक नया कार्यालय खोलने का निर्देश दिया।

मुख्यालय कार्यालय ने अधिसूचना संख्या 110/09- एस एम य/ 2020 दिनांक 15 मई 2020 के माध्यम से निर्देश दिया कि एस एम यू की अधिसूचना संख्या 59/31- एस एम यू/ 2018 दिनांक 09/03/2020 में निहित नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के आदेशों को ध्यान में रखते हुए, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद को अब से प्रधान महालेखाकार के कार्यालय के रूप में जाना जाएगा।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) उत्तरप्रदेश, लखनऊ को अब से कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) के रूप में जाना जायेगा।

मुख्यालय कार्यालय ने कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा-1) उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ऑडिट-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ के बीच निम्नानुसार क्लस्टर आवंटित किए हैं :

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) उत्तर प्रदेश, प्रयागराज	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) उत्तर प्रदेश, लखनऊ
<ol style="list-style-type: none"> 1. स्वास्थ्य एवं कल्याण 2. शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार 3. ग्रामीण विकास 4. कृषि, खाद्य एवं सम्बद्ध उद्योग 5. जल संसाधन 6. शहरी विकास 7. कानून एवं व्यवस्था 8. सामान्य प्रशासन 	<ol style="list-style-type: none"> 1. ऊर्जा एवं शक्ति 2. उद्योग एवं वाणिज्य 3. परिवहन 4. पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 5. सार्वजनिक कार्य 6. वित्त 7. सूचना प्रौद्योगिकी और संचार 8. संस्कृति एवं पर्यटन

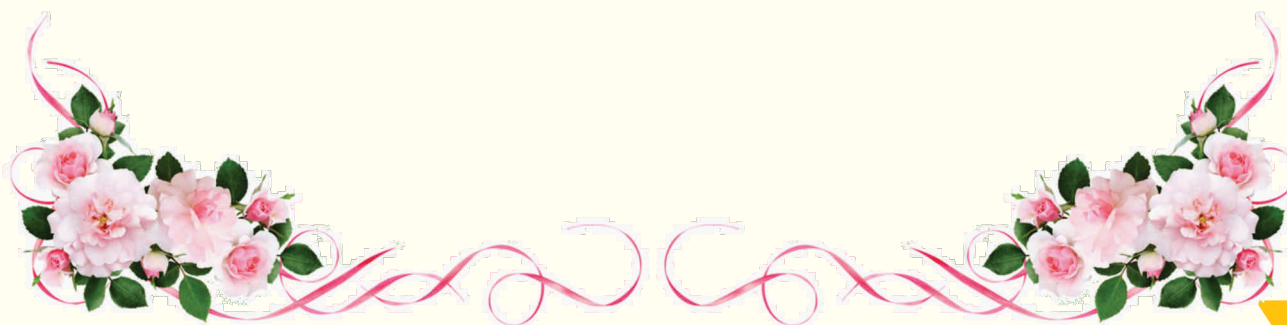
**समूह अधिकारियों के प्रभार को लेखा परीक्षा प्रबंधन समूह (ए एमजी) कहा जाएगा।
समूहों प्रभार के बीच क्लस्टर- का वितरण इस प्रकार है:**

लेखापरीक्षा-1, इलाहाबाद		लेखापरीक्षा-1, इलाहाबाद	
ए. एम. जी.-I	ग्रामीण विकास	ए. एम. जी.-I	वित्त
ए. एम. जी.-II	शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार	ए. एम. जी.-II	उर्जा और शक्ति आईटी और संचार
ए. एम. जी.-III	कृषि, खाद्य एवं संबद्ध इंडस्ट्रीज जल संस्थान	ए. एम. जी.-III	उद्योग एवं वाणिज्य परिवहन संस्कृति और पर्यटन
ए. एम. जी.-IV	स्वास्थ्य और कल्याण	ए. एम. जी.-IV	पर्यावरण, विज्ञान और प्रौद्योगिकी लोक कार्य
ए. एम. जी.-V	शहरी विकास कानून एवं व्यवस्था सामान्य प्रशासन		
<p>कार्यालय प्रशासन का प्रभार विशेष रूप से एक ग्रुप अधिकारी के पास होगा।</p> <p>ए. एम. जी.-III के लिए कार्यालय प्रशासन का प्रभार समूह अधिकारी के पास होगा।</p> <p>ए. एम. जी.-IV - इलाहाबाद स्थित शाखा कार्यालय से तैयार किया जाएगा।</p>			

SUPREME AUDIT INSTITUTE OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest



लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

सरयू नहर परियोजना - उत्तर प्रदेश सरकार पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का निष्पादन लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

उत्तर प्रदेश सरकार के संदर्भ में सरयू नहर परियोजना की निष्पादन लेखापरीक्षा पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन (प्रतिवेदन सं. 3 वर्ष 2025) दिनांक 12.08.2025 को राज्य विधानमंडल के समक्ष रखा गया।

सरयू नहर परियोजना का गठन वर्ष 1982 में ₹ 299.20 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत पर 11.29 लाख हेक्टेयर कृषि योग्य समादेश क्षेत्र में 14.04 लाख हेक्टेयर की सिंचन क्षमता सृजित करने के लिए किया गया था। सरयू नहर परियोजना हेतु धन, राज्य सरकार के संसाधनों, भारत सरकार के द्वारा त्वरित सिंचाई लाभ कार्यक्रम, राष्ट्रीय परियोजना एवं प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अंतर्गत केंद्रीय सहायता तथा राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक के ऋण से प्राप्त हुआ था। सरयू नहर परियोजना दिसंबर 2021 में लोकार्पित की गयी तथा इस पर मार्च 2022 तक ₹ 10,003.11 करोड़ का व्यय किया गया। सरयू नहर परियोजना की निष्पादन लेखापरीक्षा अप्रैल 2017 से मार्च 2022 की अवधि में संपादित कार्यों पर केंद्रित करते हुए की गई थी।

(पैराग्राफ 1.1, 1.3 और 1.5)

परियोजना प्रमुखतः, आवश्यक भूमि के अधिग्रहणधक्य में विलम्ब और विलंबित वित्त पोषण से विपरीत रूप से प्रभावित रही, जिसके कारण न केवल परियोजना विलंबित हुई अपितु इसमें लागत वृद्धि, जिसमें कृषकों को भूमि प्रतिकर की राशि में बढ़ोत्तरी भी सम्मिलित थी, के फलस्वरूप राजकोष पर अतिरिक्त वित्तीय भार भी पड़ा।

(पैराग्राफ 1.7, 3.2.2 और 3.4)

नहरों के अनुदैर्घ्य खंड और चिनाई संरचनाओं के चित्रों के अनुमोदन के बिना विस्तृत अनुमान तैयार किए गए थे, जिसके कारण अनुबंधों के दायरे में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। निविदाएं बिना तकनीकी स्वीकृति के आमंत्रित की गई थीं। 39 प्रतिशत परीक्षण जांच किए गए अनुबंधों में निविदाकर्ताओं को निविदा जमा करने के लिए पर्याप्त समय नहीं दिया गया। गलत दर विश्लेषण, अधिक व्यय (₹ 14.08 करोड़) और ठेकेदारों को अधिक भुगतान/अनुचित लाभ (₹ 21.58 करोड़) के कारण अनुमानों को बढ़ाकर (₹ 23.66 करोड़) बनाए जाने के प्रकरण देखे गए। कार्यों के निष्पादन में गुणवत्ता आश्वासन कमजोर रहा क्योंकि मिट्टी के कार्यों और पक्के कार्यों के लिए गुणवत्ता जांचे निर्धारित मानदंडों के अनुसार नहीं की गई थीं।

(पैराग्राफ 2.2.1.1, 3.5.1, 3.5.2, 3.5.3, 3.5.4, 3.6 और 3.7)

परियोजना दिसंबर 2021 में कार्य प्रारंभ होने की तिथि से लगभग 40 वर्ष के पश्चात लोकार्पित की गई। हालांकि, परीक्षण जांच किए गए सिंचाई संभागों में, 432 नहरों में से 29 या तो अपूर्ण थीं या निर्माण प्रारंभ नहीं हुआ था। राष्ट्रीय मुख्य नहर और इसकी वितरण प्रणाली का उपयोग नहर से खेतों तक पानी ले जाने के लिए कुलाबों और समप्स की कमी के कारण नहीं किया गया था। समादेश क्षेत्र विकास कार्य केवल 20 प्रतिशत कृषि योग्य समादेश क्षेत्र में पूरा किया गया था जिससे नहरों से खेत तक पानी के प्रवाह में बाधा उत्पन्न हुई थी।

(पैराग्राफ 4.2, 4.3, 4.4 और 4.7)

हमने राज्य सरकार को 14 अनुशंसाएं भी की हैं। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:

- राज्य सरकार को परियोजना की आवश्यकताओं के त्रुटिपूर्ण आकलन के कारणों की जांच करनी चाहिए जिसके कारण कार्य संपादन की अवधि में, इसके कार्य की परिधि में वृद्धि बदलाव हुए और परियोजना की पूर्णता में परिणामी विलंब हुआ।
- राज्य सरकार को विकास हेतु आवश्यक कार्यों का सही आकलन करने और सिंचाई के प्रभावी नियोजन हेतु सरयू नहर परियोजना से वास्तविक रूप से आच्छादित क्षेत्र का निर्धारण करने के लिए व्यापक भूमि सर्वेक्षण करना चाहिए।
- कई योजनाओं/कार्यक्रमों में समय और लागत वृद्धि की स्थिति बनी रहने के दृष्टिगत, राज्य सरकार को परियोजना निष्पादन में हुई चूक और विलंब के लिए उत्तरदायित्व का निर्धारण करना चाहिए।
- राज्य सरकार को उन परिस्थितियों का पता लगाना चाहिए जिसके कारण डिजाइन, ड्राइंग एवं कार्य की मात्राओं को अंतिम रूप दिए बिना कार्यों के ठेके दे दिए गए थे।
- परियोजना की प्रमुख संरचनाओं के निर्माण की गुणवत्ता का सत्यापन किया जाना चाहिए।
- नियमित आंतरिक लेखापरीक्षा, तकनीकी निरीक्षण और अभिलेखों एवं दस्तावेजों के रखरखाव के माध्यम से आंतरिक नियंत्रण तंत्र सुदृढ़ किया जाना चाहिए।
- राष्ट्रीय मुख्य नहर और इसकी वितरण प्रणाली के अंतर्गत निर्मित नहरों को कुलाबों तथा समप्स एवं कुलाबों से आगे गुलों एवं नालियों का निर्माण करके तत्काल उपयोग में लाया जाना चाहिए।
- सरयू नहर परियोजना के समादेश क्षेत्र में पर्याप्त जल, विशेषकर रबी मौसम में, उपलब्ध कराने हेतु समाधानों की पहचान करने की तत्काल आवश्यकता है जिससे कि कृषकों को अपेक्षित लाभ प्राप्त हो सके।
- नहर तंत्र में उपलब्ध जल का समान वितरण सुनिश्चित करने के लिए जल उपयोगकर्ता संघों का गठन शीघ्र किया जाना चाहिए।
- सृजित संपत्तियों का रखरखाव सुनिश्चित किया जाना चाहिए जिससे कि अपेक्षित लाभ प्राप्त करने हेतु इन्हें उपयोग करने योग्य बनाए रखा जाए।

लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

शहरी क्षेत्रों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के निष्पादन लेखापरीक्षा पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

उत्तर प्रदेश सरकार के संदर्भ में शहरी क्षेत्रों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की निष्पादन लेखापरीक्षा पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का प्रतिवेदन (प्रतिवेदन सं. 1 वर्ष 2025) दिनांक 12.08.2025 को राज्य विधानमंडल के समक्ष रखा गया।

उत्तर प्रदेश में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की दक्षता और प्रभावशीलता का आँकलन करने के लिए अप्रैल 2016 से मार्च 2022 तक की अवधि को आच्छादित करते हुए शहरी क्षेत्रों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की निष्पादन लेखापरीक्षा सम्पादित की गई थी। मुख्य लेखापरीक्षा निष्कर्षों को आगामी प्रस्तारों में सम्मिलित किया गया है:

नमूना जांच किये गये 45 शहरी स्थानीय निकायों में से मात्र तीन निकायों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन योजना तैयार की गयी थी। नमूना जांच किये गये 45 शहरी स्थानीय निकायों में से मात्र 12 शहरी स्थानीय निकायों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन से संबंधित उपविधि बनायी गयी थी। इन शहरी स्थानीय निकायों द्वारा बनाई गयी उपविधियों में एकरूपता का अभाव था। शहरी स्थानीय निकायों द्वारा कई वर्षों में ठोस अपशिष्ट के उत्पादन से सम्बंधित समान आंकड़े संसूचित किये गये थे, जिससे आंकड़ों की विश्वसनीयता संदिग्ध थी।

(पैराग्राफ 2.3, 2.5 और 2.6)

नमूना जांच किये गये शहरी स्थानीय निकायों में से 35 शहरी स्थानीय निकायों में सफाई कर्मचारियों की कमी को वाह्य सेवा प्रदाता के माध्यम से पूरा किया गया, शेष (सात) नमूना जांच किये गये शहरी स्थानीय निकायों में वाह्य सेवा प्रदाता के माध्यम से सेवाओं के बाद भी सफाई कर्मचारियों की कमी बनी रही। इसके अतिरिक्त, नमूना जांच किये गये शहरी स्थानीय निकायों में पर्यवेक्षी कर्मचारियों की कमी थी। शहरी स्थानीय निकायों में मानव संसाधन के क्षमता निर्माण हेतु प्रस्तावित 112 प्रशिक्षण कार्यक्रमों के सापेक्ष राज्य सरकार द्वारा प्रशासनिक अनुमोदन में विलंब और अपर्याप्त वित्त पोषण के कारण मात्र 53 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये थे।

(पैराग्राफ 2.9 और 2.11)

नमूना जांच किये गये शहरी स्थानीय निकायों द्वारा मिश्रित अपशिष्ट का संग्रहण कर उसका संयंत्र तक परिवहन, भूमि भरण अथवा क्षेपण स्थल पर किया जा रहा था। नमूना जांच किये गये शहरी स्थानीय निकायों में घरों के सार्वजनिक सर्वेक्षण के दौरान स्रोत पृथक्कीकरण का कोई दृष्टांत नहीं पाया गया। नमूना जांच किये गये किसी भी शहरी स्थानीय निकाय में घरेलू खतरनाक अपशिष्ट के लिए अपशिष्ट निक्षेपण केन्द्र स्थापित नहीं किये गये थे। निधि निर्गत हुये तीन वर्ष से अधिक समय व्यतीत होने के बावजूद ठोस अपशिष्ट से पुनर्चक्रण योग्य सामग्री की छंटाई के लिए 38

नमूना जांच किये गये शहरी स्थानीय निकायों में सामग्री पुनर्प्राप्ति सुविधा केन्द्रों को क्रियाशील नहीं बनाया जा सका। पृथक्कीकृत अपशिष्ट के संग्रहण हेतु मात्र 67 प्रतिशत टिपर ही विभाजनयुक्त थे। नमूना जांच किये गये शहरी स्थानीय निकायों में द्वार-द्वार संग्रहण के अंतर्गत घरों का अपर्याप्त आच्छादन पाया गया।

(पैराग्राफ 3.1.1, 4.1.1, 4.1.2, 4.2.3 और 4.3.1)

परियोजना दिसंबर 2021 में कार्य प्रारंभ होने की तिथि से लगभग 40 वर्ष के पश्चात लोकार्पित की गई। हालांकि, परीक्षण जांच किए गए सिंचाई संभागों में, 432 नहरों में से 29 या तो अपूर्ण थीं या निर्माण प्रारंभ नहीं हुआ था। राष्ट्रीय मुख्य नहर और इसकी वितरण प्रणाली का उपयोग नहर से खेतों 2016-22 के दौरान राज्य स्तर पर और नमूना जांच किये गये शहरी स्थानीय निकायों स्तर पर संग्रहीत अपशिष्ट के सापेक्ष प्रसंस्कृत अपशिष्ट क्रमशः 26 से 71 प्रतिशत और शून्य से 63 प्रतिशत था। 2005-15 के दौरान विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत स्वीकृत 32 ठोस अपशिष्ट प्रसंस्करण संयंत्रों में से मात्र 20 संयंत्र कार्यदायी संस्था द्वारा स्थापित किये गये थे, जिनमें से मात्र 15 संयंत्र संचालित थे। अग्रेतर, 2021-22 में स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) योजना के अंतर्गत 36 प्रसंस्करण संयंत्रों की स्वीकृति प्रदान की गयी थी। इनमें से 19 संयंत्रों का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका था। तथापि, मशीनरी क्रय हेतु निधि निर्गत न होने के कारण इन्हें क्रियाशील नहीं बनाया जा सका। अवशेष 17 संयंत्रों में निर्माण कार्य पूर्ण (जुलाई 2023) नहीं हुआ था।

(पैराग्राफ 5.1, 5.2.1 और 5.2.2)

651 शहरी स्थानीय निकायों में से 72 में पुराने अपशिष्ट का ऑकलन पूर्ण किया गया था, जिससे कुल 84,57,782 मीट्रिक टन पुराना अपशिष्ट क्षेपित होना पाया गया। तथापि, अवशेष 579 शहरी स्थानीय निकायों में पुराने अपशिष्ट की मात्रा का ऑकलन नहीं किया गया था।

(पैराग्राफ 5.4.2)

ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के क्रियान्वयन की समीक्षा हेतु राज्य स्तरीय सलाहकार निकाय का गठन जनवरी 2017 में किया गया था और 2017-22 के दौरान 10 निर्धारित बैठकों में से मात्र छः बैठकें आयोजित की गयीं थीं। उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने अपर्याप्त विवरणों/सूचनाओं के साथ वार्षिक रिपोर्ट तैयार की, जिसके परिणामस्वरूप जैव चिकित्सा अपशिष्ट की श्रेणीवार मात्र पर अपेक्षित आँकड़ों की अनुपलब्धता हुई। राज्य में जैव-चिकित्सा अपशिष्ट का प्रबंधन करने वाले 17 प्रतिशत से 43 प्रतिशत अधिभोक्ता बिना उचित प्राधिकार के संचालित थे। 2016-21 के दौरान उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट प्रसंस्करण सुविधा के प्राधिकार हेतु कोई आवेदन प्राप्त नहीं किया था।

(पैराग्राफ 6.1.2, 6.1.3, 6.4.2 और 7.1)

हमने राज्य सरकार को 14 अनुशंसाएं भी दी हैं। इनमें से कुछ निम्नवत हैं-

➤ राज्य सरकार को प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन हेतु शहरी स्थानीय निकायों को ठोस अपशिष्ट प्रबंधन योजना बनाने में सहायता प्रदान करने के लिए ठोस अपशिष्ट के उत्पादन, संग्रहण और प्रसंस्करण पर बेहतर सूचना प्रणाली तैयार करने की आवश्यकता है।

- राज्य सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि शहरी स्थानीय निकायों द्वारा ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम 2016 के प्रावधानों को शामिल करते हुए समयबद्ध तरीके से उपविधि बनायी एवं लागू की जाये।
- राज्य सरकार को ठोस अपशिष्ट प्रबंधन हेतु नागरिकों के व्यवहार में प्रभावी रूप से संवेदनशील परिवर्तन के लिए सूचना, शिक्षा, संचार तथा जन जागरूकता गतिविधियों के लिए निधियों का उचित उपयोग सुनिश्चित करना चाहिये।
- ठोस अपशिष्ट प्रबंधन परियोजनाओं के लिए राज्य सरकार द्वारा निर्धारित की गयी निधि निर्दिष्ट समय के अंदर शहरी स्थानीय निकायों को निर्गत की जानी चाहिये और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिये कि निधियां राज्य सरकार के पास अवरुद्ध न रहें।
- राज्य सरकार को अपशिष्ट के स्रोत पृथक्करण के लिए अपशिष्ट उत्पन्नकर्ताओं और संग्रहकर्ताओं को प्रोत्साहित करने के लिए एक प्रणाली तैयार करके अपशिष्ट के पृथक्करण को प्रोत्साहित करना चाहिये और सख्त अनुश्रवण और कार्यान्वयन व्यवस्था के माध्यम से ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के विभिन्न चरणों के दौरान पृथक्कीकृत अपशिष्ट को मिश्रित होने से रोकना चाहिये।
- सामग्री पुनर्प्राप्ति सुविधा केन्द्रों का उपयोग समुचित क्रियाशीलता एवं धर्मकांटा सुविधाओं के साथ सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
- राज्य सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि ठोस अपशिष्ट के द्वार-द्वार संग्रहण की उचित व्यवस्था हो और शहरी स्थानीय निकायों में सभी घर द्वार-द्वार संग्रहण सेवाओं से आच्छादित हों।
- राज्य सरकार को नियमित रूप से उत्पादित ठोस अपशिष्ट और शहरी स्थानीय निकायों में क्षेपित किये गये पुराने अपशिष्ट का शीघ्रातिशीघ्र वैज्ञानिक तरीके से निस्तारण सुनिश्चित करना चाहिये।
- राज्य सरकार को विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत विभिन्न शहरी स्थानीय निकायों में स्वीकृत ठोस अपशिष्ट प्रसंस्करण संयंत्रों का संचालन सुनिश्चित करना चाहिये।
- राज्य सरकार को जैव-चिकित्सा अपशिष्ट, ई-अपशिष्ट, प्लास्टिक अपशिष्ट और निर्माण एवं विध्वंस अपशिष्ट का उचित संग्रहण, परिवहन और प्रसंस्करण/निस्तारण सुनिश्चित करना चाहिये। उन्हें शहरी स्थानीय निकायों में संबंधित अपशिष्ट प्रबंधन नियमों का उचित कार्यान्वयन भी सुनिश्चित करना चाहिये।
- राज्य सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि निर्धारित अनुश्रवण बैठकें आयोजित की जाये और राज्य/जिला स्तर की बैठकों में उठाये गये प्रकरणों का प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन किया जाये।

निष्पादन लेखापरीक्षा का विवरण, वर्ष -2024-2025

निष्पादन लेखापरीक्षा	निष्पादन लेखापरीक्षा का शीर्षक
निष्पादन लेखापरीक्षा	शहरी क्षेत्रों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षा का प्रतिवेदन
	‘सरयू नहर परियोजना पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षा का प्रतिवेदन
	‘भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकारों का कल्याण” पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षा का प्रतिवेदन
	मार्च 2022 को समाप्त अवधि के लिए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षा का प्रतिवेदन- I राज्य कृषि उत्पादन मंडी परिषद एवं मंडी समितियों की कार्यप्रणाली II खेल विभाग की गतिविधियाँ III उत्तर प्रदेश में दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना का कार्यान्वयन

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to the Public Interest



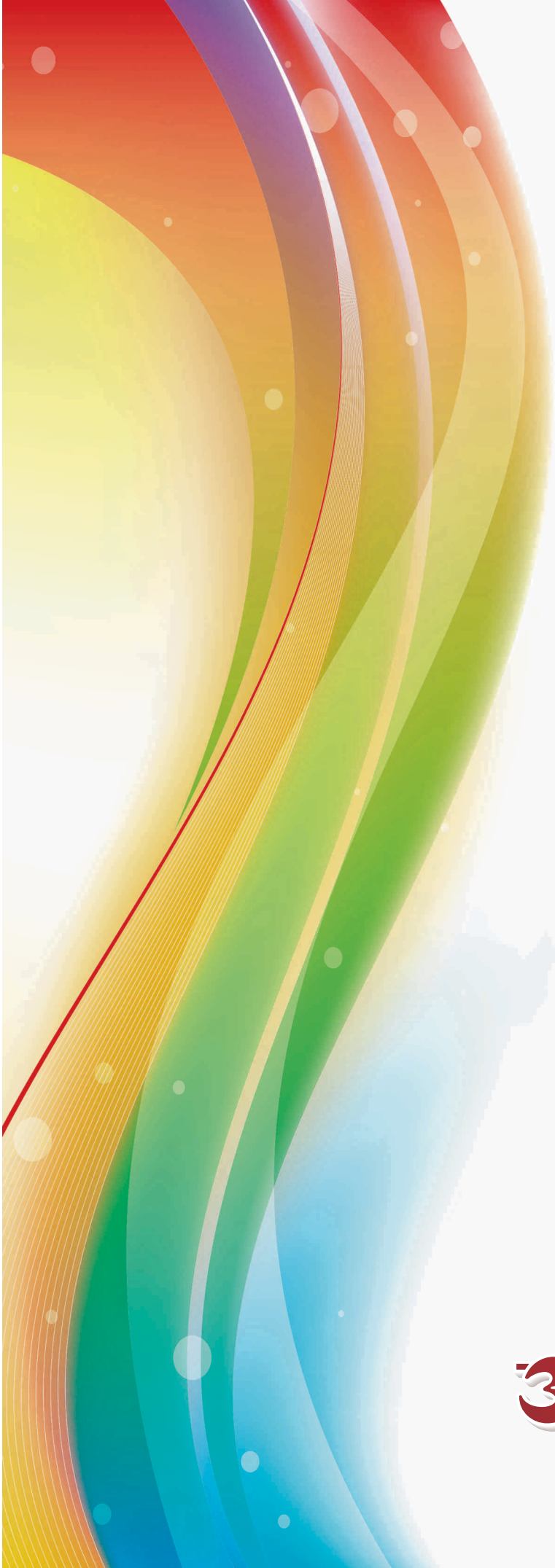
हिन्दी की वार्षिक प्रगति

राजभाषा विभाग द्वारा जारी विभिन्न (क, ख, एवं ग) क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों के लिए हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में कार्यालय निरंतर प्रयासरत है। हम राजभाषा विभाग द्वारा हिन्दी पत्रचार, हिन्दी टिप्पणी एवं हिन्दी में किए जाने वाले अन्य कार्यों हेतु प्रदत्त लक्ष्यों की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। वर्ष 2024-25 के दौरान कार्यालय द्वारा किए गए पत्रचार में हिन्दी की भागीदारी करीब 97.82 प्रतिशत रही तथा कार्यालय में हिन्दी टिप्पणी का योगदान लगभग 98.76 प्रतिशत रहा।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का भी नियमित रूप से आयोजन किया जा रहा है। प्रधान महालेखाकार महोदय की अध्यक्षता में आयोजित उक्त बैठकों में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए तथा उनका अनुभाग स्तर से अनुपालन भी सुनिश्चित किया गया। इसके अतिरिक्त राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार कार्यालय प्रमुख द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप हिन्दी अनुभाग द्वारा कार्यालय के विभिन्न अनुभागों का निरीक्षण किया गया एवं हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी सुझाव भी प्रेषित किए गए। राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाले हिन्दी पखवाड़े के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। पखवाड़े के दौरान हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी टिप्पणी एवं मसौदा पत्र लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी टंकण प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिन्दी ज्ञान संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताएँ / प्रश्न बैंक इत्यादि प्रतियोगिताएँ आदि आयोजित की जाती हैं। हिन्दी पखवाड़े को कार्यालय में उत्सव का स्वरूप प्रदान करते हुये कार्यालय के कर्मिकों की सहभागिता ऊर्जा प्रदान करने वाली होती है। पखवाड़े के

समापन समारोह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किया जाता है।

उपरोक्त के अतिरिक्त, कार्यालय में हिन्दी की प्रगति सुनिश्चित करने हेतु मुख्यालय स्तर से प्राप्त दिशानिर्देशों के अनुरूप कार्यवाही सुनिश्चित की जा रही है। 'क' क्षेत्र से संबन्धित होने के कारण हिन्दी की प्रगति में इस कार्यालय का



खण्ड - 2

कार्मिकों की अभिव्यक्ति

पीली बजरी का देश

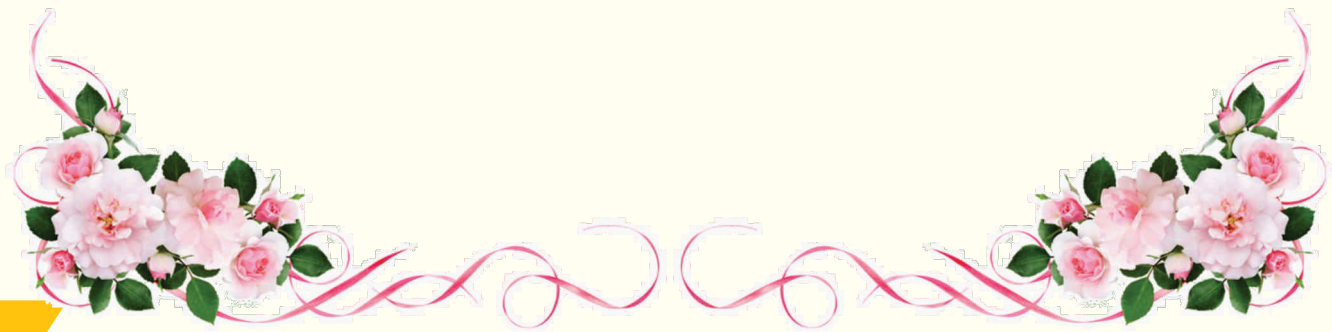
यह अगस्त 2019 की एक रात थी कि सहसा धुर मरुस्थल की सैर करने का कीड़ा कुलबुला उठा था। रात 10.00 बजे, बाहर घर के पोर्च में बैठे बैठे अंगलियाँ एम एम टी, एगोडा सहित सभी एप पर चलने लगी थी और दिमाग भारत के सबसे बड़े मरुस्थल थार को जानने/समझने के लिए गूगल में घुसने लगा था। फिर दूसरे दिन आई.आर.सी.टी.सी एवं अन्य एयर साईट की तरफ जब अंगुली घूमी तो लगा कि अब ट्रिप हो ही जायेगी। प्लान तो लंबा था (जैसलमेर, जोधपुर और उदयपुर कवर करना था) लेकिन शुरुआत सही होनी थी, फिर क्या था? खोजते-खोजते, जैसलमेर की सीधी फ्लाइट दिल्ली से स्पाइस जेट की मिल ही गयी, किराया 4200 प्रति व्यक्ति, जो यात्रा के दिन 11000 पहुँच गया था। हमें क्या, दो परानी को जाना था, बच्चे अपने अपने कॉलेज में व्यस्त थे। फिर सैम सैंड ड्यून्स (जैसलमेर से 42 किमी) में 02 रात के लिए बड़ा मेहनत करके 02 रिसोर्ट बुक किया, एक एगोडा से और एक एम एम टी से। यात्रा तिथि थी 06.02.20 और 07 को पूर्णिमा थी तथा जैसलमेर मरु महोत्सव भी था, जिस दिन की चांदनी रात में हमें मरुस्थल निहारना था। घूमने के लिए गाड़ी दिल्ली पहुँच कर की, जिसने जैसलमेर एयरपोर्ट से मुझे पिकअप किया। इस ऑनलाइन के जमाने में टूरिज्म का अलग ही मजा है, सब घर में बैठे बैठे बुक, कोई दूर पैकेज नहीं। फिर क्या था? भाग लिया वन्देभारत एक्सप्रेस पकड़ कर प्रयागराज से दिल्ली के लिए, दिल्ली में मुगल गार्डन खुला था, उसको भी जो एंज्वाय करना था। मजा तो फ्लाइट से ही आने लगा था, जब ऊपर से ही मरुस्थल और पवन चक्कियाँ दिखने लगी थी, लेकिन बहुत ही कबाड़ी फ्लाइट थी। खैर एयरपोर्ट पहुँचा, जो कि एयरफोर्स का ही एक स्टेशन था, बहुत लिमिटेड फ्लाइट थी जैसलमेर के लिए, अब तो सीधी फ्लाइट बंद भी हो चुकी है। फ्लाइट में ज्यादातर विदेशी यात्रा ही थे। रास्ते से ही पीली बजरी का देश नजर आने लगा था, सभी भवन पीले पत्थर से बने हुए, नीला आसमान, हरे सरसों, सौंफ के खेत और पीली बजरी, अलौकिक/अद्भुत सौन्दर्य, नहीं देखा था पहले कभी। राजस्थान पहले भी आया था, देश के सभी कोनों में गया था, समुद्र भी देखा था, पहाड़ भी देखे थे, लेकिन ऐसा सौन्दर्य जो बिल्कुल अलग था, राजस्थान के अन्य स्थलों से भी अलग, पहली बार देख रहा था। राजस्थान अपने झीलों, महलों की विरासत के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन यहाँ तो काकटेल था, मरुस्थल/पीली बजरी के साथ किले और महल भी। खैर पीली बजरी के किले और भवनों के साथ जैन मंदिर और अन्य कलाकृतियों के दर्शन भी हुए, लेकिन किले में बहुत मजा नहीं आया, सिर्फ पीले रंग और कुछ उच्च कोटि के कार्विंग के अलावा, इसका कारण ये भी हो सकता है कि इससे अच्छे किले हमने पहले देख रखे थे। ये अलग बात है कि किले के ऊपर से बाहर का दृश्य बड़ा मनोरम था, आसपास के सभी मकान पीले रंग के दिख रहे थे। जोधपुर के नीले, जयपुर के गुलाबी मकानों को तो पहले ही देख चुका था। लेकिन किले के बाहर रेस्तरां में बड़ी थाली वाला राजस्थानी भोजन तोड़ने में बड़ा मजा आया। फिर हम निकल गए कभी न भूलने वाले रास्ते सैम सैंड ड्यून्स की तरफ जो



अनंत कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

वहां से 42 किमी था,यही रास्ता आगे तनोट माता मंदिर जाता था,जो पाकिस्तान बार्डर पर है। ऐसा खूबसूरत रास्ता, शायद परी कथाओं में दिखता है,पीले मरुस्थल के बीच में सुन्दर सांवली सड़क,उसके ऊपर नीला आसमान ,बीच बीच में सरसों ,सौंफ के हरे भरे खेत और बगल में पवन चक्कियाँ।अद्भुत दृश्य,जैसे लगता था कि किसी सांवले रंग की मरुस्थल सुन्दरी,पीले वस्त्र पहने,हरे रंग के गहनों को धारण किये तथा सर पर नीला साफा बांधे नृत्य कर रही हो.मैं कल्पना में प्रकृति और नारी के उस अनुपम सौन्दर्य को अपलक 42 किमी तक निहारता रहा, जब तक कि मेरा रिसोर्ट नहीं आ गया और मेरी तन्द्रा तब टूटी, जब ड्राईवर ने कहा- सर जी लो आ गया आपका आज रात का आशियाना.....दो घंटे आराम करने के बाद ड्यून्स में ऊंट की सवारी शुरू हुयी ,खूब एंज्वाय किया ।लेकिन सबसे ज्यादा मजा आया रेत के बदलते रंग को देखने में ,सूर्योदय के समय सफेद और ठंडा, दोपहर में पीला और गर्म ,फिर शाम को सूर्यास्त में अलग ही गाढ़े पीले रंग का कलर,लालिमा के साथ,क्या प्रकृति थी? आने का मन ही नहीं कर रहा था।फिर राजस्थान के बंजारों के साथ उनके वाद्य यंत्र में डूब कर नृत्य करना ,जैसे लगा कि समय यही ठहर जाय।मैं उनके सौन्दर्य/लावण्य में वही देखता रहा,जो मैं जैसलमेर से सैम जाते वक्त प्रकृति के सौंदर्य में देख रहा था।खूब नाचे हम दोनों, जब तक कि थक नहीं गए ,ये अनमोल पल मिले ना मिले।केसरिया बालम पधारो म्हारो देश.....फिर हम टेंट की ओर लौटे।उदास मन से लेकिन यहाँ आये तो खाने पीने के साथ महफिल फिर वही राजस्थानी रंग के साथ जमी थी.....फिर शुरू हुआ नृत्य..... ..उसी तरह से रात फिर बीती.....देश विदेश से काफी लोग यहाँ आये थे,उनसे परिचय भी हुआ और घूमने की अन्य जगहे भी पता चली.....हम दोनों ने वहां के जीवन और संस्कृति को जीने की कोशिश की ...बहुत मजा आया,फिर भी मन नहीं भरा तो दूसरे दिन एक और रिसोर्ट को उसी तरह से एंज्वाय किया ,तब जाकर संतुष्टि मिली। फिर बिछुड़ने का वक्त आ ही गया और हम निकल पड़े जोधपुर के लिए ट्रेन पकड़ने ,बीच में जैसलमेर महोत्सव,कुलधरा,गनीसर लेक का भी आनंद लिया, लेकिन आज भी सैम और उसके ड्यून्स भुलाए नहीं भूलतेयाद है मुझे कि रात में थकने के बावजूद, मैं कैमरा लेकर सुबह 02 दिन ड्यून्स पर बैठने और सूर्योदय को कैप्चर करने के लिए भागा था। आ तो गया हूँ, लेकिन मन उस पीली बजरी वाले देश में जाने का फिर करता है और इस बार गया तो तनोट माता मंदिर तक अवश्य जाऊंगाथार मरुस्थल और ड्यून्स की कुछ बेहतरीन तस्वीरें मैंने खींची जो मेरे हृदय में अभी भी बसी है ,जिनकी यादों के सहारे मैं उस पीली बजरी वाले देश को बारम्बार याद करता हूँ ।

Dedicated to Truth in Public Interest



यातायात और नागरिकता बोध

जिस समाज में हम रहते हैं उसके प्रति हमारी जिम्मेदारी है। जिस प्रकार हमारे शरीर में करोड़ों कोशिकाएं हैं और शरीर के सुचारु रूप से संचालन हेतु प्रत्येक कोशिका की जिम्मेदारी है कि वह अपना कर्तव्य भलीभाँति निर्वहन करे जिससे शरीर ठीक से काम करता रहे। समाज बहुत बड़ा है जिसमें करोड़ों लोग रहते हैं और सभी का उत्तरदायित्व है कि समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करे।

आजकल तेजी से बढ़ी जनसंख्या, शहरीकरण और जटिल समाज हो जाने के कारण लोगों का आवागमन बहुत तेजी से बढ़ा है जिसके कारण यातायात में काफी समस्या, कठिनाई और परेशानी आ रही है। लोगों के यातायात के नियमों का पालन न करने के कारण और मनमाने तरीके से वाहन संचालन के कारण शहरों में जाम और दुर्घटनाएं आम बात हो गयी हैं घ लोग नागरिकता बोध नहीं रखते हैं या जो रखते हैं वो उसका पालन नहीं करते और सड़कों को अपनी जायदाद समझते हैं जिससे दूसरे नागरिकों को काफी परेशानी उठानी पड़ती है। मुझे इस सम्बन्ध में एक यूरोपियन लेखक/विचारक की बात याद आ रही है जिसमें उन्होंने उल्लिखित किया था कि एक व्यक्ति चौड़े रोड पर अपनी छड़ी घुमाते हुए एवं लहराते हुए बीचोबीच चल रहा था। तभी दूसरे तरफ से आ रहे व्यक्ति ने उससे कहा कि श्रीमान जी ठीक से चलिए सड़क दूसरे लोगों के लिए भी है। पहले व्यक्ति ने कहा मैं तो आजाद हूँ चाहे जो करूँ चाहे जैसे चलूँ। उसी समय दूसरों व्यक्ति ने एक बात कही जो अत्यंत महत्वपूर्ण है। उसने कहा श्रीमान जी आपकी स्वतंत्रता वहीं से समाप्त हो जाती है जहाँ से मेरी नाक शुरू होती है अर्थात् किसी की स्वतंत्रता वहीं तक सीमित है जिससे वह दूसरों की आजादी बाधित न कर सके।



प्रस्तुतकर्ता -

गणेश शंकर निषाद

सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

हमारे देश में यातायात में सड़कों पर दूसरों की आजादी बाधित करने की रोज असंख्य घटनाएँ होती हैं। लोग दूसरों की परेशानी और आजादी का ख्याल नहीं रखते। सड़क में मनमाने तरीके से गमन करते हैं, कहीं भी, किसी भी जगह वाहन सड़क पर खड़ा कर देते हैं जिससे जाम लगता है और लोगों को भारी परेशानी उठानी पड़ती है। भारत में इसी कारण सबसे अधिक सड़क दुर्घटनाएँ होती हैं और प्रति वर्ष लाखों लोगों की मौत होती है। सड़क पर चलने के नियम हैं उदाहरण के तौर पर डिवाइडर वाली सड़क पर सबसे दाहिने तरफ सबसे अधिक गति वाला वाहन चलेगा उसके बाद क्रमशः कम गति वाले वाहन बाएं तरफ चलेंगे लेकिन आज कल शहरों में ई-रिक्शा सबसे दाहिने तरफ चल रहा है और जाम तथा दुर्घटना का कारण बन रहा है। लोग सड़कों पर जहाँ-तहाँ वाहन खड़ा कर दे रहे हैं जो जाम, ध्वनि प्रदूषण एवं वायु प्रदूषण का एक बहुत बड़ा कारण बन रहे हैं जिससे दुर्घटनाएँ भी हो रही हैं। इससे अन्ततोगत्वा हमारे समाज और पर्यावरण का ही काफी नुकसान हो रहा है।

हमारे देश में सड़क दुर्घटनाओं में सबसे अधिक मौतें होती हैं। दुर्घटना में किसी की मौत होना कोई सामान्य घटना नहीं है समाज के लिए वह एक मात्र गिनती या आंकड़ा हो सकती है लेकिन जिस व्यक्ति की मौत होती है वह व्यक्ति अपने परिवार के लिए पूरी दुनिया है और हमें सभी के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होना चाहिए। किसी वाहन के पीछे बहुत अच्छा लिखा था कि कृपया "सड़क पर सावधानी से वाहन चलायें किसी का परिवार आपका आभारी रहेगा"। निष्कर्ष यह है कि हमें नागरिकता बोध न होने या उसका अनुसरण न करने तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन न करने के कारण हम ही अपने समाज का काफी नुकसान पहुंचा रहे हैं। हमें हर हाल में समाज को संरक्षित करना पड़ेगा तभी हम सुरक्षित रह सकेंगे।

स्मृति शेष



अनंत कुमार त्रिपाठी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

आज दूसरे तल के एक अनुभाग में मेरा अंतिम कार्यदिवस था (27.04.25)। मुझे अवमुक्त कर दिया गया था और मेरी अगली तैयारी वाह्य निरीक्षण हेतु दूसरे अनुभाग से बाहर जाने की थी। शाम के 7.00 बज रहे थे, दूसरे तल पर मेरे अनुभाग में सभी लोग घर जा चुके थे। मैं अपने कमरे में अकेला बैठा था और विगत बिताये गए लगभग दो वर्षों को याद करने लगा, अपनी आदत और स्वभाव के अनुसार और साथ साथ डायरी लिखने के इशक के कारण मैटर जुटाने लगा। रील चलने लगी और मैं दो वर्ष पहले अपने फ्लैशबैक में पहुँच गया..... अप्रैल 2023 के किसी कार्यदिवस पर आफिस में सातवें तल पर बैठा था और मोबाइल में तल्लीन था, सहसा एक आदेश ने दिमाग की घंटी बजा दी, जो एकाएक मेरे व्हाटसप में फ्लैश कर रही थी। मेरी तैनाती दूसरे तल पर एक ऐसे अनुभाग में हो गयी थी, जो मुझे कतई पसंद नहीं थी और उसका आफिस के ऑडिट कार्य से कोई मतलब नहीं था। मैं इतना परेशान कार्यालय में कभी नहीं हुआ, जो असाइनमेंट मिला उसे तल्लीनता से किया, लेकिन ये अलग तरह का आफिस के कर्मचारियों के स्थापना से सम्बंधित जोड़, गुणा, भाग का काम वाला अनुभाग था। बहुत कोशिश की कि कुछ बदलाव हो जाय लेकिन नहीं हुआ, आदेश का पालन करना ही था, सो आ गया गिरते पड़ते।

**“जहाँ रहेगा वही रोशनी लुटायेगा
किसी चिराग का अपना मकान नहीं होता”**

नया कार्य, एकदम नए लोग, समझ में ही नहीं आता था कि क्या करूँ? वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी के रूप में बस एक राहत की बात थी कि हमारे उच्चाधिकारी अच्छे थे और अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों के बारे में ज्यादा कुछ पता नहीं था। जैसे तैसे काम शुरू किया और मन लगाने की कोशिश शुरू की। काम का बोझ इतना था कि कब शाम हो जाती पता ही नहीं चलता? और काम कभी खत्म ही नहीं होता था। धीरे धीरे मैं गति पकड़ता गया क्योंकि मैं काम से भागने वाला आदमी जो नहीं था और एक ऐसा अनुभाग मिला था, जहाँ लोग बहुत बेहतरीन थे, जिनकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि वो मेरे कार्यशैली के अनुरूप कार्य करेंगे। मैंने अपना कार्य अपने ढंग से शुरू किया, अपने ही डायनामिक अंदाज में। डायरी से सबका कार्य हर हफ्ते वाच करना, हर सीट का कार्य सहायक लेखापरीक्षा अधिकारियों से बैठ कर डिस्कस करना, हर लेखापरीक्षक से उसके कार्य के सम्बन्ध में डिस्कस करना और उच्चाधिकारियों से अच्छी बाँटिंग रखना। “मैं अकेला ही चला था जानिब-ए-मजिल मगर लोग साथ आते गए कारवाँ बनता गया” सभी अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों ने जो मेरा सहयोग किया, उसको मैं शब्दों में नहीं बता सकता। मेरे हर आदेश का समय से पालन हुआ, जिससे मैं इस अनुभाग को अपेक्षित गति दे सका। ऐसे अधीनस्थ लोग मुझे 27 वर्ष की सेवा में कभी नहीं मिले। मैंने अनुभाग का आकार भी बढ़ाया और कार्य को भी विस्तार दिया। मैंने ये कभी सोचा नहीं था कि इस अनुभाग में

भी मुझे जॉब सटिस्फैक्शन मिलेगा। इतना सम्मान और अपनापन मुझे दफ्तर में किसी अनुभाग में नहीं मिला। इतना आपसी इंटरैक्शन होगा, ये मैंने नहीं सोचा था। मैंने अपने अधीनस्थ साथियों के साथ मिलकर इस अनुभाग को एक परिवार का रूप दिया और जिसका अभिभावक मैं ही रहा। अधिकतर लोगो को अच्छे कार्यों के लिए रिवाइ भी मिला। अनुभाग का माहौल हमेशा खुशनुमा बना रहा और अनगिनत पार्टियाँ भी हुई। हम लोग पार्टी करने का कोई भी बहाना, चाहे किसी का जन्मदिन हो, चाहे होली, नया वर्ष हो, नहीं छोड़ते थे। मेरा उद्देश्य यही था कि लोगो का काम में मन बना रहे और एंज्वाय भी करें अगल बगल के अनुभाग वाले परेशान भी रहते कि यहाँ काम का बोझ ज्यादा है पर सब काम भी करते हैं और हर महीने एक दो पार्टी भी करते हैं। कुछ सुख-दुःख के पल भी रहे जिसमे हमारे एक अधीनस्थ कर्मचारी का निधन बहुत ही पीड़ादायक और हृदय विदारक रहा। अनुभाग के एक अधिकारी का हमने अभूत पूर्व/ऐतिहासिक/सम्मानजनक विदाई समारोह भी किया, जो आजीवन याद रहेगा। कुछ नए बच्चों का मार्गदर्शन करके आत्मसंतुष्टि हुई तथा कुछ से खुद मार्गदर्शित हुआ। कुछ पल ऐसे आये, जिसमे हमारे अनुभाग को अग्निपरीक्षा देनी पड़ीं लेकिन उस बाधा को भी हम सफलतापूर्वक पार करने में सफल रहे और कर्मयोगी सिद्ध हुए। हमारे अधीनस्थ अधिकारियों और कर्मचारियों ने अपनी कर्तव्यनिष्ठा और समयबद्धता की एक अद्भुत मिसाल पेश की और मेरे हर कार्य में सहयोग प्रदान किया जिससे मेरा मस्तक अपने उच्चाधिकारियों के प्रति हमेशा ऊँचा बना रहा, जिसका मैं ऋणी रहूँगा। इतनी समयबद्धता और कार्य के प्रति समर्पण और वह भी इतने बड़े अनुभाग द्वारा मैंने अपनी सर्विस में नहीं देखा, जिसका लीडर होने पर मुझे गर्व रहा। अरे साहब अब तक आप बैठे हैंअचानक केयरटेकर की आवाज से मेरी तन्द्रा टूटी, मैं फ्लैशबैक की चलित रील से बाहर आया, रात के 08.00 बज चुके थे.... केयरटेकर जा चुका था, अब आफिस में रात में निकलने वाले कबर बिज्जुओं से ही मुलाकात होनी थी.....मैं अनुभाग की यादों से भी बाहर आया और नयी ऊर्जा और सोच के साथ घर की तरफ चल पड़ा..... कल के नये असाइनमेंट के लिए जो तैयार होना था।

फिर चलते चलते एक शेर याद आया:

-हद-ए-शहर से निकली तो गाँव गाँव चली,
कुछ सुनहरी यादें मेरे साथ पावं पावं चली ।
सफर धूप का किया तो ये तजुर्बा हुआ,
वो जिन्दगी ही क्या जो छाँव छाँव चली ॥

भारत मंडपम में राजभाषा स्वर्ण जयंती समारोह

यात्राएँ हमें केवल नई जगहों से नहीं, बल्कि अपनी संस्कृति और विरासत से भी जोड़ती हैं। हाल ही में मुझे दिल्ली घूमने और भारत मंडपम में आयोजित राजभाषा स्वर्ण जयंती समारोह का हिस्सा बनने का अवसर मिला। यह यात्रा मेरे लिए इतिहास, आधुनिकता और गर्व से भरी हुई एक यादगार कहानी बन गई। दिल्ली पहुँचते ही मैंने सबसे पहले लाल किला देखा। उसकी विशाल लाल दीवारें मानो सदियों पुराने इतिहास की गवाही दे रही थीं। लाल किला के चारों ओर स्थित फुटपाथ में लगी बाजार मुझे काफी अच्छी लगी और वहाँ इतना भीड़-भाड़ होने के बावजूद भी वहाँ की साफ-सफाई ने मुझे बहुत प्रभावित किया। फिर मैं इंडिया गेट पहुँची, जहाँ शहीदों की स्मृति में जलती अमर ज्योति ने मुझे गहरे देशभक्ति के भावों से भर दिया। देश-विदेश से बहुत लोग इस इंडिया गेट को देखने आते हैं। इसके बाद मेरी राह मुझे कुतुब मीनार तक ले गई, जिसकी ऊँचाई और स्थापत्य कला ने मंत्रमुग्ध कर दिया। कुतुब मीनार भारतीय इतिहास की निशानी है। इसके बाद मैं महात्मा गाँधी जी के शहीद स्मारक राजघाट के दर्शन करने गयी। राजघाट की शांति और वहाँ का सादा वातावरण मेरी आत्मा को छू गयी। दिल्ली का लोटस टेम्पल और अक्षरधाम मंदिर देखने का अनुभव अद्वितीय था - एक ओर आधुनिक स्थापत्य की झलक और दूसरी ओर आध्यात्मिक भव्यता।

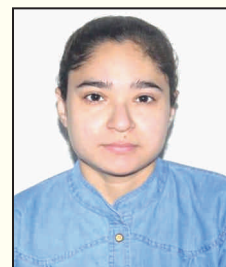


रीनू गुप्ता

कनिष्ठ अनुवादक

भारत मंडपम में मेरा अनुभव मेरे दिल्ली प्रवास का सबसे अविस्मरणीय क्षण था प्रगति मैदान स्थित भारत मंडपम पहुँचना। इसे देखकर मैं सचमुच चकित रह गयी। इसकी बाहरी आकृति "शंख" से प्रेरित है, जो भारतीय परंपरा में शुभता का प्रतीक है। यहाँ का बहुउद्देश्यीय हॉल, जहाँ लगभग 7,000 लोग बैठ सकते हैं, वाकई भव्य और आधुनिक है। यह स्थल अपने आप में एक अद्भुत वास्तुकला का उदाहरण है। पूरे परिसर में भारतीय कला और शिल्प की झलक है- भित्ति चित्र, मूर्तियाँ और पारंपरिक डिजाइन मानो भारत की आत्मा को दर्शाते हैं। यह न केवल सुंदर है, बल्कि पर्यावरण-अनुकूल (Green Building) भी है, जहाँ प्राकृतिक रोशनी और ऊर्जा बचत की विशेष व्यवस्था है। मुझे लगा जैसे यहाँ खड़े होकर मैं भारत के वर्तमान और भविष्य दोनों को एक साथ देख रही हूँ। आधुनिक भारत की पहचान बन चुका यह परिसर हमारी समृद्ध परंपराओं और गौरवशाली इतिहास से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। भारत मंडपम की डिजाइन में कोणार्क सूर्य मंदिर के रथचक्र और अशोक चक्र की प्रेरणा झलकती है। विशाल प्रदर्शनी कक्ष, अत्याधुनिक तकनीकी सुविधाएँ और सुसज्जित परिसर इसकी भव्यता को और भी बढ़ा देते हैं। बाहर की दीवारों पर भारतीय संस्कृति से जुड़े सुंदर रूपांकन देखने योग्य हैं। इसी भव्य परिसर में राजभाषा स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी ने किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि राजभाषा केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि भारतीय अस्मिता और एकता का प्रतीक है। उनके शब्द सुनकर मेरे भीतर गर्व की लहर दौड़ गई। वातावरण अत्यंत उत्साहपूर्ण और गौरवमय था। देशभर से आए अधिकारी, विद्वान और गणमान्य व्यक्ति इस ऐतिहासिक अवसर के साक्षी बने। समारोह में विभिन्न राज्यों से आए कलाकारों ने भाषा, संस्कृति और कला की अद्भुत झलक प्रस्तुत की। कहीं कविता-पाठ था, कहीं नृत्य और संगीत। भारत की विविधता एक मंच पर सजीव हो उठी। मेरे लिए भारत मंडपम में बैठकर इस समारोह का हिस्सा बनना केवल एक आधिकारिक दायित्व नहीं था, बल्कि यह अपने आप में राष्ट्रीय गौरव और व्यक्तिगत प्रेरणा का अनुभव भी था। मेरी दिल्ली यात्रा सिर्फ एक साधारण यात्रा नहीं रही। यह मेरे लिए इतिहास, संस्कृति, भाषा और आधुनिक भारत की शक्ति का अनुभव थी।

योग शास्त्र और स्वास्थ्य



कीर्ति मेहरा
आशुलिपिक

योग के लाभों को जानने से पहले, यह समझना जरूरी है कि योग वास्तव में क्या है? योग कोई धर्म नहीं है, यह जीने का एक तरीका है जिसका उद्देश्य स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन की प्राप्ति है। मनुष्य एक शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक प्राणी है, योग तीनों के बीच संतुलन विकसित करने में मदद करता है जैसा कि भारत में यजुर्वेद में कहा गया है।

योग शब्द संस्कृत के 'युज' धातु से बना है, जिसका अर्थ है- जोड़ना। तीन युज धातु हैं-

- (क) युज समाधौ
- (ख) युजिर योगे
- (ग) युज संयमने

क- युज समाधौ का अर्थ है, समाधि की प्राप्ति के लिए शास्त्रों में बताई गई साधनाओं को अपने जीवन में अपनाना ही योग है।

ख- युजिर योगे का अर्थ है, संयोग करना अर्थात् दुःख रूपी संसार से वियोग व इश्वर से संयोग का नाम ही योग है।

ग- युजसंयमने का अर्थ है, मन का नियमन करना ही योग है।

इस प्रकार योग का अर्थ, योग साधनाओं को अपनाते हुए मन को नियंत्रित कर, संयमित कर, आत्मा का परमात्मा से मिलन ही योग है। योग सिर्फ शरीर को मोड़ना या साँस रोकना नहीं है। यह आपको ऐसी अवस्था में लाने की तकनीक है जहाँ आप वास्तविकता को वैसे ही देखते और अनुभव करते हैं, जैसी वह है। योग आपके मन, शरीर और आत्मा के बीच सामंजस्य को आदर्श बनाने पर केन्द्रित है। योग का उद्देश्य हमारे जीवन का समग्र विकास करना है। समग्र विकास से तात्पर्य यहाँ शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक व सामाजिक विकास से है। यह योग विद्या प्राचीन काल से अब तक योगियों के हृदय में पवित्र मंदाकिनी के अविरल प्रवाह की तरह प्रवाहित होती आ रही है। योग साधना के द्वारा ही आत्म साक्षात्कार, आत्मदर्शन, तत्त्वदर्शन होता है। इसलिए याज्ञवल्क्य स्मृति में भी कहा गया है-

'अयं तु परमो धर्मो यत्योगेनात्मदर्शनम् ।'

अर्थात्, जिस साधना द्वारा आत्म दर्शन और ब्रह्म साक्षात्कार होता है, वह योग शास्त्र है।

श्रीमद् भगवद्गीता के अनुसार-

'बुद्धि युक्तो जहाँ तीहं उभय सुकृत दुष्कृते ।

तस्याद्योगाय युज्जस्व योगरू कर्मसु कौशलम् ॥'

अर्थात्, कर्मों में कुशलता का नाम ही योग है। कर्मों की कुशलता का तात्पर्य यह है कि हमें कर्म इस प्रकार से करने चाहिए कि वे बंधन का कारण न बने। अनासक्त भाव से अपने कर्तव्य कर्मों का निर्वहन करना ही कर्म योग है। महोपनिषद के अनुसार- 'मन के संवेगों पर नियंत्रण ही योग है।' महर्षि अरविन्द के अनुसार- 'जीवन को बिना खोये भगवान की प्राप्ति योग है।'।

कैवल्योपनिषद के अनुसार-

'श्रद्धा भक्ति योगावदेहि।'।

अर्थात्, श्रद्धा भक्ति और ध्यान के द्वारा आत्मा को जानना ही योग है।

लिंग पुराण के अनुसार-

'योग निरोधो वृत्तेस्तु चित्तस्य द्विज सत्तमा।' अर्थात्, चित्त की सभी वृत्तियों का निरोध हो जाना, उसे पूर्ण समाप्त कर देना ही योग है। उसी से परमगति अर्थात् ब्रह्म की प्राप्ति होती है। योग विद्या के द्वारा सम्पूर्ण स्वास्थ्य के साथ-साथ मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करता है। इस योग साधना के द्वारा मनुष्य अटूट स्वास्थ्य, दीर्घायु, दिव्य जीवन, मुक्ति, मोक्ष आदि सभी कुछ प्राप्त कर सकता है। परन्तु आज के आधुनिक युग में भाग-दौड़ भरी जिन्दगी में मनुष्य रोगों से ज्यादा ग्रस्त है, और योग ऐसे में मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ सामाजिक स्वास्थ्य भी प्रदान करता है। विकास के इस युग में योग का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है व योग का अनेक क्षेत्रों में महत्व है। योग के कुछ लाभ इस प्रकार हैं -

1. तनाव का स्तर कम करता है।
2. लचीलापन बढ़ता है।
3. मस्तिष्क की कार्यप्रणाली में सुधार करता है।
4. रक्तचाप कम करता है।
5. स्वस्थ वजन।
6. मधुमेह रोगियों में रक्त शर्करा कम करता है।
7. हृदय रोगों का खतरा कम करता है।
8. संतुलन की भावना में सुधार करता है।
9. मजबूत हड्डियाँ।
10. चिंता से राहत दिलाता है।

योग के अभ्यास के अनगिनत लाभ हैं, जो किसी व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। योग साधना की शारीरिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका है। योग के आठ अंगों में तीसरा, चौथा अंग आसन व प्राणायाम से शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त होता है। योगासनों से शारीरिक शक्तियों का विकास किया जाता है। शरीर स्वस्थ व निरोग बनता है। वही हठयोग के अभ्यास के द्वारा शरीर में व्याप्त वात, पित्त, कफ संतुलित होता है। इस प्रकार योग साधना से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। शरीर में स्फूर्ति, मन में उल्लास, बहुमुखी प्रतिभा का उदय व

इस प्रकार योग साधना से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। शरीर में स्फूर्ति, मन में उल्लास, बहुमुखी प्रतिभा का उदय व विकास होने लगता है। आज विश्व स्वास्थ्य संगठन भी इस बात को मान्यता देता है कि वर्तमान में व्याप्त शारीरिक और मानसिक रोगों के उपचारार्थ योग एक अचूक चिकित्सा विधि है। योग के द्वारा शारीरिक के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य को भी प्राप्त किया जा सकता है। आज के आधुनिक समाज में मानसिक रोगों की वृद्धि होती जा रही है। मानसिक रोग एक भयावहता का रूप लेते जा रहे हैं। इस तनाव जन्य परिस्थितियों और रोगों से निपटने के लिए योगाभ्यास एक सफल व कारगर चिकित्सा पद्धति है। योग चित्त की वृत्तियों पर अंकुश लगाया जाता है। मन की चंचलता को कम कर मानसिक एकाग्रता प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार, आज के आधुनिक युग में योग का हमारे जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, जिसको निम्न पंक्तियों द्वारा प्रकट करने का प्रयास है-

“योग की धारा, शांति की बयार,
मस्तिष्क और तन को देती है प्यार ।
आसनों और प्राणायामों के प्रकार,
शरीर की बीमारियों पर करते हैं प्रहार ॥”



एक पिता की सीख : लघुकथा



सत्य प्रकाश सिन्हा
लेखापरीक्षक

एक छोटे से गाँव में एक लड़का रहता था, जिसका नाम रोहन था। रोहन के पिता एक साधारण किसान थे, लेकिन उनके पास जीवन की गहरी समझ थी। एक दिन, रोहन ने अपने पिता से पूछा, "पिताजी, जीवन में सफलता का रहस्य क्या है?" "पिता ने मुस्कुराते हुए कहा, बेटा, जीवन में सफलता का रहस्य यह नहीं है कि तुम कितना पैसा कमाते हो या कितनी ऊँचाई तक पहुँचते हो। सफलता का रहस्य यह है कि तुम अपने जीवन में कितना संतोष और खुशी पाते हो।"

पिता ने आगे कहा, "बेटा, जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। कभी-कभी हमें सफलता मिलती है, तो कभी-कभी असफलता। लेकिन असफलता से घबराना नहीं चाहिए। असफलता से हमें सीखने का अवसर मिलता है और हमें अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।" रोहन ने पिता की बातों को ध्यान से सुना और उन्हें अपने जीवन में उतारने का प्रयास किया। उसने अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने के लिए कड़ी मेहनत की और असफलता से सीखने का प्रयास किया। आज रोहन एक सफल व्यक्ति है और वह अपने पिता की सीख को अपने जीवन में उतारने के लिए आभारी है। वह जानता है कि जीवन में सफलता का रहस्य संतोष, खुशी और कड़ी मेहनत में है।



भाषा - अभिव्यक्ति का माध्यम, पहचान का आधार

भाषा - यह शब्द जितना सरल दिखता है, उतनी ही गहराई इसकी प्रकृति में छिपी होती है। यह केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि हमारी सोच, संस्कृति, संवेदना और पहचान का सजीव प्रतिबिम्ब है। हम रोजमर्रा की जिंदगी में अनगिनत बार भाषा का प्रयोग करते हैं - कभी मुस्कान से, कभी शब्दों से, तो कभी मात्र एक मौन इशारे से।

इंसान को अन्य जीवों से अलग करने वाली सबसे अद्भुत चीजों में से एक है- उसकी भाषा। यह हमें अपने विचारों को व्यवस्थित करने, दूसरों से जुड़ने और भावनाओं को साझा करने की क्षमता देती है।



शिवम सिंह
आशुलिपिक

भाषा का उद्भव और विकास - भाषा का इतिहास उतना ही पुराना है जितना खुद मानव सभ्यता का। आरंभ में आदिमानव संकेतों, ध्वनियों और चित्रों के माध्यम से अपनी बात कहता था। समय के साथ इन ध्वनियों ने संरचना पाई, शब्द बने, वाक्य बने और फिर संपूर्ण भाषाएँ गढ़ी गईं। भारत में संस्कृत को सबसे प्राचीन और वैज्ञानिक भाषा माना गया है, जिसके बाद विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं - जैसे तमिल, हिंदी, उर्दू, मराठी, बंगाली, कन्नड़ आदि का विकास हुआ। आज दुनिया में लगभग 7000 भाषाएँ बोली जाती हैं, लेकिन इनमें से कई भाषाएँ लुप्त होने के कगार पर हैं।

तकनीकी युग में भी भाषा का विकास जारी है। "सेल्फी", "डाउनलोड", "ब्लॉग", "स्टोरी" जैसे शब्द रोजमर्रा की भाषा का हिस्सा बन चुके हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि भाषा समय के साथ बदलती है, लेकिन उसका मूल उद्देश्य - संवाद - हमेशा स्थिर रहता है। भाषा: सिर्फ माध्यम नहीं, पहचान भी भाषा किसी भी समाज की सांस्कृतिक आत्मा होती है। जब हम अपनी मातृभाषा में बात करते हैं, तो हम न केवल संवाद करते हैं, बल्कि उस सांस्कृतिक विरासत को भी आगे बढ़ाते हैं जो पीढ़ियों से हमारे भीतर जीवित रही है। कभी आपने देखा है कि विदेश में रहने वाले लोग जब अपनी भाषा सुनते हैं तो चेहरे पर अलग ही चमक आ जाती है। यह जुड़ाव केवल शब्दों से नहीं, बल्कि भावों और यादों से आता है। हर भाषा में उस समाज की सोच, स्वाद और स्वभाव छिपा होता है - पंजाबी की ऊर्जा, बंगाली की मिठास, मराठी की सादगी - यह सब भाषा के जरिये महसूस होता है। भाषा और संस्कृति: एक-दूसरे के पूरक भाषा और संस्कृति का रिश्ता अत्यंत गहरा होता है। लोकगीत, कहावतें, मुहावरे, रीति-रिवाज - सब कुछ भाषा में ही जीवित रहते हैं। कोई भी संस्कृति अपनी भाषा के बिना जीवित नहीं रह सकती। जब कोई भाषा समाप्त होती है, तो उसके साथ उस समुदाय का इतिहास, ज्ञान और जीवन दर्शन भी लुप्त हो जाता है। इसलिए भाषा केवल संवाद की चीज नहीं है - यह स्मृति, परंपरा और सांस्कृतिक चेतना की धरोहर है। वर्तमान चुनौतियाँ भाषा आज कई मोर्चों पर संघर्ष कर रही है। सबसे बड़ी चुनौती है - अपनी भाषाओं को संरक्षित रखना।

1. ग्लोबल भाषाओं का प्रभाव: अंग्रेजी जैसी भाषाओं का वर्चस्व बढ़ा है। शिक्षा, नौकरी और तकनीक के क्षेत्र में इसका

बोलबाला है। इसका परिणाम यह हुआ कि कई स्थानीय भाषाएँ और बोलियाँ हाशिये पर चली गई हैं।

2. डिजिटल संस्कृति और भाषा की शुद्धता: सोशल मीडिया पर भाषा की संरचना टूट रही है। संक्षिप्त, मिश्रित, और अक्सर अशुद्ध भाषा का चलन बढ़ रहा है, जिससे भाषा की मूल गरिमा को चोट पहुँचती है।

3. शहरीकरण: महानगरों में मातृभाषा में संवाद कम हो रहा है। अभिभावक भी बच्चों को अंग्रेजी सिखाने में गर्व महसूस करते हैं, लेकिन अपनी भाषा की शिक्षा को महत्व नहीं देते। भविष्य हमारे हाथ भाषा को बचाने की जिम्मेदारी सिर्फ सरकार की नहीं है, बल्कि हर व्यक्ति की है। जब हम अपने बच्चों से अपनी भाषा में बात करेंगे, जब हम लोक साहित्य, कहानियाँ और कविताएँ सुनाएँगे, तब भाषा बचेगी। शिक्षा व्यवस्था में मातृभाषा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। डिजिटल मंचों पर क्षेत्रीय भाषाओं को स्थान मिलना चाहिए। ऐप्स, वेबसाइट्स और सरकारी सेवाएँ कई भाषाओं में उपलब्ध होनी चाहिए, जिससे आम लोग सहज रूप से संवाद कर सकें। इस दिशा में पहले ही अनेक प्रयास किए जा रहे हैं एवं अभी भी प्रयास जारी है। इसके अलावा, साहित्यिक रचनाओं का अनुवाद, क्षेत्रीय भाषाओं पर शोध और लोक संस्कृति का संरक्षण आवश्यक है।

निष्कर्ष: भाषा केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि एक सोचने का तरीका, एक जीवन दर्शन है। अगर हम अपनी भाषा को भूलते हैं, तो हम अपने अतीत, अपनी संस्कृति और अपनी पहचान को भी खो देते हैं। हमें अपनी मातृभाषा पर गर्व होना चाहिए, और यह प्रयास करना चाहिए कि यह आने वाली पीढ़ियों तक उसी आत्मा के साथ पहुँचे, जैसे हमें मिली थी। जब हम अपनी भाषा बोलते हैं, तब हम केवल बात नहीं करते, हम अपनी संस्कृति को जिंदा रखते हैं।



समस्या एवं निदान



कमला शंकर मिश्रा

सहायक पर्यवेक्षक ए.एम.जी-1

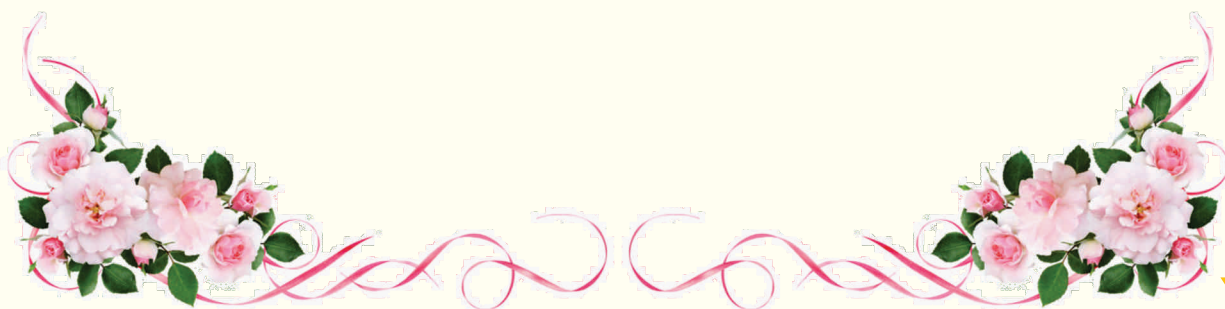
पत्नियों आपका व्यवहार कैसा है ? क्या आपके व्यवहार के कारण, आपकी बातचीत के कारण और कामों के कारण आपके पति गलत रास्ते पर जा रहें ?

कुछ पति आधी रात बीत जाने के बाद भी घर नहीं आते। पतियों से पूछने पर पति दुःखी होकर कहता है अरें ! घर में यदि मैं कदम न रखूँ तो मुझे शांति महसूस होती है। इच्छा होती है कि कहीं जाकर मर जाऊँ। यहां घुसते ही बेचौनी शुरू हो जाती है।

पत्नियों, याद रखियें आपके व्यवहार के कारण आपके बर्ताव के कारण आपके पति गलत रास्ते पर न जाने पाएं। उसके लिए आप ही दोषी होगी। बड़े दुःख की बात है कि अनेक परिवारों में ऐसा हो रहा है।

एक पत्नी को पति से प्रेम से बात करने और उनके प्रश्न का नम्रता से उत्तर देने के लिए तैयार रहना चाहिए। पति जब थक कर काम से वापस आता है तो उनसे प्रेम से बातें करने के लिए समय निकालें और आप उससे सिर्फ अच्छी ही बातें कहें। अपनी गलतफहमियों को दूर करने के लिए समय निकाले अगर आप पति के साथ खुलकर बात करेंगी तो आपको सच्चाई पता चल जायेगी और आपके परिवार का जीवन सुखमय हो जायेगा।

Dedicated to Truth in Public Interest



सफलता का दूसरा नाम परिश्रम

श्रम ही सो सब मिलत है, बिन श्रम मिले न काहि ।
सीधी उंगली घी जमो, कबहूँ निकसत नाहि ॥



(किष्ण लता)

सहायक निदेशक / राजभाषा

ईश्वर ने सृष्टि को कर्मप्रधान बनाया है। कर्म का क्षेत्र जन्म लेते ही आरम्भ हो जाता है। प्रकृति का प्रत्येक पदार्थ हमें कर्मरत रहने की प्रेरणा देता है। पवन बिना रुके बहती है सूर्य, धरती, चाँद नक्षत्र सब निरन्तर गतिशील रहते हैं। नदियाँ बहती रहती हैं तो फिर मानव जीवन की कल्पना बिना परिश्रम के कैसे सम्भव है।

परिश्रम का मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। सदा से मनुष्य जीवन के लिए संघर्ष करता आया है। शारीरिक या मानसिक रूप से उत्कृष्ट कोटि का श्रम ही परिश्रम कहलाता है। संसार में सफलता के शिखर पर परिश्रमी व्यक्ति ही पहुँचता है। श्रम वह तपस्या है जिसमें तपकर मनुष्य का व्यक्तित्व निखर उठता है। परिश्रम से मनुष्य की शारीरिक, बौद्धिक तथा मानसिक शक्तियों का विकास होता है। संसार की समस्त वैज्ञानिक, आर्थिक, औद्योगिक तथा सांस्कृतिक उन्नति का आधार परिश्रम ही है। परिश्रम के ही कारण मनुष्य अंतरिक्ष की यात्रा कर पाया, एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ पाया व हजारों किलोमीटर दूर की यात्रा कर एक देश से दूसरे देश का सम्बन्ध स्थापित कर पाया। परिश्रम के कारण ही कल तक जंगलों में भटकने वाला प्राणी आज विज्ञान की मदद से सुखपूर्वक यात्रा करता है।

परिश्रम से ही मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है। परिश्रम से ही कर्म सिद्ध होते हैं। केवल मन की इच्छा से नहीं। प्रकृति में प्रत्येक तत्व को जीवन के लिए संघर्षरहित रहना पड़ता है। मनुष्य ने परिश्रम से बड़ी-बड़ी नदियों के रुख बदल दिए। ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति का अंदाजा लगा लिया। जेट और नेट विमान बना दिए। मशीनी मानव व संगणक बनाकर अलग ही दुनिया खड़ी कर ली।

भगवान श्रीकृष्ण ने भी गीता में कर्मयोग का संदेश दिया। जो व्यक्ति परिश्रम करता है। ईश्वर भी उसकी मदद करता है। ऐसे व्यक्तियों में अथाह कार्यक्षमता उत्पन्न हो जाती है तथा वे इस वसुन्धरा सुख भोगते हैं। महात्मा गांधी, लिंकन, मार्क्स, चर्चिल, लालबहादुर शास्त्री की जीवन कथा स्वयं परिश्रम की महत्ता का गुणगान करती हैं। परिश्रम ही वह शक्ति है जो मनुष्य के जीवन को बदल सकती है। मनुष्य के जीवन को आनंदित व सुखमय बना सकती है। परिश्रम ही जीवन का सार है। परिश्रम से व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करता है। भारतीय संस्कृति में तो यहाँ तक माना गया है कि सतत् कर्मरत् प्राणी ही मोक्ष को प्राप्त होता है।

विद्यार्थी जीवन में परिश्रम का बहुत महत्त्व है। एडीसन ने इस विषय में कहा है कि सफलता का कारण प्रतिभा है, परन्तु प्रतिभा क्या है? एक औंस बुद्धि और एक टन परिश्रम। सतत् परिश्रम कर साधारण छात्र भी असाधारण सफलता प्राप्त कर सकते हैं। परिश्रम व अभ्यास से वरदराज जैसे मूर्ख ने पाणिनि जैसे ग्रंथकारों की टिप्पणी की। कालिदास तथा तुलसीदास जैसे ग्रंथकार बने। विद्यार्थी जीवन में परिश्रम करने वाला छात्र अपने सुनहरे भविष्य की नींव तैयार करता है। इसलिए कवि का हृदय पुकार उठा-

श्रम जीवन का सार है, श्रम मानव का हार है,
श्रम करता है गुण महान, श्रम सच्चा व्यवहार है।

भारत की नेचुरोपैथी एवं उपभोक्तावाद



शाहिल पथिक
लेखापरीक्षक

भारत में हम सदियों से एक समाज की तरह रह रहे हैं। पश्चिम का दर्शन हमें बताता है कि इंसान समाज का मूल आधार है परंतु भारतीय दर्शन के अनुसार परिवार समाज का मूल आधार है। इंसान को हमने तरजीह दी और उसको समाज का हिस्सा मानते हैं परंतु समाज में उसका स्थान तभी सुनिश्चित होता है जब उसका परिवार बनता है। यूनान में ये बात सबसे पहले अरस्तु ने मानी और परिवार को समाज की नींव माना। परिवार का महत्व इसलिए भी सर्वोपरि है क्योंकि बहुत सी विद्या हम परिवार के बड़े बुजुर्गों से ही सीखते हैं हमारे परिवार की परम्परा, दादी नानी के नुस्खे, जिसे आजकल नेचुरोपैथी कहा जा रहा है ये आयुर्वेद का एक भाग है जो सदियों से हमारे समाज का अभिन्न अंग रहा है। परिवार की संस्था जैसे- जैसे कमजोर होने लगी, लोग अपनी घर के रसोई में रखी दवाओं को भूलने लगे। ऐसा नहीं की ये रातों रात हुआ इसके पीछे भी एक लंबा इतिहास है। भारत में एलोपैथी अंग्रेज अपने साथ लेकर आए पर हमारे पारिवारिक संरचना ऐसे थी कि उनका व्यापार ज्यादा फला फूला नहीं इसके साथ साथ होम्योपैथी, यूनानी भी भारत से बाहर से ही आये। उसने भी धीरे धीरे भारत में अपनी जगह बनाई पर वो एलोपैथी की तरह तेज और त्वरित कार्रवाई करने वाली दावा नहीं थी उसका कार्यक्षेत्र भी मर्ज था मरीज नहीं। कहते हैं जब विलियम हॉकिन्स जहांगीर की दरबार में आया तो जहांगीर ने उसे व्यापार करने की आज्ञा नहीं दी थी परन्तु उस समय उसकी बेटी बीमार थी और विलियम हॉकिन्स ने इस अवसर का लाभ उठाते हुये एलोपैथी विधि से उसका इलाज किया और अंग्रेजों की सद्भावना जहांगीर के सामने काफी बढ़ गयी और उनको ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए फैक्ट्री खोलने के लिए परमिट मिल गया।

एलोपैथी का सार्थक प्रभाव : ऐसा नहीं है कि एलोपैथी ने अपना कोई प्रभाव नई छोड़ा, भारत एवं विश्व में पहले अनेक महामारिया फैलती थी और पूरे के पूरे गांव को लील जाती थी। इस देश में मलेरिया, गुजरात में फैला प्लेग, स्पेनिश फ्लू हमने सब झेला है जिसे पहले दैवीय प्रकोप मान के झाड़ फुक की जाती थी। जिससे न जाने कितनी ही जाने गयी, परंतु ये बीमारिया फैलाई किसने, अंग्रेजों और बाहर से आते यात्रियों ने। इन बीमारियों से यूरोपियों ने द्वीप के द्वीप साफ कर दिए। ऐसे खतरनाक बीमारियों ने उनकी मदद की रेड इंडियंस को अमेरिका में मारने के लिए, नेटीव्स को ऑस्ट्रेलिया में, भारतीयों को भारत और अफ्रीका के मूल निवासियों को अफ्रीका में इन्फेक्शन देने में सहायता की। वो बीमारी लाते और इलाज कर के जादू दिखाते व अपने धर्म का प्रचार करते। उन्होंने बीमारी को धर्म प्रचार व धर्मांतरण का साधन बना दिए। मैं किसी धर्म की आलोचना नहीं कर रहा पर उसका रास्ता सही होना चाहिए किसी की बीमारी व असहाय होने को अवसर की तरह देखना धर्म का भी माखौल बनाने जैसा है। यही काम मिशनरियों ने पूरी दुनिया में किया, चाहे वो अफ्रीका हो, अमेरिका हो, एशिया हो या ऑस्ट्रेलिया। वो अपने तो साइंस एंड टेक्नोलॉजी पर काम करते रहे और उसको

जादू व ईश्वर का आशीर्वाद बता दूसरों को छलते रहे। सबसे ज्यादा धर्मांतरण महामारियों के समय ही देखे गए जहां प्रार्थना सभाएं आयोजित करके लोगों की जान बचाने का दावा किया जाता, भोली भाली जनता जो सदियों से पीड़ित थे किसी के भी बात में आ जाते व अपने प्राचीन धर्म और जीवन पद्धति से नफरत करने लगते। धर्मांतरण के लिए अपने पुराने जीवनशैली से नफरत करना भी बहुत आवश्यक है। धीरे धीरे इस मानसिकता ने लोगो के दिमाग में घर कर लिया कि जो ये गोरे कह रहे हैं वो ही सही है, हम तो पिछड़े, आदिमानव व अविवेकशील समाज हैं। बच्चे बुजुर्गों को बेवकूफ समझने लगे और समझने लगे कि इस हल्दी से, नीम से, फल की पत्तियों से इलाज हो जाएगा? बड़े बुजुर्गों को नए समाज और जीवन पद्धति का क्या ही समझ है और धीरे धीरे दादी नानी के नुस्खे गैरजरूरी और बोझ लगने लगी और देश में सरसों के तेल की जगह डाबर लाल तेल फिर जॉनसन एंड जॉनसन और अब हिमालय मसाज तेल ने ले लिया। अब तो छोटे छोटे बच्चों को धूप में निकलने के पहले सनस्क्रीन लगायी जाती है ताकि उनको धूप न लग जाए, फिर जीवन भर विटामिन और कैल्शियम की कमी के चलते एलोपैथी दवाओं का सेवन करना पड़ता है। मेरा ये कहना या मानना नहीं है कि हम कोई भी चिकित्सा पद्धति को सिरे से नकार दे और उसमें सिर्फ कमी ही कमी है पर एलोपैथी पद्धति अपने साथ एक पूरा समाज लेके आई स एलोपैथी में जब एंटीबायोटिक दवाएं आई तो साथ बहुत सारे साइड इफेक्ट भी लायी। जब दुनिया में कोविड-19 आया उसने बहुत सारे लोगों की जान ली। उसके दूसरे चरण में सबसे ज्यादा जाने गए डॉक्टरों ने जरूरत से ज्यादा स्टीरॉयड मरीजों को दिए। जिसने बहुत सारे लोगों की रोगों से लड़ने की क्षमता घट गयी। सबने ये सुना होगा जो हॉस्पिटल गया उसका वापस आना ज्यादा मुश्किल था, एलोपैथी विधि रोग पर नई रोगी पर काम करती है इसलिए रोग सुप्त पड़ जाता है पर जड़ से समाप्त नहीं होता एनेचुरोपैथी जिसमें आयुर्वेद, सिद्ध, होमियोपैथिक, यूनानी, योग सारे ही समाहित हैं रोग पर काम करते हैं ताकि रोगी को नुकसान पहुंचाए बिना रोग का इलाज हो सके स ये एलोपैथी से थोड़ा ज्यादा समय लेते हैं पर ये एंटीबायोटिक और पेनकिलर की तरह जाते जाते एक नया रोग देकर नहीं जाते न ही करोड़ों की चपत लगाते हैं। अगर आप एलोपैथी की कोई दावा अधिक या गलत खा ले तो ये आपकी किडनी, दिल, रक्तचाप, थायरॉइड जैसे न जाने क्या क्या बीमारियों अपने पीछे छोड़ जाता है। आज भी एलोपैथी का विस्तार करने वाले इस गरीब व अनपढ़ बना कर जादू से ही लोगो को ठीक कर रहे हैं। मिशनरियां आज भी ऐसे शिविर लगती हैं जहां झाड़ फुक कर के एड्स तक का भूत तक भगाया जा रहा है, यूरोपियन और वेस्टर्न देश खुद तो डेवलेपमेंट के चरम सीमा तक पहुंच चुके हैं, साइंस एंड टेक्नोलॉजी में अपने देश का 8: तक जीडीपी खर्चा करते हैं पर हमारे यहाँ आज भी जादू टोना और धर्मांतरण का षडयंत्र चल ही रहा है। बाजारवाद व हमारे पुराने जीवनशैली: कोलगेट आज कल टूथपेस्ट में नमक और राख मिला के बेच रहा है जब हम इस से दांत मांजते थे तो हमें गवार और बेवकूफ साबित कर हमारे हाथ में कोलगेट पकड़ा दिया गया। सौंदर्य प्रसाधन नीम और हल्दी डाल के फेसवॉश बेच रही है और बेसन और मुल्तानी मिट्टी के उबटन, पर ये तो हमारे ही जीवनशैली की पद्धति है जो अब पैकट में बंद होके मिल रही है। कभी कहते हैं डब्बा बंद सामान लेने से वो साफ सुथरा और प्रमाणित मिलता है बाद में पता चला कि ये बाजारवाद का ही असर है जो हमारे खुले सामान को हमसे ही खरीद कर बड़ी दुकानों और डिब्बों में सजा दिया गया है। हाल ही पेरिस में एक फैशन शो आयोजित हुआ

है। हाल ही पेरिस में एक फैशन शो आयोजित हुआ उसमें मॉडल ने पराडा के जूते-चप्पल का प्रदर्शन किया ,भारत में इससे खूब हो हल्ला मचा की भारत के कोल्हापुरी 200 रुपए के चपल को 1-2 लाख में बेचा जा रहा है और इसका श्रेय भी भारत के उन गरीब परिवारों को नहीं दिया जा रहा जिन्होंने इसका निर्माण किया। ये बाजारवाद का असली चेहरा है, अंग्रेज आज भी इस देश से नहीं गए वो आज भी हमसे हमारे सस्ते माल को खरीदते हैं और उस पर लेवल लगा उसे एक ब्रांड बना कर हम लोगों ही को बेच देते हैं। चाहें इस देश के दिमाग का पलायन हो या यूरोपीय का आज भी लुटेरा होना कुछ नहीं बदला, शायद हम बदल सकते इस मानसिकता को जो अपनी पुरानी पद्धतियों को कमतर और गोरों के अप्रूव्ड चिकित्सा पद्धति को श्रेष्ठ मानते हैं। अगर हम अपनी पद्धति पर वापस आते हैं तो न सिर्फ हमारे बुजुर्गों का सम्मान बढ़ेगा बल्कि हम इनके ज्ञान से आलौकित होंगे। हम अच्छी चिकित्सा पद्धति से इलाज करा पाएंगे बिना किसी साइडइफेक्ट के विचार कीजियेगा ।



महाकुंभ : भारतीय संस्कृति का एक उज्ज्वल अध्याय



उमाशंकर दूबे

(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)

इस वर्ष प्रयागराज स्थित गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती नदियों के संगम तट पर भारतीय संस्कृति, समरसता और सौहार्द का अद्भुत समागम देखने को मिला। यह आयोजन केवल एक धार्मिक समागम तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह भारतीय समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, प्रशासन एवं वैश्विकता के साथ गहराई से जुड़ा हुआ था। आस्था का यह विराट संगम ना केवल मात्रात्मक रूप में अद्वितीय था बल्कि कई मायनों में यह भारतीय संस्कृति पर दूरगामी प्रभाव छोड़ गया। देश और विदेश से करोड़ों सनातन धर्मावलंबियों का संगम में पवित्र डुबकी लगाना महज धार्मिक आस्था नहीं कही जा सकती, बल्कि यह सनातन परंपरा और संस्कृति के संरक्षण का प्रतीक पर्व था। विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि के श्रद्धालुओं का अपने धर्म, संस्कृति एवं दर्शन के लिए इतनी बड़ी संख्या में एकत्र होना दर्शाता है कि विविधता में एकता भारत की आत्मा है, जिसे अक्षुण्ण रखने में ऐसे समागमों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस बार का महाकुंभ कई मायनों में अभूतपूर्व रहा। महाकुंभ जैसे विराट धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजन में करोड़ों श्रद्धालुओं की उपस्थिति का पूर्वानुमान होने के कारण प्रशासन को हर क्षेत्र में विस्तृत व अत्याधुनिक व्यवस्थाएँ करनी पड़ी। हर मोर्चे पर प्रशासन की मुस्तैदी से ही आधिकारिक रूप से 60 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं का पवित्र संगम में स्नान संभव हो सका। महाकुम्भ का सफल आयोजन इस बात की पुष्टि करता है कि यदि संकल्प शक्ति प्रबल हो तो असंभव से दिखने वाले कार्य भी संभव हो जाते हैं। **महाकुम्भ के सफल आयोजन के निम्नलिखित प्रमुख स्तम्भ रहे -**

अभूतपूर्व अवसंरचना : महाकुंभ के सफल आयोजन हेतु लगभग 4000 हेक्टेयर क्षेत्र में एक अस्थायी टेंट सिटी का निर्माण किया गया था, जिसमें लाखों श्रद्धालुओं के ठहरने हेतु लगभग दो लाख टेंट तथा गंगा और यमुना नदियों पर करीब 30 अस्थाई पोंटून पुल बनाए गए थे। इसके अतिरिक्त महाकुंभ में आने वाले वाहनों की पार्किंग के लिए 1,850 हेक्टेयर जमीन आवंटित की गई एवं श्रद्धालुओं के सुगम आवागमन हेतु 450 किमी से अधिक सड़कों का जाल बिछाया गया। स्वच्छ एवं दिव्य महाकुंभ के दृष्टिगत 1,50,000 शौचालय स्थापित किए गए। साथ ही इस महाकुंभ में 10,000 सफाई कर्मचारी और 500 नदी संरक्षणक तैनात किए गए थे। इन अवसंरचनाओं ने महाकुंभ के सफल आयोजन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता : एक अस्थाई नगर बसाए जाने के निर्णय के साथ ही आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता आवश्यक हो जाती है। इस हेतु मेला प्रशासन द्वारा अन्य संबंधित विभागों से समन्वय स्थापित करते हुए शुद्ध पेयजल, निर्बाध विद्युत आपूर्ति, प्रकाश स्तंभ, संचार व्यवस्था, अस्थाई अस्पताल, बायो टॉयलेट, अग्निशमन इकाई तथा सूचना केंद्र जैसी महत्वपूर्ण आधारभूत सुविधाएं सुनिश्चित की गईं। संगम में प्रवेश

करने वाले प्रत्येक श्रद्धालु के लिए ये सुविधाएँ निःशुल्क अथवा मामूली शुल्क पर उपलब्ध थीं। इससे जहां एक ओर आधारभूत मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकी वहीं प्रशासन स्तर पर विभिन्न विभागों के बीच आपसी समन्वय का एक अनूठा उदाहरण भी देखने को मिला। प्रभावी यातायात प्रबंधन : देश विदेश से संगम आ रहे श्रद्धालुओं को संगम तक सुरक्षित पहुंच प्रदान करने के उद्देश्य से प्रशासन द्वारा विशेष यातायात रूट तय किए गए थे। इस हेतु महाकुंभ के आयोजन से पहले बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन और हवाई अड्डे का विस्तार कर तथा संगम को जोड़ने वाले संपर्क मार्गों को अतिक्रमण मुक्त करते हुए उनका चौड़ीकरण किया गया। शहर के बाहर पार्किंग स्थलों का विकास कर शटल बसों का नियमितसंचालन किया गया ताकि आगंतुकों को संगम तक जाने तथा वापस आने में कोई असुविधा न हो। यातायात नियंत्रण के लिए शहर के प्रत्येक चौराहे पर स्मार्ट सिग्नल और CCTV निगरानी की व्यवस्था की गई। इस प्रकार से इस बार महाकुंभ प्रशासन ने 60 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं को संगम में डुबकी लगवाकर यातायात प्रबंधन में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। नवाचार के साथ डिजिटल महाकुंभ रू इस बार के महाकुंभ को दिव्य, भव्य एवं डिजिटल महाकुंभ के रूप में प्रस्तुत किया गया था। महाकुंभ में शामिल होने वाले श्रद्धालुओं के लिए 'कुंभ ऐप' और वेबसाइट के माध्यम से प्रमुख स्नान की तिथियों, संगम तक पहुंचने के मार्ग, देश के विभिन्न राज्यों से सुगम यात्रा आदि की जानकारी संप्रेषित की गई। इस बार टेंट का आवंटन भी क्यू आर कोड के माध्यम से डिजिटली किया गया तथा किसी भी विषम परिस्थिति के लिए चौबीस घंटे कार्यरत रहने वाला हेल्पलाइन नंबर भी जारी किया गया था। महाकुंभ में भीड़ प्रबंधन एक दुष्कर कार्य था, इसलिए इसमें नवाचार का इस्तमाल तर्कसंगत था। इसके लिए प्रशासन द्वारा बैरियर और रूट मैप के साथ-साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं जी.आई.एस. आधारित भीड़ नियंत्रण प्रणाली भी अपनाई गई। संस्कृति के संरक्षण में नवाचार का उपयोग, पौराणिकता एवं आधुनिकता का एक अद्भुत संगम था। स्वच्छता एवं स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रू स्वच्छता इस महाकुंभ का एक और चर्चित पहलू रहा। वृहद क्षेत्रफल में अस्थाई बसावट के बावजूद प्रशासन ने स्वच्छता के उच्च मानदंड स्थापित किए। स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत हजारों अस्थाई शौचालयों का निर्माण तथा दैनिक साफ सफाई सुनिश्चित की गई। महिलाओं के लिए विशेष पिंक टॉयलेट और स्नानघर बनाए गए। महाकुंभ मेला से प्रतिदिन उत्पादित होने वाले लाखों टन कचरे के निपटान हेतु आधुनिक मशीनों का उपयोग किया गया। मेला क्षेत्र के प्रत्येक सेक्टर में पर्याप्त संख्या में सफाईकर्मी नियोजित किए गए तथा श्रद्धालुओं को भी स्थापित स्वच्छता मानकों के अनुपालन हेतु निर्देशित किया गया। स्वच्छता के साथ-साथ श्रद्धालुओं के स्वास्थ्य की भी चिंता करते हुए प्रत्येक सेक्टर में सभी महत्वपूर्ण सुविधाओं एवं उपकरणों से सुसज्जित अस्थाई अस्पताल निर्मित कर पर्याप्त चिकित्सक व स्वास्थ्यकर्मी नियुक्त किए गए, जहां निःशुल्क जांच, उपचार तथा दवाइयों की उपलब्धता रही। इस तरह से महाकुंभ में श्रद्धालुओं को न केवल एक स्वच्छ वातावरण प्रदान किया गया बल्कि उनके स्वास्थ्य का भी भरपूर ध्यान रखा गया।

अचूक सुरक्षा व्यवस्था : बड़ी संख्या में संगम आ रहे श्रद्धालुओं को स्नान संपन्न कराकर सुरक्षित वापस भेजना एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक जिम्मेदारी थी। प्रशासन ने इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया तथा सुरक्षा हेतु पारंपरिक एवं अत्याधुनिक दोनों प्रकार की पद्धतियों को अपनाया। इस हेतु प्रतिदिन हजारों पुलिस, अर्धसैनिक बल तथा

स्वयं सेवकों की तैनाती की गई। सीसीटीवी और ड्रोन जैसे उन्नत तकनीक का इस्तेमाल कर चप्पे-चप्पे की निगरानी सुनिश्चित की गई। कंट्रोल रूम तथा कमांड रूम के द्वारा पल पल का अपडेट लिया गया ताकि किसी भी प्रकार के भगदड़ अथवा आपात स्थिति में प्रशासन के सभी अंगों से जरूरी संवाद स्थापित किया जा सके। इस प्रकार, प्रशासन द्वारा हर उपलब्ध विकल्प का इस्तेमाल कर सुरक्षित महाकुम्भ सुनिश्चित किया गया।

सनातन मूल्यों की अनूठी प्रस्तुति : महाकुम्भ मेला क्षेत्र में देश और विदेश के प्रमुख संतों के द्वारा प्रस्तुत सनातन संस्कृति से जुड़ी कथाओं, प्रवचनों तथा संवादों ने आम जनमानस को अपनी संस्कृति के प्रति गौरवान्वित होने का एक अवसर प्रदान किया। साधु संतों के प्रवचन पंडाल तथा कथा शिविर, श्रोताओं से सदैव भरे रहे। जीवनोपयोगी कथाओं के साथ-साथ इन शिविरों में योग, ध्यान तथा निःशुल्क चिकित्सा सेवाओं की उपलब्धता ने सनातन संस्कृति की उदारता, सेवा भावना तथा वसुधैव कुटुम्बकम् के दर्शन को उद्घाटित किया। किसी भी सांस्कृतिक समागम का निहितार्थ उसके द्वारा आम जनमानस के चित्त और व्यवहार में लाए गए सकारात्मक परिवर्तनों से ही आकलित किया जा सकता है। महाकुम्भ में संपन्न किये गये पारंपरिक अनुष्ठानों, प्रस्तुत सांस्कृतिक उत्सवों तथा विभिन्न क्षेत्र विशेष की लोक कलाओं से मनुष्य के धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक पक्षों के सह-अस्तित्व की भी झलक मिली।

सामाजिक-आर्थिक प्रगति का सन्देश : महाकुम्भ का आयोजन दर्शाता है कि आस्था और श्रद्धा के माध्यम से समाज में गहन एकजुटता लाई जा सकती है। देश विदेश के विभिन्न क्षेत्रों, भाषाओं और जातियों से आए श्रद्धालुओं द्वारा सनातन की पूण्य धारा में समेकित हो जाना सामाजिक समरसता का संदेश भी है। भौतिक जीवन के प्रति झुकाव रखने वाले समाज में साधु-संतों की उपस्थिति न केवल समाज को एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है बल्कि नैतिक प्रेरणा भी देती है। सामाजिक समरसता के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर सृजित विभिन्न व्यावसायिक गतिविधियों यथा व्यापार, परिवहन, पर्यटन आदि ने महाकुम्भ के आर्थिक पक्ष को भी प्रमुखता से उद्घाटित किया। देश के अलग अलग क्षेत्रों से अपने उत्पाद लेकर प्रयागराज पहुंचे व्यवसायियों के लिए महाकुम्भ ने एक उत्तम अवसर प्रदान किया। सरकारी आंकड़ों के अनुसार इस महाकुम्भ पर 7.5 हजार करोड़ का व्यय किया गया था जिसके सापेक्ष प्रदेश की अर्थव्यवस्था को 3.5 लाख करोड़ का लाभ होने का अनुमान है। आंकड़ों से स्पष्ट है कि महाकुम्भ, सामाजिक चेतना विकसित करने के साथ-साथ प्रदेश और राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के लिए भी अत्यंत लाभकारी रहा।

निष्कर्षतः मानव जीवन में प्रत्येक धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजन के अपने निहितार्थ हैं। ठीक उसी प्रकार संगम की पवित्र धारा में डुबकी लगाना भी एक सांकेतिक प्रक्रिया है। इसे केवल समुद्र मंथन और अमृत कलश की पौराणिक कथाओं तक सिमित रखना इसके उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं है। इसका मूल उद्देश्य तो समुद्र मंथन के संकेत को समझकर आत्म मंथन करना है, ताकि इससे उत्पन्न हलाहलों (अवगुणों) का साक्षात्कार कर अमृत (सद्गुणों) की प्राप्ति की जा सके। उम्मीद है महाकुम्भ का आयोजन हमें आत्ममंथन कर अमृत रूपी सद्गुणों की प्राप्ति का अवसर प्रदान करता रहेगा।

मैं समाज हूँ



रामाश्रय राय
सहायक पर्यवेक्षक

मैं समाज हूँ! मैं आपका ही अंग हूँ, मैं फूल हूँ तो आप सभी फूल की खुशबू हैं, आप शरीर हैं तो मैं उस शरीर का अंग हूँ। लेकिन आज मैं इसलिये आपलोगों से बात कर रहा हूँ कि आज मैं महसूस कर रहा हूँ कि हम एक-दूसरे के पूरक होते हुए भी अब ऐसा प्रतीत होने लगा है कि हम नदी के दो किनारों की तरह दिखने लगे हैं, जो चलते तो एक साथ ही हैं, मगर मिलते कभी भी नहीं। और मैं महसूस कर रहा हूँ कि नदी की पाट और चौड़ी ही होती जा रही है, इसे देखकर कभी कभी तो मेरा मन सशक्त होने लगता है कि क्या हम नदी से समुद्र के आकार की ओर तो अग्रसर नहीं हो रहे हैं।

इस सृष्टि में भगवान ने आपकी (मनुष्य) रचना की हैं, आप ईश्वर की सबसे प्रिय रचना हैं। लेकिन मेरी रचना तो आपसभी ने मिलकर की है, मेरा तो अस्तित्व ही आपलोगों से है। वैसे तो अपनी सृष्टि से सृष्टि कर्ता को अपार लगाव होता है, तो आज मुझसे दूरी क्यों? मैं दुःखी और आर्त भाव से आप सभी से प्रश्न कर रहा हूँ।

आपलोग ने मुझे बनाने के बाद ही सामाजिक प्राणी की उपमा प्राप्त की है, इस शब्द से तो आपकी ही शोभा बढ़ती है तथा एकता का भाव भी प्रदर्शित होता है। ऐसा भी नहीं है कि मेरा सृजन इसी काल खंड में हुआ है। मैं लगभग आपकी उत्पत्ति के कुछ ही पश्चात के बाद का ही हूँ, जब आपलोगों ने अपनी सभ्यता के कई विकास यात्राओं के साथ ही मुझे एक आकार दिया। ये आकार आपने अपनी सभ्यता और संस्कृति के सपनों को साकार करने के साथ साथ ही अपने भौतिक जीवन को क्रमबद्ध तथा नियमबद्ध करने के लिए दिया, जिससे कि आपका जीवन सहज, सरल तथा प्रेममय हो। आपलोग अपने इस उद्देश्य में सफल भी हुए।

मुझे मेरा वह स्वर्णिम काल भी याद है जब, सतयुग, त्रेता तथा द्वापर में लोग मुझसे ऐसा बंधे होते थे कि मेरे द्वारा किये गए किसी भी निर्णय को सहर्ष स्वीकार कर लेते थे। अरे उन सुनहरे यादों की बातें तो छोड़ो, इस कलयुग में भी और वह भी लगभग छः दशक पूर्व तक भी लोगों ने मुझे बहुत मान-सम्मान भी दिया। यहां तक कि मुझे एक विज्ञान का नाम भी इधर के ही काल में मिला (सामाजिक विज्ञान) तथा उसको शिक्षा प्रणाली में भी शामिल कर लिया गया। परन्तु इसके साथ एक शिक्षा में अकल्पनीय गिरावट हुई, उसका नाम नैतिक शिक्षा है।

आप लोगो की इस नैतिकता में आई गिरावट ने मुझे भी प्रभावित किया, मुझमें भी समय व्यतीत होने के साथ ही कई कुरीतियां भी आईं। ये स्वाभाविक भी था क्योंकि मैं तो आपका प्रतिबिम्ब मात्र ही तो हूँ, जब शरीर की वास्तविक रचना में ही परिवर्तन होगा तो उसके प्रतिबिम्ब में भी तो उसका प्रभाव दिखेगा। समय समय पर आप लोगो ने चैतन्यता का परिचय देते हुए, मेरे में आई कई प्रकार की कुरीतियों को दूर भी किया। लेकिन अफसोस! दशानन की शीश की भांति दूसरी अन्य प्रकार की नई कमियां पुरानी का स्थान ग्रहण करती गयीं।

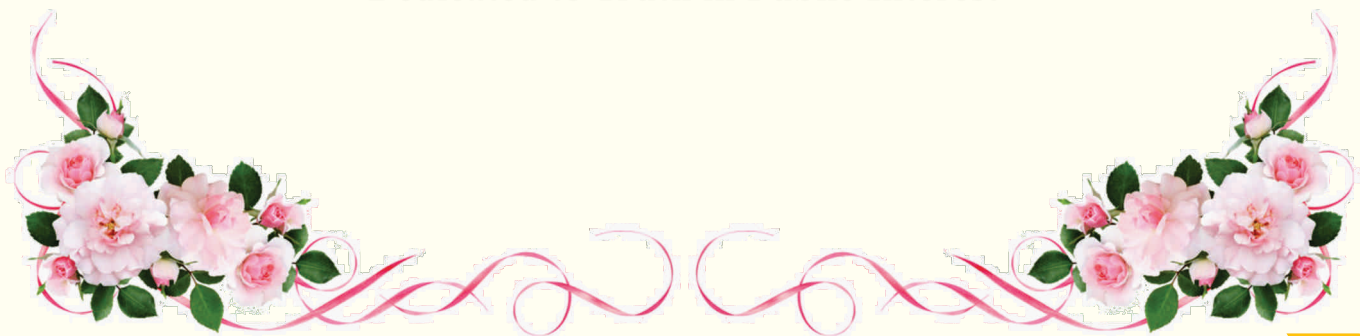
वर्तमान समय में हमदोनों में बहुत कमी आयी है, मेरी कमी यह है कि मैं भी अब पूरी तरह आप लोगो के प्रति

निष्पक्ष नहीं रहा, मेरा भी निर्णय आप की सामर्थ्य शक्ति से प्रभावित होने लगा। मैं भी अब चेहरों को देखकर निर्णय करने लगा। लेकिन इसके मूल में भी आप सभी ही हैं, आपलोग ये भूल गए कि वो कोई भी संस्था, जिसकी नींव ही एक दूसरे के त्याग और समर्पण पर टिकी है, उससे केवल प्राप्त करने की ही सोचने लगे। आप ये भूल गए कि आप अपने जरूरत का सहयोग तभी हमसे प्राप्त करते हैं, जब मुझे कोई ये सामर्थ्य शक्ति प्रदान किया होता है। अरे मैं तो उस उपवन की तरह हूँ, जिसमें आप मे से ही कोई मेरी भूमि को अपने सामर्थ्य से उर्वरा बनाई तो कोई स्नेह के जल से सींचा, तथा कोई प्रेम का बीज रोपा जिससे मेरे इस बगिया में नाना प्रकार के सामर्थ्यवान, शक्ति रूपी फूल, फल खिलने लगे जो समय समय पर आपकी जरूरत रूपी क्षुधा को तृप्ति करते हैं।

लेकिन आप मेरे इस उपवन से समय समय पर अपनी जरूरतरूपी भूख मिटाने के लिए मेरे सामर्थ्य, शक्ति रूप फल पाकर अपनी वर्तमान भूख तो मिटा ली, परन्तु ये भारी भूल करते रहे कि कोई भी मेरे इस उपवन में अपने से त्याग तथा प्रेम एवं समर्पण रूपी एक भी पेड़-पौधे नहीं लगाया, जिससे कि मैं अब निर्जनता की तरफ बढ़ रहा हूँ, मैं अब चाहते हुए भी पहले की तरह आपके साथ व्यवहार नहीं कर पा रहा हूँ।

इसलिये मैं आपलोगो से निवेदन कर रहा हूँ कि आइये मेरे इस निर्जन भूमि को आप एक बार पुनः अपने वही स्वाभाविक गुणों- प्रेम, त्याग, करुणा तथा समर्पण रूपी बगीचे से परिपूर्ण कीजिये तथा समय समय पर मुझसे भी मेरे सामर्थ्य, शक्ति रूपी सहयोग लेकर अपने जीवन को सफल तथा सार्थक बनाये, जिससे कि मेरे भी नाम (समाज) की सार्थकता बनी रहे, तथा हम एक दूसरे की मर्यादा भी बची रहे।

SUPREME AUDIT INSTITUTE OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



“माँ... “अजनबी शहर”



आशुतोष कुमार
स्टेनोग्राफर ग्रेड-11

माँ, कभी कभी लगता है..“वक्त”, अपने आप में एक कहानी है, जिसमें कुछ हमारे मन मुताबिक पात्र होते हैं तो कुछ हमारे मन के विपरीत, लेकिन अक्सर कहानियों में अच्छा ही होता है ये हम सभी जानते हैं...माँ... तमाम यादों को समेटते हुए, हर क्षण में खुशियाँ ढूँढ़ते हुए “एक वर्ष” और बीत गया.. कहते हैं न माँ “जॉब एक ऐसा खाब जिसे सिर्फ मध्यम वर्ग का न ही सिर्फ एक विद्यार्थी देखता है बल्कि उसके साथ उसका पूरा परिवार उसे पूरा करने में जी जान लगा देता है...!.. मेरी हर सफलता मुझे खुद गौरवान्वित करती है, खुद में एक विश्वास दिलाती है और बेहतर से बेहतरीन के लिए प्रेरित करती है

!..माँ..ऐसे ही एक दिन साठ बरस निकल जायेंगे और लगेगा कल ही की तो बात थी...!...पिछले वर्ष जो भी अनुभव था आज भी उसी पथ पर हूँ, इस साल में बहुत अच्छे लोग मिले, नये दोस्त बने, बहुत कुछ सीखने को मिला, जीवन में जिम्मेदारियाँ, पापा कैसे उठाते हैं थोड़ा ही सही पर कुछ हद तक अनुभव भी किया, काम का आनंद लिया, कभी काम को अपने आगे आने नहीं दिया शायद अपने आप में मेरे लिए यही बहुत हैं, आगे भी ईमानदारी से ये सफर यूँ ही चलता रहेगा। माँ आज लेख जो मैं लिख रहा हूँ तुम महसूस करना मुझे, माँ, आज पराये शहर में हूँ, दूर कभी नहीं रहा तुमसे इसलिए भाग- भाग के घर आने की फिराक में रहता हूँ, माना नौकरी है करनी पड़ेगी लेकिन याद बहुत आती है तुम्हारी । याद है ना उस दिन (30th August) जब निकला था घर से कैसे रो रहा था आज भी वैसे ही लिखते वक्त.....

यहाँ वहाँ जैसा शहर नहीं है माँ, शायद यहाँ के लोगों से मैं जुड़ नहीं पा रहा या मैं उन्हें पसंद नहीं आ रहा, कसम से कोशिश पूरी करता हूँ । तुम्हें तो पता ही होगा ना की बचपन से ही मैं नये लोगों से नहीं कह पाता कुछ भी, नहीं खुला हूँ उतना, आज तक ना मैंने तुम्हें और ना ही पापा को गले लगा पाया ये तो लोग फिर भी कुछ दिनों से जुड़े हैं, रोज शाम को थक हार के आना खाना बनाना और बनाके सो जाना और फिर वापिस से उन्हीं नये लोग से जुड़ने की कोशिश करना, इन्हें कुछ महीनों से करते करते अब थक सा गया हूँ माँ । दोस्त तो बहुत बन गए हैं माँ, कुछ पुराने भी हैं लेकिन न जाने क्यों कुछ तो है जो छूट रहा जो नहीं जुड़ पा रहा। तुम्हें पता है माँ !, मैं टिफिन नहीं ले जाता लेकिन फिर भी भूखा नहीं रहता, जानते हो क्यों.. क्योंकि लोग प्यार बहुत करते हैं भूखा रहने ही नहीं देते लेकिन फिर भी कुछ तो है जो छूट रहा माँ। सफर कुछ थम सा गया है माँ इस 10×10 के कमरे से वहाँ के 10×10 के कमरे में बहुत अंतर है माँ... एक समय का खाना खाते वक्त दूसरे वक्त का सोचना पड़ता है क्या बनाऊँ, तुम इतना सब कैसे कर लेती हो माँ...? दूर रहके रिश्ते और समझ आने लगे माँ.. जब कभी चिल्ला दूँ तुम्हारे ऊपर ना तो ये समझना की आज बहुत याद आ रही तुम्हारी... अभी तो मैं छोटा बच्चा था ना, इतनी जल्दी नहीं जाना था तुमसे दूर । अपने लोगों की हसीं से लेकर दोस्तों के प्यार तक, घर के सुकून से लेकर अपने शहर की गलियों तक, सब बहुत याद आते हैं माँ...।

माँ बीते वर्षों की बहुत कहानियाँ हैं सुनाने को...लेकिन....अब नहीं लिखना.. लड़के भी घर छोड़ते हैं...!..

इथेनॉल आधारित ईंधन: उपयोग और प्रभाव



नीरज कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

आज के युग में ऊर्जा संकट और पर्यावरण प्रदूषण के बीच वैकल्पिक ईंधनों की खोज एक आवश्यकता बन चुकी है। इथेनॉल, जो गन्ना, मक्का और अन्य कृषि अवशेषों से प्राप्त होता है, एक नवीकरणीय जैव ईंधन के रूप में उभर रहा है। भारत में इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल (ई20) का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है, जो पेट्रोल में 20: इथेनॉल मिलाकर बनाया जाता है। सितंबर 2025 तक सरकार ने ई20 को पूरे देश में लागू कर दिया है, जो मूल 2030 के लक्ष्य से पांच वर्ष पहले है। यह न केवल तेल आयात पर निर्भरता कम करता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और किसानों की आय में भी वृद्धि करता है। लेकिन इसके साथ ही वाहन मालिकों की शिकायतें, जैसे माइलेज में कमी और इंजन क्षति, तथा खाद्य सुरक्षा की चुनौतियां भी जुड़ी हैं।

इथेनॉल एक रासायनिक यौगिक है, जो किण्वन प्रक्रिया से बनाया जाता है। मुख्य रूप से गन्ना रस, मक्का और चावल से उत्पादित होता है। भारत में गन्ना प्रमुख स्रोत है, जो देश की 70: से अधिक इथेनॉल आपूर्ति करता है। इथेनॉल को पेट्रोल में मिलाकर ई10 (10: इथेनॉल), ई15 या ई20 बनाया जाता है। इसका उपयोग मुख्यतः परिवहन क्षेत्र में होता है — कारों, ट्रकों, मोटरसाइकिलों और यहां तक कि विमानों के ईंधन में। ब्राजील जैसे देशों में 90: वाहन इथेनॉल पर चलते हैं, जबकि अमेरिका में मकई आधारित इथेनॉल प्रचलित है। भारत में 2014 से इथेनॉल ब्लेंडिंग प्रोग्राम (ईबीपी) चल रहा है, जिसके तहत 2025 तक 20: ब्लेंडिंग का लक्ष्य रखा गया था। जून 2025 तक उत्पादन 661 करोड़ लीटर पहुंच गया, जो 2014 के 38 करोड़ लीटर से 17 गुना अधिक है।

इथेनॉल आधारित ईंधन के उपयोग कई हैं। सबसे प्रमुख है पेट्रोल में ब्लेंडिंग, जो दहन को बेहतर बनाता है। इथेनॉल की ऑक्टेन रेटिंग 108-110 है, जो पेट्रोल की 87-93 से कहीं अधिक है। इससे इंजन की शक्ति बढ़ती है और ईंधन प्रणाली साफ रहती है। भारत में ई20 को अप्रैल 2025 से सभी 90,000 पेट्रोल पंपों पर उपलब्ध कराया गया है। इसके अलावा, इथेनॉल का उपयोग विमानन ईंधन (सस्टेनेबल एविएशन फ्यूल) और औद्योगिक प्रक्रियाओं में भी हो रहा है।

इथेनॉल के सकारात्मक प्रभाव अनेक हैं। पर्यावरणीय दृष्टि से, यह ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन को कम करता है। नीति आयोग के अध्ययन के अनुसार, गन्ना आधारित इथेनॉल पेट्रोल की तुलना में 65: और मक्का आधारित 50: कम कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन करता है। 2014 से 2025 तक 69.8 मिलियन टन सीओ₂ उत्सर्जन कम हुआ, जो 30 करोड़ पेड़ लगाने के बराबर है। इसके उत्सर्जन में कार्बन मोनोऑक्साइड 30: और विषैले प्रदूषक 13-21: कम होते हैं, जिससे शहरी वायु गुणवत्ता सुधरती है। आर्थिक रूप से, यह विदेशी मुद्रा बचाता है। परिणामस्वरूप कच्चे तेल के आयात पर निर्भरता घटी है। इस प्रकार से किसानों की आय में भारी वृद्धि हुई है, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत

ऊर्जा सुरक्षा के लिए यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत तीसरा सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोक्ता है और 80: तेल आयात करता है। ई20 से ईंधन कीमतें स्थिर रहती हैं और ऑक्टेन रेटिंग बढ़ने से आधुनिक इंजनों में त्वरण बेहतर होता है। हालांकि, इथेनॉल के नकारात्मक प्रभाव भी कम नहीं हैं। सबसे बड़ी शिकायत ईंधन दक्षता की कमी है। इथेनॉल में पेट्रोल की तुलना में 67: कम ऊर्जा होती है, इसलिए ई20 से माइलेज 3- 4: कम हो जाता है। इथेनॉल जल अवशोषक होता है, जो जंग पैदा करता है और ईंधन टैंक में जल-विभाजन का कारण बनता है। पुराने वाहनों के लिए ई20 संगत नहीं है, जिससे मरम्मत लागत बढ़ी है। खाद्य सुरक्षा पर असर पड़ रहा है। इथेनॉल उत्पादन के लिए गन्ना, मक्का और चावल का उपयोग बढ़ा, जिससे 2024 में पहली बार मक्का आयात करना पड़ा। पोल्ट्री क्षेत्र प्रभावित हुआ, क्योंकि चारा महंगा हो गया। जल-गहन फसलें जैसे गन्ना मिट्टी क्षरण और जल संकट बढ़ा रही हैं। उत्पादन में उर्वरक और भूमि का अधिक उपयोग जैव विविधता को नुकसान पहुंचा सकता है। आर्थिक रूप से, सब्सिडी बाजार विकृति पैदा करती है और फसल मूल्यों में उतार-चढ़ाव ईंधन कीमतें प्रभावित करता है।

इन चुनौतियों के बावजूद, समाधान संभव हैं। सरकार ने नए वाहनों को ई20 अनुरूप बनाने का आदेश दिया है, और एसआईएम (सोसायटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैनुफैक्चरर्स) ने परीक्षणों में कोई गंभीर क्षति न पाए जाने का दावा किया है। बीमा कंपनियां ई20 से क्षति को कवर करती हैं, जैसा कि पेट्रोलियम मंत्रालय ने स्पष्ट किया। दूसरी पीढ़ी के जैव ईंधन पर शोध से खाद्य बनाम ईंधन विवाद कम हो सकता है। इथेनॉल आधारित ईंधन भारत की ऊर्जा यात्रा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और किसानों को लाभ पहुंचाता है, लेकिन उपभोक्ता चिंताओं को संबोधित करना होगा। यदि सतत उत्पादन और वाहन अनुकूलन पर ध्यान दिया जाए, तो यह स्वच्छ ऊर्जा क्रांति ला सकता है।



देश की एकता अखंडता



सदानन्द कुमार चटर्जी
(सेवानिवृत्त वरिष्ठ सम्प्रेक्षक)

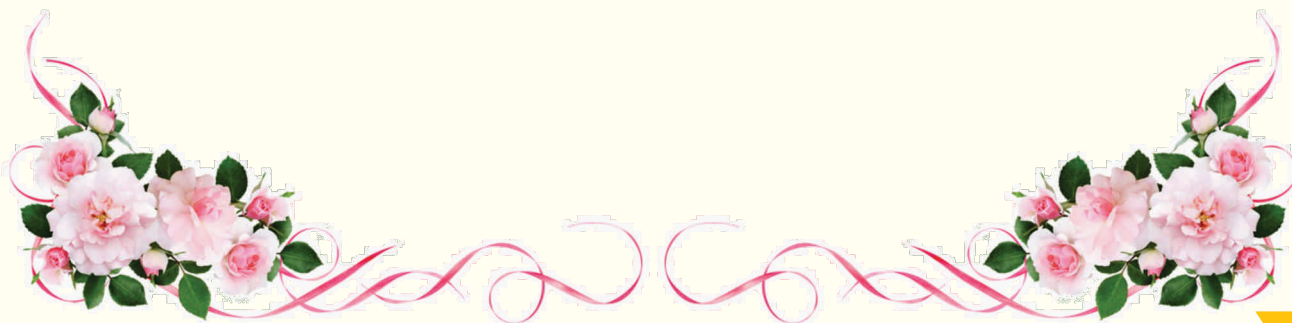
आज हमें देश की एकता अखंडता को कायम रखने के लिये जन मानस के अन्दर हिंदी भाषा का जानना अति आवश्यक है। राष्ट्र भाषा के बिना किसी देश का विकास सम्भव नहीं है भारत वर्ष में अनेको संस्कृतिया भाषाएं पल्लवित एवं पुष्पित हुई हैं। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान पत्रकारिता के जनक डॉक्टर पंडित सुन्दर लाल एवं नित्यानंद चटर्जी ने जन मानस के अन्दर विचारों का आदान प्रदान करने के लिये हिंदी भाषा को चुना था ऐसे तो जन जन को भाव से जोड़ने के कारण ही हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है हमें जन मानस को एक करना होगा भाषा एवं भाव तो होते हैं भावना की अभिव्यक्ति आपसी सामंजस्य ही राष्ट्रीय एकता अखंडता का प्रतीक है।

14 सितम्बर सन् 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया था कि हिंदी ही भारत की राजभाषा होगी सन् 1953 से सम्पूर्ण भारत वर्ष में हिंदी दिवस मनाया जाता है संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास एवं प्रचार के लिए आवश्यक प्रयास का उपबंध किया गया है वैसे तो हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिल चुका है लेकिन सामाजिक तौर पर आज भी लोगो के अन्दर हिंदी का ज्ञान अधूरा है। महात्मा गाँधी जी ने तो यहाँ तक कहा था कि बिना हिंदी भाषा के राष्ट्र का विकास असम्भव है जबकि राजा राम मोहन राय ने हिंदी को काफी प्रोत्साहन दिया था आज आवश्यकता है विसंगतियों को दूर करने की इससे जन मानस पूरे भारत वर्ष में जन चेतना, प्रचार प्रसार फैलाने की ताकि हिंदी भाषा को जनता राष्ट्र भाषा के रूप में जाने समझे तभी भावों की अभिव्यक्ति आसानी से होगी एक जन मानस दूसरे जन मानस से हिंदी के सरस मीठे बोल बोलने लगेंगे तो निश्चय ही देश की एकता अखंडता में हमारी हिंदी भाषा देश की एकता के उस सूत्र में बाँधने ये सहायक सिद्ध होगी। जय भारत देश हमारा हिन्दुस्तान ।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest



पर्यावरण : हमारी जिम्मेदारी



विनय कुमार गुप्ता
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

हमारा पर्यावरण वह आवरण है जो हमें जीवन देता है। यह न केवल हवा, पानी और मिट्टी से बना है, बल्कि इसमें पेड़-पौधे, जीव-जंतु और वह सब कुछ शामिल है जो हमारे आसपास मौजूद है। सदियों से, मनुष्य ने प्रकृति के साथ एक गहरा और अटूट संबंध बनाए रखा है। हालांकि, आधुनिक जीवनशैली और विकास की अंधाधुंध दौड़ ने इस नाजुक संतुलन को बिगाड़ दिया है। आज, हम कई गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। प्रदूषण एक बड़ी समस्या है, चाहे वह हवा का हो, पानी का हो या मिट्टी का। कारखानों और वाहनों से निकलने वाला धुआँ हमारी हवा को जहरीला बना रहा है, नदियों और तालाबों में कचरा और रासायनिक पदार्थ मिलकर उन्हें दूषित कर रहे हैं, और प्लास्टिक का बढ़ता उपयोग हमारी धरती को बंजर बना रहा है।

वनों की कटाई एक और चिंताजनक विषय है। पेड़ न केवल हमें ऑक्सीजन देते हैं, बल्कि वे मिट्टी के कटाव को रोकने और वर्षा चक्र को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अंधाधुंध पेड़ों की कटाई से वन्यजीवों के आवास नष्ट हो रहे हैं और जलवायु परिवर्तन का खतरा बढ़ रहा है। जलवायु परिवर्तन, जिसमें तापमान में वृद्धि, अनियमित वर्षा और प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति शामिल है, हमारे पर्यावरण के लिए एक गंभीर खतरा है। यह हमारे कृषि, जल संसाधन और समग्र जीवनशैली पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि पर्यावरण की रक्षा करना केवल सरकार या कुछ संगठनों की जिम्मेदारी नहीं है। यह हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है।

हम प्लास्टिक का उपयोग कम करके, कचरे को सही तरीके से अलग करके, ऊर्जा की बचत करके, और अधिक पेड़ लगाकर पर्यावरण की रक्षा में अपना योगदान दे सकते हैं। हमें यह भी समझना होगा कि पर्यावरण और विकास एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। हम स्थायी विकास के रास्ते अपनाकर अपनी आर्थिक और सामाजिक जरूरतों को पूरा कर सकते हैं, बिना पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग, जैसे कि सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा, प्रदूषण को कम करने और ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ाने का एक उत्कृष्ट तरीका है। कई ऐतिहासिक शहर अपनी सांस्कृतिक धरोहरों के साथ-साथ अपनी प्राकृतिक सुंदरता को बनाए रखने के लिए प्रयास कर रहे हैं। हमें अपने पार्कों, उद्यानों और जलाशयों को संरक्षित करना होगा ताकि शहर के निवासियों को स्वच्छ हवा और शांत वातावरण मिल सके।

पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता और शिक्षा महत्वपूर्ण है। हमें अगली पीढ़ी को पर्यावरण के महत्व और इसकी देखभाल के तरीकों के बारे में शिक्षित करना होगा। जब हम सब मिलकर प्रयास करेंगे, तभी हम एक स्वच्छ, स्वस्थ और टिकाऊ भविष्य का निर्माण कर पाएंगे। हम सब को मिलकर इस महत्वपूर्ण कार्य में अपना योगदान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त, हमें अपनी जीवनशैली में भी बदलाव लाने की आवश्यकता है। अनावश्यक उपभोग को कम करना, पुनर्चक्रण को बढ़ावा देना और प्राकृतिक संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग करना पर्यावरण संरक्षण के महत्वपूर्ण पहलू हैं। छोटे-छोटे बदलाव, जैसे कि बिजली के उपकरणों को बंद करना जब वे उपयोग में न हों, पानी की

बचत करना, और स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता देना, भी एक बड़ा अंतर ला सकते हैं।

शहरों की घनी आबादी को देखते हुए, ठोस कचरा प्रबंधन एक विशेष चुनौती है। हमें कचरे को स्रोत पर ही अलग करने और पुनर्चक्रण योग्य सामग्री को संसाधित करने के लिए प्रभावी प्रणालियाँ विकसित करने की आवश्यकता है। कंपोस्टिंग जैविक कचरे को उपयोगी खाद में बदलने का एक उत्कृष्ट तरीका है। हमें यह भी याद रखना होगा कि पर्यावरण की रक्षा केवल एक तात्कालिक आवश्यकता नहीं है, बल्कि यह एक दीर्घकालिक निवेश है। एक स्वस्थ पर्यावरण हमारी अर्थव्यवस्था, हमारे स्वास्थ्य और हमारी भावी पीढ़ियों की भलाई के लिए आवश्यक है। हम सब को मिलकर एक हरित और स्वस्थ भारत बनाने की दिशा में काम करना होगा। यह हमारी साझा विरासत है, और हमें इसे संजो कर रखना है। इसके अलावा, हमें वायु गुणवत्ता में सुधार पर ध्यान देना होगा। सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना, इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को प्रोत्साहित करना और वृक्षारोपण अभियान चलाना, हवा को स्वच्छ बनाने में मदद कर सकता है। औद्योगिक इकाइयों को उत्सर्जन मानकों का सख्ती से पालन करना होगा।

जल संरक्षण भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। हमें वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देना होगा और भूजल के अत्यधिक दोहन को रोकना होगा। नदियों और तालाबों को प्रदूषण से बचाने के लिए कड़े कदम उठाने होंगे। जल का विवेकपूर्ण उपयोग हमारी भविष्य की जरूरतों को सुरक्षित करेगा। पर्यावरण संरक्षण के लिए सामुदायिक भागीदारी आवश्यक है। स्थानीय नागरिकों, गैर-सरकारी संगठनों और शैक्षणिक संस्थानों को जागरूकता बढ़ाने और जमीनी स्तर पर कार्रवाई करने के लिए मिलकर काम करना होगा। पर्यावरण संबंधी कानूनों और नियमों का प्रभावी कार्यान्वयन भी महत्वपूर्ण है। हमें प्रकृति के प्रति सम्मान और करुणा का भाव विकसित करना होगा। हम इस ग्रह के एकमात्र निवासी नहीं हैं; हम अनगिनत अन्य प्रजातियों के साथ इसे साझा करते हैं। उनकी रक्षा करना भी हमारी जिम्मेदारी है। एक संतुलित और सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व ही एक स्थायी भविष्य की कुंजी है। हम सब को मिलकर प्रकृति के साथ सद्भाव में रहने का प्रयास करना चाहिए।

याद रखें, पर्यावरण की रक्षा करना कोई बोझ नहीं, बल्कि एक निवेश है। यह हमारी सेहत, हमारी अर्थव्यवस्था और हमारी आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित करता है। एक स्वस्थ पर्यावरण हमें स्वच्छ हवा, शुद्ध पानी और उपजाऊ मिट्टी प्रदान करता है, जो जीवन के लिए आवश्यक हैं। कई ऐतिहासिक और सांस्कृतिक शहरों की पहचान इसकी प्राकृतिक सुंदरता से जुड़ी हुई है। हमें अपने हरे-भरे पार्कों, शांत झीलों और ऐतिहासिक बागों को सहेज कर रखना होगा ताकि शहर की आत्मा बनी रहे। यह न केवल हमारे लिए बल्कि आने वाले पर्यटकों के लिए भी महत्वपूर्ण है। हम सब को मिलकर एक ऐसा भविष्य बनाने का संकल्प लेना होगा जहाँ विकास और पर्यावरण एक साथ चल सकें। जहाँ हम अपनी जरूरतों को पूरा करते हुए प्रकृति का सम्मान करें और उसे संरक्षित करें। यही सच्ची प्रगति है और यही हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए सबसे बड़ा उपहार होगा।

यह हमारी धरती है, हमारा घर है, और इसकी देखभाल करना हम सबका परम कर्तव्य है। देश के कई शहर अपनी विविधता और सामंजस्य के लिए जाने जाते हैं। इसी भावना से हमें अपने पर्यावरण के प्रति भी सहिष्णु और

समावेशी दृष्टिकोण अपनाना होगा। हमें यह भी विचार करना होगा कि हमारी आधुनिक जीवनशैली का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। क्या हम ऊर्जा का बुद्धिमानी से उपयोग कर रहे हैं? क्या हम कचरा कम कर सकते हैं? क्या हम अधिक टिकाऊ विकल्पों को अपना सकते हैं? इन सवालों पर विचार करना और सकारात्मक बदलाव लाना महत्वपूर्ण है। शैक्षिक संस्थानों को भी पर्यावरण संरक्षण के महत्व को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। छात्रों को पर्यावरण के मुद्दों के बारे में शिक्षित करना और उन्हें पर्यावरण-अनुकूल आदतों को अपनाने के लिए प्रेरित करना भविष्य के लिए एक जिम्मेदार नागरिक तैयार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। आइए, हम सब मिलकर एक ऐसा देश बनाएं जो न केवल अपनी ऐतिहासिक विरासतों के लिए जाना जाए, बल्कि अपने स्वच्छ और हरे-भरे पर्यावरण के लिए भी पहचाना जाए। यह हमारा सामूहिक सपना होना चाहिए, और इसे साकार करने के लिए हमें मिलकर काम करना होगा।

“राजभाषा का प्रयोग करें, राष्ट्र निर्माण में सहयोग करें”।

प्रेरक कहानी

एक बार तथागत बुद्ध अपने शिष्यों के साथ जंगल की ओर घूमने जा रहे थे। रास्ते में कुछ गड्डे खुदे थे और उनके अन्दर नर कंकाल पड़े थे। बुद्ध के शिष्य ने (तथागत) से पूछा, “तथागत गुरु जी ” इन गड्डों में ये नर कंकाल क्यों पड़े हैं। तथागत बुद्ध ने कहा इन लोगों को प्यास लगी थी। लोगों ने कुआं खोदना चाहा और ये लोग अलग-अलग कुआं खोदने में लग गये और कुआं खोदते खोदते ही मर गये और न तो उन्हें पानी मिला न ही, उनकी प्यास बुझी और उनकी मौत भी हो गयी। यदि ये लोग एक साथ मिलकर एक कुआं खोदते तो कुआं भी खुदता शक्ति भी कम लगती और इनकी प्यास भी बुझती और जिंद भी रहते। इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि एकजुटता हमें सफलता की ओर ले जाती है।



ललित कुमार सेन
लेखापरीक्षक

NOKAI 1310

ये उन दिनों की बात है जब मोबाइल फोन रखना पिटबुल कुत्ते को पालने की तरह था मतलब ये भी स्टेटस सिंबल के चंद प्रतिमानों में एक था। अब आजकल की जेनरेशन क्या जाने? पहली जद्दोजहद तो सिम पाने की हुआ करती थी, प्रथमतः तो कोई बढ़िया जुगाड़ लगाओ कि सिम मिल जाये वर्ना लाइन में लगो, वक्त-बेवक्त पुलिस की लाठी खाने के खतरे से भी आशंकित रहो और क्या पता, कब ये आसन्न आशंका दुःखद सच में भी तब्दील हो जाये और अगर सिम पाने में मुख्तलिफ वजूहात से नाकामी हासिल हो तो हस्बे-मामूल धर्मपत्नी की तीखी-तरेरती नजर, जिसका सीधा और सुस्पष्ट तर्जुमा होता है-तुम तो वैसे भी किसी काम के नहीं हो! का कठिन सामना। खैर, जब सिम मिल गया तो हैंडसेट लेने की दुश्वारियों का सामने मुंह बाएं खड़े रहना लाजमी ही था। जो हैंडसेट पसंद आये उसकी कीमत बजट से बाहर और जो बजट में है, वो पसंद ही क्यों आ जाये! इस भयानक असंतुलन को साधने की साधना में सफल होने के उपरांत, जिसकी किसी ने कोई प्रशंसा नहीं की, मैंने NOKIA 1310 हैंडसेट का मालिकाना हक हासिल कर ही लिया और अब क्या, सृष्टि पूरी तरह मेरे कब्जे में थी, पूरी ठसक और जोरदारी से फोन और उसके फीचर्स का दोहन करने में मेरी काबिलियत अपने शबाब पर थी। फोन का मालिक होने पर मैं थोड़ा असमाजवादी भी हो गया अर्थात् तत्समय जिसके पास फोन न हो, उसे हिकारत की नजर से देखना मेरी फितरत में शामिल हो गया। कुछ या काफी दिनों के बाद, फोन के निरंतर इस्तेमाल से, उसकी हाउसिंग खराब हो गई तो मैंने जाकर मोहल्ले की एक मोबाइल रिपेयर शॉप से उसे एक नए हाउसिंग से बदलवा लिया और धूम-धाम से फिर फोन के इस्तेमाल में लग गया।



अंबरीष श्रीवास्तव

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

काल चक्र धूमा और मुझे एक बस यात्रा करनी पड़ी, बस में सीट पर काबिज होने के पश्चात बायीं ओर के अपने सहयात्री पर मैंने एक उड़ती-उड़ती नजर डाली और कुछ रस्मी बातें की जिससे मेरे सफर कुछ सहज हो सके। बस चली और हवा भी जो खुशगवार थी तो मौसम सुहाना सा हो गया और तबियत भी, कुछ यात्रा का लुत्फ, कुछ गंतव्य तक पहुंचने की खुशी से मैं एक भरपूर यात्री बन गया, तभी मेरे सहयात्री ने अपनी जेब से एक फोन जैसा यन्त्र निकाला तो अनायास ही मेरी दृष्टि उस पर पड़ गई-कुछ NOKAI 1310 जैसा लिखा दिखा जिसकी तस्दीक मैंने अपने तीक्ष्ण और अनुशासित पुनर्दृष्टि से की तो यही लिखा पाया, फिर क्या था मेरी हिकारत ने एवेरस्ट के शिखर पर पहुँचने में तनिक भी विलम्ब न किया, बस यही ख्याल आया-पता नहीं, क्यों ऐरे-गैरे लोग फोन रखने लगे हैं, NOKIA 1310 हैंडसेट रखने की औकात नहीं है तो NOKAI 1310 ले लिया और तत्क्षण ही मैंने अपने सहयात्री से पर्याप्त और असामाजिक भौतिक दूरी स्थापित कर ली, सामान्य शब्दों में कहें तो खिसक कर बैठ गया। अभी कुछ ही समय व्यतीत हुआ था कि मुझे मेरे फोन की घंटी बजती मालूम हुई तो मैंने जेब से फोन निकाला और जैसे ही ये देखना चाहा कि किसका कॉल है, अनायास ही हैंडसेट पर मेरी नजर पड़ी तो दिखा कि इस हैंडसेट पर भी NOKAI 1310 लिखा हुआ था, शायद हाउसिंग बदलवाने के बाद मेरे फोन का पुनः नामकरण हो गया हो, पर मेरी तो काटो तो खून नहीं वाली हालत हो गई, उसके बाद मेरे कितने भी फोन आये हो, मजाल है जो मैंने हैंडसेट जेब से निकालने की जुर्रत की हो, आखिर मेरे दायीं तरफ भी तो एक सहयात्री था।

मैं कौन हूँ?



गौरव कुमार
लेखापरीक्षक

मानव-बोध के समक्ष बहुधा चुनौती प्रस्तुत करने वाले कतिपय प्रश्नों यथा दुःख क्या है?, सुख क्या है?, पाप क्या है?, पुण्य क्या है?, जीवन क्या है? मृत्यु क्या है?, आत्मा क्या है? प्रभृति दीर्घ-ए-तमाम प्रश्नों के हित उपक्रम करने की अपेक्षा एक अदद दुर्निवार अपितु नितांत समयसाध्य किन्तु अत्यंत आवश्यक एवं सारभूत प्रश्न "मैं कौन हूँ" प्रश्नगत मनोयौगिक आत्म-मंथन अर्थात् मौलिक आध्यात्मिक मीमांसा तथा निदिध्यासन अधिक श्रेयस्कर/सार्थक है, पूर्वोक्त प्रश्न जिससे सर्वथा संपृक्त हैं एवं कदाचित नानाविध प्रश्नों के सम्मुख तिरोहित हैं। जीवन-मृत्यु, जय-पराजय, यश-अपयश नित्य-अनित्य जैसे प्रीतिकर-अप्रीतिकर कारकों से मंडित जीवन के ही तो ये समस्त पृथक-पृथक आयाम हैं जो स्वयं अहम्मन्यता से निस्सृत हैं और जिसका मूल एकमात्र "अहम्" है।

कालक्रम में मानवीय अधोचेतना की मिथक-सम्मत एवं उदात्त-चेतना की उत्कृष्ट विवेचनाओं के उचित अन्वय न किए जाने एवं अद्यतन बौद्धिक एवं आध्यात्मिक उपलब्धियों के सम्यक एवं यथोचित परिष्करण के अभाव ने इस अर्थ-भ्रम को अधिकाधिक पुष्ट ही किया। अतएव, आत्म-संधान के निमित्त समस्त अनुसंधित्सुओं से अपेक्षित है कि किंचित विरक्त-वृत्ति एवं निरपेक्ष भाव के अधीनस्थ होकर, नित्यप्रति अपने कर्तव्याकर्तव्य से यथोचित पार्थक्य स्थापित कर आत्म-संसर्ग एवं स्वगत कथोपकथन के माध्यम से योग एवं ध्यानादि क्रियाओं का आचरण करके उस अनिर्वचनीय, अनाकार मूर्धन्य-सत्य की ओर उत्थानोन्मुखी हों जिससे एकाकार होना ही मानवीय चेतना की नियति है, यही चैतन्य की प्राप्ति है।



कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भविष्य: संभावनाएं एवं खतरे

कृत्रिम बुद्धिमत्ता या AI आज के समय में सबसे चर्चित और प्रभावशाली तकनीकों में से एक है। यह न केवल हमारे दैनिक जीवन को प्रभावित कर रही है, बल्कि उद्योग, स्वास्थ्य, शिक्षा, और यहां तक कि कला और संस्कृति को भी बदल रही है। AI का भविष्य क्या है? यह प्रश्न आज हर किसी के मन में उठता है। इस लेख के माध्यम से ऐ आई को समझने का एक छोटा सा प्रयास किया गया है - कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इतिहास:



किरण लता

सहायक निदेशक / राजभाषा

प्रारंभिक अवधारणाएं: कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अवधारणा नया नहीं है। इसकी जड़ें प्राचीन काल तक जाती हैं, जब मनुष्य ने सोचा कि क्या मशीनें भी सोच सकती हैं। हालांकि, आधुनिक AI की शुरुआत 20वीं सदी में हुई। 1950 के दशक में, ब्रिटिश गणितज्ञ एलन ट्यूरिंग ने 'ट्यूरिंग टेस्ट' का प्रस्ताव रखा, जो यह जांचने के लिए था कि क्या एक मशीन मानव जैसी बुद्धिमत्ता प्रदर्शित कर सकती है। AI का जन्म: 1956 में, डार्टमाउथ कॉलेज में आयोजित एक कॉन्फ्रेंस में "कृत्रिम बुद्धिमत्ता" शब्द का पहली बार प्रयोग किया गया। इस कॉन्फ्रेंस को AI के जन्म के रूप में जाना जाता है। इसके बाद, 1960 और 1970 के दशक में। शोधकर्ताओं ने मशीन लर्निंग और न्यूरल नेटवर्क जैसी तकनीकों पर काम करना शुरू किया। AI का विकास: 1980 और 1990 के दशक में, AI ने कई उपलब्धियां हासिल कीं। इस दौरान, एक्सपर्ट सिस्टम का विकास हुआ, जो विशिष्ट कार्यों को करने में सक्षम थे। हालांकि, इस दौरान AI को कई चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा, जिसके कारण इसे 'AI विंटर' कहा गया।

वर्तमान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका:

मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग : आज, AI का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग है। मशीन लर्निंग एक ऐसी तकनीक है जो कंप्यूटर को डेटा से सीखने की क्षमता प्रदान करती है। डीप लर्निंग, जो मशीन लर्निंग का एक उन्नत रूप है, ने AI को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। यह तकनीक इमेज रिकग्निशन, वॉइस असिस्टेंट, और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में क्रांति ला चुकी है।

AI का दैनिक जीवन में प्रभाव: आज, AI हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुका है। स्मार्टफोन में वॉइस असिस्टेंट (जैसे Siri और Google Assistant), ऑनलाइन शॉपिंग में रिकमेंडेशन सिस्टम, और सोशल मीडिया पर कंटेंट फिल्टरिंग जैसे उदाहरण AI के प्रभाव को दर्शाते हैं। इसके अलावा, AI स्वास्थ्य सेवाओं, वित्त, और परिवहन जैसे क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

AI और रोजगार: AI के बढ़ते प्रभाव के कारण, यह चिंता भी बढ़ रही है कि क्या यह रोजगार के अवसरों को कम कर देगा। हालांकि, विशेषज्ञों का मानना है कि AI नए रोजगार के अवसर भी पैदा करेगा, खासकर तकनीकी और डेटा विज्ञान के क्षेत्र में।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संभावित खतरे :

नौकरियों पर प्रभाव: AI के कारण कई पारंपरिक नौकरियों के खत्म होने की आशंका है। उदाहरण के लिए, स्वचालित वाहनों के कारण ड्राइवरों की नौकरियां खतरे में पड़ सकती हैं। हालांकि, यह भी माना जाता है कि AI नए प्रकार के रोजगार पैदा करेगा।

डेटा गोपनीयता और सुरक्षा: AI के लिए बड़ी मात्रा में डेटा की आवश्यकता होती है, जिससे डेटा गोपनीयता और सुरक्षा के मुद्दे उत्पन्न होते हैं। यदि डेटा का दुरुपयोग होता है, तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं।

नैतिक मुद्दे: AI के निर्णय कैसे लिए जाएंगे? क्या AI को नैतिक निर्णय लेने की क्षमता दी जा सकती है? ये प्रश्न भविष्य में AI के

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संभावित खतरे :

नौकरियों पर प्रभाव: AI के कारण कई पारंपरिक नौकरियों के खत्म होने की आशंका है। उदाहरण के लिए, स्वचालित वाहनों के कारण ड्राइवरों की नौकरियां खतरे में पड़ सकती हैं। हालांकि, यह भी माना जाता है कि AI नए प्रकार के रोजगार पैदा करेगा।

डेटा गोपनीयता और सुरक्षा: AI के लिए बड़ी मात्रा में डेटा की आवश्यकता होती है, जिससे डेटा गोपनीयता और सुरक्षा के मुद्दे उत्पन्न होते हैं। यदि डेटा का दुरुपयोग होता है, तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं।

नैतिक मुद्दे: AI के निर्णय कैसे लिए जाएंगे? क्या AI को नैतिक निर्णय लेने की क्षमता दी जा सकती है? ये प्रश्न भविष्य में AI के विकास को प्रभावित करेंगे।

स्वायत्त हथियार: AI का उपयोग स्वायत्त हथियारों के विकास में भी किया जा सकता है, जो एक बड़ा खतरा हो सकता है। यदि इन हथियारों पर नियंत्रण खो दिया जाए, तो इसके विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं।

स्वास्थ्य क्षेत्र में AI का उपयोग : AI ने कैंसर रिसर्च में क्रांति ला दी है। उदाहरण के लिए, Google की DeepMind ने एक AI सिस्टम विकसित किया है जो स्तन कैंसर का पता लगाने में मानव रेडियोलॉजिस्ट से अधिक सटीक है। इस तरह की तकनीक कैंसर का पता जल्दी लगाने और उपचार को और अधिक प्रभावी बनाने में मदद कर सकती हैं।

रोग निदान और उपचार: AI का उपयोग विभिन्न रोगों के निदान और उपचार में भी किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, IBM dk Watson for Oncology कैंसर के उपचार के लिए सिफारिशें प्रदान करता है। यह सिस्टम चिकित्सकों को सबसे अच्छे उपचार विकल्पों का चयन करने में मदद करता है।

दवा अनुसंधान: AI दवा अनुसंधान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उदाहरण के लिए, AI का उपयोग नई दवाओं की खोज और विकास में किया जा रहा है। यह तकनीक दवा अनुसंधान की प्रक्रिया को तेज और अधिक कुशल बना सकती है।

AI रोचक प्रसंग और केस स्टडी :

1. AI और कला:

AI ने कला के क्षेत्र में भी अपनी पहचान बनाई है। पद्धतियाँ बनाई गई पेंटिंग और संगीत ने लोगों को चौंका दिया है। उदाहरण के लिए, AI द्वारा बनाई गई पेंटिंग 'एडमंड डी बेलामी' को नीलामी में लाखों डॉलर में बेचा गया।

2. AI और खेल:

AI ने शतरंज और गो जैसे खेलों में मानव चैंपियनों को हराया है। 1997 में, IBM का डीप ब्लू कंप्यूटर शतरंज के विश्व चैंपियन गैरी कास्परोव को हराने में सफल रहा।

3. AI और चिकित्सा :

AI ने चिकित्सा के क्षेत्र में भी क्रांति ला दी है। AI द्वारा विकसित तकनीकें कैंसर जैसी बीमारियों का पता लगाने में मदद कर रही हैं। उदाहरण के लिए, Google की DeepMind ने एक AI सिस्टम विकसित किया है जो स्तन कैंसर का पता लगाने में मानव रेडियोलॉजिस्ट से अधिक सटीक है।

निष्कर्ष: जिस प्रकार हर विचारधारा के दो पक्ष होते हैं उसी प्रकार AI को लेकर भी लोगों में दो पक्ष अपने अपने विचार व्यक्त करते हैं , कुछ कहते हैं कि यह देश को एक अलग ऊंचाई तक पहुँचा देगा वहीं कुछ इसके नकारात्मक प्रभाव बताते हुए यह आशंका जताते हैं कि इससे अनेक प्रकार के नकारात्मक प्रभाव जैसे कि नौकरियों में कटौती एवं निजता भंग जैसे अनेक विचार शामिल हैं परंतु इन सबको देखते हुए भी वर्तमान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है। यह न केवल हमारे जीवन को सरल और सुविधाजनक बना रहा है, बल्कि नए अवसर और संभावनाएं भी पैदा कर रहा है। हालांकि, इसके साथ ही, AI के नैतिक और सामाजिक प्रभावों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। भविष्य में, AI का सही उपयोग करके हम एक बेहतर और समृद्ध दुनिया का निर्माण कर सकते हैं।

अपनी “पहचान” खोते गाँव

(जाने कहाँ गए वो दिन)



सुधा नंदन अंकित

भ्राता -श्री काशी कुमार,डी ई ओ

कहा जाता है कि भारत की आत्मा “गांवों” में ही बसती है। और यह सही भी है, क्योंकि आज भी अधिसंख्य आबादी गांवों में ही रहती है। जिस प्रकार भारत की आत्मा गांवों में बस्ती है, ठीक उसी प्रकार गांवों की “आत्मा” उसकी पारम्परिक विरासत (कला- संस्कृति, त्योहार, आपसी भाईचारा, आध्यात्मिक चर्चाएं, अखंड रामायण या अखंड सकीर्तन, लोकसंगीत तथा कुश्ती इत्यादि पारम्परिक खेल) में बसती है।

मित्रें, मैं एक किसान पुत्र हूँ, मेरा बचपन गाँव में ही बीता है तथा आज भी मैं अपने गाँव से उतना ही जुड़ा रहता हूँ। बेशक मैं अब गाँव नहीं रहता हूँ, लेकिन मेरा गाँव रहने का औसत आज भी एक माह में 3-4 दिन का है। इसलिए मैं अपने बचपन का गाँव तथा आज के गाँव दोनों को नजदीक से देख रहा हूँ। दोनों में बहुत फर्क आ गया है।

मुझे वह भी दिन याद है कि मेरा गाँव लोक संगीत का पर्याय था, ऐसा कोई भी मुहल्ला नहीं था, जहां शाम में कहीं ना कहीं विभिन्न प्रकार की शैली में लोक गायन सुनने को न मिलता हो। कहीं पखावज बज रहा है, कहीं हुड़का बज रहा है, कहीं कोई विरहा गा रहा है तो कहीं कोई लोरकी सुना रहा है। मुझे आज भी याद है कि अगर कहीं हुड़का नृत्य हो रहा होता था, तो लोग थोड़ी दूरी पर ही वृत्त (गोला) बनाकर खड़े होते थे। कारण यह था कि उस नृत्य में जो नृत्य करने वाला भाई (लड़की के वेश में लड़का) होता था, वह बहुत ही दूर में जम्प (उछल-कूद) करता था। हुड़का नृत्य की यह एक अलग पहचान थी। लोग-बाग को यह कहते हुए सुना जा सकता था कि (“हट न तू देहियां खँच देइ”) हटो नहीं तो शरीर के ऊपर आ जायेगा। होली, कृष्ण जन्माष्टमी, राम जन्मोत्सव आदि त्योहारों में तो कुछ दिन पहले से ही ढोलक-झाल, ढफ बजने लगते थे। समयानुसार कभी फाग, कभी बसन्त, कभी ठुमरी, दादरा तथा कजरी गाने-सुनने को मिलती थी। एक दो भाइ मंडली भी समय-समय पर अपनी कला एवं अदा से लोगो का मन मोह लेती थी। कहने का तात्पर्य यह है की बारहों मास लोक संगीत का आनंद प्राप्त होता था, तथा सभी पारम्परिक त्योहार बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाए जाते थे। यही स्थिति लगभग सभी गांवों की होती थी। दशहरा व होलीके दिन विशेष रूप से पूआ खाने का इंतजार रहता था। होली पर्व पर तो विशेष रूप से गायन का आनन्द लिया जाता था, क्योंकि उस दिन पूरे गाँव का भ्रमण करते हुए गायन होता था। हालांकि मेरे गाँव मे आज भी यह परंपरा कमोवेश जिंदा है, जिसका मुझे गर्व भी है। गांवों में उस समय आपसी भाईचारा बहुत था। उसका प्रमुख कारण यह था कि लोग बाग एक दूसरे के यहां बैठते थे, चाहे वह जाड़े में कौड़ा (आग) तापने के बहाने या वही कौड़ा पर बैठे बैठे हुक्का (गड़गड़ा) पीने के लिए भी। वहां पर बैठकर किस्सा, कहानियां भी सुनने को मिलती थी। हर दरवाजे पर लगभग श्री रामायण जी (श्री रामचरितमानस) का कम से कम पांच दोहे का अर्थ सहित वाचन एवं श्रवण जरूर होता था। अगर किसी किसी के यहां नहीं भी होता था तो वह निश्चित रूप से तय समय पर अपने अन्य भाई के दरवाजे पर जाकर श्रवण जरूर करता था। रामायण, महाभारत इत्यादि अन्य सभी महान ग्रंथों पर चर्चा तथा उसका चिंतन, मनन खूब होता था। बीच बीच में कहीं ना कहीं किसी मंदिर या किसी के दरवाजे पर ही अखंड रामायण या अखंड सकीर्तन का पाठ भी

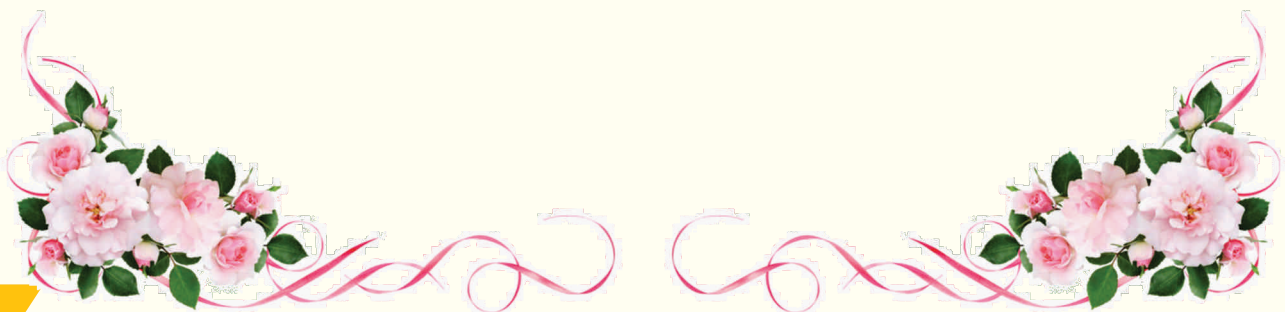
का पाठ भी बहुधा सुनने को मिल जाता था। खेलों में उस समय गांवों में मुख्यतः तीन पारंपरिक खेल- कुश्ती, कबड्डी तथा चीका-वरगाता था। खेलों के लिहाज से नागपंचमी (पचईयां) का त्योहार मुख्यरूप से हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता था। उस दिन हम सभी अपनी अपनी लाठी (लड्डू) में तेल पिलाकर सुबह खेत (खाली मैदान) की तरफ निकल जाते थे, तथा वहीं पर इन सारे खेलों में जोर आजमाइश होती थी। उस दिन विशेष रूप से उड़ा कूद (लम्बी कूद) में यह देखने के लिए लोग बाग आतुर रहते थे कि माथ कौन मार रहा है, अर्थात् कौन प्रथम आया। उस समय लोगों को इसका बहुत शौक था कि मेरा पुत्र शरीर से बलशाली हो, और उसके लिए घर पर (दरवाजे पर) कम से कम एक दुधारू गाय एवं भैंस जरूर रहती थी। इसका ध्यान भी दिया जाता था कि बच्चे रोज दूध पीते हैं कि नहीं 'परंतु आज' मैं यह कहूँ की 'गाँव' अपनी यह 'पहचान', अपनी यह विरासत खोने के कगार पर पहुँच गए हैं, तो गलत नहीं होगा। क्योंकि बहुत पीड़ा के साथ यह लिखना (कहना) पड़ रहा है कि अब ना तो गावों में पहले की भाँति आपसी प्रेम, और न ही भाईचारा देखने को मिलता है। इस कमी के बहुत से कारण हो सकते हैं, लेकिन मुझे इसका प्रमुख कारण (पंचायती चुनाव) लगता है। बात विल्कुल स्पष्ट है कि पंचायती राज में अब पहले की अपेक्षा अधिक मात्रा में धन की व्यस्था का होना। धन की व्यस्था का होना अच्छी बात है, क्योंकि उससे गाँव का चहमुखी विकास होगा। लेकिन इसके लिए येन-केन प्रकार से चुनाव जितने की ओछी मानसिकता का पनपना गाँव के सौहार्द का वातावरण बिगड़ने का प्रमुख कारण है। अब मैं यह देखता हूँ कि लोग-बाग अगर किसी के दरवाजे पर बैठते भी हैं, तो केवल और केवल राजनैतिक चर्चाएं ही करते हैं तथा वह भी नकारात्मक ही। अब पहले की भाँति न तो हर दरवाजे पर 'श्री रामायण पाठ' होता है और न तो संकीर्तन इत्यादि ही। अब न पहले की भाँति कला-संस्कृति तथा पारम्परिक खेलों पर ही ध्यान दिया जाता है, न पहले की भाँति अपने त्योहार, उत्सव आदि मनाने पर जोर ही। अब स्थिति यह हो गयी है कि आज गावों से लोकसंगीत विलुप्तावस्था में जाने के कगार पर खड़ी हो गयी है।

मित्रों, मुझे पूरा विश्वास है कि अगर हम ये कुछ निम्नलिखित कार्य करना चालू कर देंगे तो, पुनः आपसी भाईचारा मजबूत करने तथा अपनी संस्कृति को बचाने में कामयाब हो जायेंगे।

(1) हम अपने कला एवम खेल कूद गतिविधियों को महत्व दें, क्योंकि यही वह विषय है जिसमें हम ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा का भेद भुलाकर एक साथ खेलते - कूदते हैं तथा एक साथ बैठकर गाते - बजाते हैं। इससे आपस में प्रेम बढ़ता है तथा एकजुटता बनी रहती है।

(2) लोकसंगीत को पुनः बढ़ावा देना है, इसमें हमारे अपने वरिष्ठजनों का आशीर्वाद बहुत जरूरी है। वह पहले की भाँति ही प्रत्येक उत्सवों के पहले अपने अनुजों को साथ लेकर गायन एवम वादन सिखलाने की कृपा करें। मैं अपने भाइयों से भी अनुरोध करता हूँ कि हम सभी अनुज मिलकर अपने अग्रजों से इसके लिए अनुनय, विनय भी करें कि हम सभी आपकी इस परम्परा, इस संस्कृति को आगे ले जाना चाहते हैं, इसलिए आप हम लोगों को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

Dedicated to Truth in Public Interest



भारत और जलवायु परिवर्तन

‘धरती सुनहरी अम्बर नीला,
हर मौसम रंगीला, ऐसा देश है मेरा’...



सुश्री रीनू गुप्ता

कनिष्ठ अनुवादक

ये शब्द हमारे भारत देश की मौसमी विविधता तथा कृषि समृद्धता को बखूबी दर्शाते हैं। किन्तु पिछले कुछ दशकों से इस समीकरण में परिवर्तन हुआ है जो कि अब स्पष्ट रूप परिलक्षित हो रहे हैं। वो चाहे इस वर्ष गुलमर्ग का बर्फबारी से वंचित रह जाना हो या उत्तरकाशी में जल-सैलाब, ये घटनाएँ भारतीय मौसमों के पैटर्न में परिवर्तन का स्पष्ट संकेत हैं। बढ़ती हुई प्राकृतिक आपदाओं से यह बात तो स्पष्ट है कि भारत भी जलवायु परिवर्तनों के दुष्प्रभाव से अछूता नहीं है और इसकी शुरुआत अब हो चुकी है। जलवायु परिवर्तन आज वैश्विक समस्या और सबसे गम्भीर मुद्दा है जिसका समाधान सरकारों, सरकारी - गैरसरकारी संस्थानों और संगठनों के साथ-साथ नागरिकों की सम्पूर्ण भागीदारी एवं सार्थक प्रयासों से ही सम्भव हो सकता है।

जलवायु परिवर्तन की जड़ों को यदि इतिहास के पन्नों में देखें तो यह पता चलता है कि पूर्व-औद्योगिक काल में या अन्य शब्दों में कहें तो औद्योगिक क्रान्ति से पहले पृथ्वी का औसत तापमान लगभग 13.7°C था, जो अब बढ़कर लगभग 15.1°C हो चुका है अर्थात् मध्य उन्नीसवीं शताब्दी से लेकर अब तक पृथ्वी के औसत तापमान में लगभग 1.55°C की वृद्धि हुई है। यदि इसी प्रकार पृथ्वी का तापमान बढ़ता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब समुद्र का जलस्तर इतना बढ़ जाएगा कि समुद्र किनारे बसे देश, द्वीप उनमें समाहित हो जाएँगे। भारत में सालसेट द्वीप पर बसा भारत की आर्थिक राजधानी कहा जाने वाला मुम्बई शहर भी इतिहास के पन्नों पर दर्ज होकर रह जाएगा।

मानव जीवन को बेहतर, उन्नत और सुगम बनाने के लिए शुरू हुई औद्योगिक क्रांति के दौरान जीवाश्म ईंधनों जैसे कोयला, तेल, गैस आदि का बड़े पैमाने पर उपयोग शुरू किया गया जिसके परिणामस्वरूप कार्बन डाई ऑक्साइड एवं अन्य ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ा। ग्रीन हाउस गैसों ने वायुमंडल में एक आवरण बना दिया जिससे कि पृथ्वी की उत्सर्जित ऊष्मा वायुमंडल में ही रह गई जो पृथ्वी के वैश्विक तापमान में वृद्धि का कारण बना।

इसके अलावा वन क्षेत्र का तेजी से घटना भी बदलते जलवायु का एक बड़ा कारण है। वन, जिन्हें हम पृथ्वी का फेफड़ा कहते हैं जो पृथ्वी के वायुमंडल में उपस्थित हानिकारक तत्वों को सोख लेता है और साथ ही हमें प्राणदायक वायु ऑक्सीजन प्रदान करता है परंतु वनों एवं वन्य संपदाओं के तेजी से हो रहे दोहन के कारण वन क्षेत्र सिकुड़ता जा रहा है। परिणामतः वायुमंडल में कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है।

इतना ही नहीं, घटते वन क्षेत्र का दुष्प्रभाव सिर्फ वायुमंडल के बिगड़ते समीकरण तक ही सीमित नहीं है बल्कि इससे वर्षा चक्र और जल चक्र भी बुरी तरह प्रभावित हुआ है। यही कारण है कि पिछले कई वर्षों में प्राकृतिक आपदाओं की

आवृत्ति में वृद्धि देखने को मिली है। इस बदलते जलवायु का ही दुष्प्रभाव है कि कहीं भूजल स्तर में इतनी गिरावट हुई है कि लोगों के जल आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पानी के टैंकों से जल पहुंचाया जाता है तो कहीं इतनी वर्षा होती है कि गांव के गांव जलमग्न हो जाते हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में भी बादल फटने तथा भूस्खलन जैसी घटनाएं आम हो गई हैं।

वनों के साथ-साथ समुद्र भी एक कार्बन सिंक की तरह काम करता है, जो वायुमंडल में कार्बन चक्र को स्थिर बनाए रखने में मदद करता है। परंतु जलवायु परिवर्तन के दुश्चक्र से समुद्र क्षेत्र भी बचा नहीं है। एक ओर जहाँ बढ़ते औद्योगीकरण व शहरीकरण के कारण जल प्रदूषण अप्रत्याशित रूप से बढ़ा है, वहीं दूसरी ओर बढ़ती जनसंख्या के कारण खाद्य क्षेत्रों पर भी आपूर्ति का दबाव बढ़ा है। खाद्य आपूर्ति के लिए आज असतत कृषि पद्धतियाँ विकसित हो रही हैं, जो माँग को तो पूरा करती हैं लेकिन धरती की उर्वरता पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। यही कारण है कि भारत के कुछ क्षेत्रों, विशेषकर पश्चिमी इलाकों में, बंजर भूमि क्षेत्र में लगातार वृद्धि हो रही है।

“समस्याएँ कभी अकेले नहीं आतीं” यह कहावत भारत में जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को बहुत ही सटीकता से चरितार्थ करती है। अब अगर जलवायु परिवर्तन के कारण चरम मौसमी घटनाओं जैसे चक्रवात, बाढ़, सूखा, लू आदि की ही बात करें तो यह स्पष्ट होता है कि इन घटनाओं के कारण जान-माल की अपूर्णीय क्षति तो होती ही है, साथ ही साथ संक्रामक बीमारियों का खतरा भी कई गुना बढ़ जाता है। और प्रदूषित वायु से भारत में श्वसन संबंधी बीमारियों के आँकड़ों में भी वृद्धि हुई है। इस प्रकार जलवायु परिवर्तन के कारण वायु के घटकों का संतुलन तो बिगड़ा ही है, समस्त प्रकृति की प्रेरक शक्ति कहा जाने वाला जल भी इसके दुष्प्रभावों से अछूता नहीं है।

जलवायु परिवर्तन भारत की जैव विविधता, कृषि, पर्यटन, बुनियादी ढाँचा, यहाँ तक कि आर्थिक विकास को भी नकारात्मक रूप से अत्यधिक प्रभावित करता है। जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए सरकारों को वैश्विक स्तर पर संगठनों एवं अन्य संस्थाओं के साथ एकजुट होकर प्रयास करना होगा। इस लेख के आरंभ में हमने बात की थी कि सरकारों, संगठनों एवं संस्थाओं के साथ-साथ नागरिक भागीदारी की भी उतनी ही आवश्यकता है। भारतीयों को अपने मौलिक अधिकारों को जानने के साथ-साथ मौलिक कर्तव्यों को भी भली-भाँति समझना चाहिए। हमारे संविधान में उल्लिखित मौलिक कर्तव्यों में से एक मौलिक कर्तव्य यह भी है कि प्रत्येक नागरिक को झीलों, नदियों और वन्य जीवों सहित पर्यावरण की रक्षा और सुधार करना चाहिए।

इस दिशा में प्रयास करते हुए जलवायु कार्यवाही पर व्यापक जागरूकता एवं शिक्षा का प्रसार करना चाहिए। जागरूकता अभियान तथा विद्यालयों में कार्यशालाओं के आयोजन के माध्यम से जन-जन और बच्चों एवं युवाओं को जलवायु परिवर्तन के कारणों एवं इसके उपायों की जानकारी देनी चाहिए। इसके साथ ही पारंपरिक ऊर्जा संसाधनों के स्थान पर नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि हरित ऊर्जा के साथ कार्बन उत्सर्जन को कम किया जा सके और सतत विकास लक्ष्यों को हासिल करते हुए जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को कम करने की ओर एक सार्थक कदम बढ़ाया जा सके। हावर्ड जिन ने कहा है कि जब छोटे-छोटे कार्य करोड़ों लोग मिलकर करते हैं तो वे दुनिया बदल देते हैं। यदि हम साहस और रचनात्मकता से एक साथ प्रयास करें तो जलवायु संकट का समाधान संभव है। आज का हमारा प्रयास कल की आने वाली पीढ़ियों का उज्ज्वल भविष्य होगा। अतः प्रत्येक नागरिक को यह संकल्प लेना चाहिए -

सन्नाटा



अर्चना प्रसाद

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

किस धर्म, भाषा, मजहब
के मानने वाले हो तुम,
क्या है धर्म तुम्हारा,
कौन सी है जाति तुम्हारी
और..... क्या चाहते हो तुम??
सन्नाटा..... एक अनंत सन्नाटा।
तैर रहा है आँखों में अक्स,
गूँज रही हैं कानों में सरगोशियाँ,
ओ.के., बाय, टाटा, टेक केयर
आदि आदि शब्दों के साथ ली गई विदाईयां।
चॉकलेट, आइसक्रीम, बलूस आदि
के इंतजार में दी गई विदाईयां।
डबडबाई आँखे,
नौकरी की मजबूरियां
और न जाने किन किन
जरूरतों के लिए ली गई और दी गई विदाईयां।
कौन जानता था,
किसी के पागलपन का शिकार हो जाएंगी
वे दैनिक विदाईयां।
वे छोटी छोटी मासूम
अबोध जिंदगियाँ.....
नहीं जानती वे कि
वे अनाथ हो गई हैं।.....
आज अचानक
कुछ ठेकेदारों को याद आ गई हैं
उनकी जिम्मेदारियाँ,

आज अचानक
 अंगड़ाई ले कर जाग खड़ी हुई हैं
 हैवानियत।
 छिटपुट घटनाओं,
 सौ पचास जानों से नहीं मिटती इनकी प्यास,
 नहीं भरता इनका दिल
 रोज
 कुछ अनाथ, विधवा, अपाहिज
 उपजा कर के,
 करने लगे हैं वे अब
 बड़े बड़े हौंसले।
 हो सकता है
 आज
 न पूछ सके मानवता
 इनसे अपना सवाल,
 हो सकता है
 आज
 न मांग सकें उदास आँखें
 अपना हक।
 लेकिन
 कयामत के रोज
 खुदाई दरबार में
 पकड़ लेंगे वे तुम्हारा दामन,
 भेद डालेंगी वे मासूम आखें
 तुम्हारे गोशे गोशे को,
 और मांग बैठेंगी
 अपने बचपन का हक।
 ऐ! धर्म के ठेकेदारों,
 मानवता के दुश्मनों,
 वे सवाल जो आज

पूछ नहीं पा रही है मानवता,
 कल तुम्हारे सामने मुंह बाये खड़े होंगे।
 क्या जवाब दोगे??
 ट्रेड नष्ट, बिजनेस चौपट,
 संस्कृति खतरे में....
 बाद में.... ये सारी बातें बाद में।
 पहले तो सामना करना होगा
 तुम्हें
 जीवित सवालियों का,
 बताना होगा,
 क्या हक था तुम्हें,
 जीती जागती जिंदगियों को,
 हँसते खेलते बचपन को,
 प्यार से लबरेज आँखों को,
 यूं...
 सूना, उदास, अनाथ बना देने का।
 किस धर्म ने दिया है हक
 इन कार्रवाइयों का,
 बताना होगा तुम्हें?
 बताओ?
 बताओ?...
 पर
 सन्नाटा..... अनंत सन्नाटा,
 जो कह रही है,
 कुछ कह रही है,
 कुछ कुछ कह रही है,
 बहुत कुछ कह रही है,
 न जाने, क्या क्या कह रही है।

राजभाषा: नव प्रभात, नव विश्वास



विनय कुमार गुप्ता
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

वर्णों की माला, शब्दों का सागर,
राजभाषा हिंदी, है नव प्रभात का नागर।
ज्ञान की ज्योति, फैलाए ये हर ओर,
टूटे दीवारें, जुड़े जन-जन की डोर।

भाषा ये अपनी, हर दिल की पुकार,
भविष्य की राहें, करती साकार,
डिजिटल युग में, बनी है ये पहचान,
भारत की गरिमा, बढ़ाए ये मान।

नदी-सी बहती, संस्कृतियों को मिलाती,
हिंदी हमारी, हर अंतर मिटाती,
सेतु ये सच्चा, हर प्रांत को जोड़े,
संगम है ऐसा, जो बंधन ना तोड़े।

संचार का माध्यम, विकास की कुंजी,
राजभाषा है अब, हर लक्ष्य की पूंजी,
ज्ञान-विज्ञान में, बढ़ती है पैठ,
देश की प्रगति का, ये है मजबूत रैठ।

कण-कण में बसी, जन-जन की पहचान,
राजभाषा हिंदी, भारत का अभिमान,
सरल सुगम सी, हर मन को भाती,
भावों को जोड़े, दूरियाँ मिटाती।

साहित्य की सरिता, ज्ञान का उजाला,
वैज्ञानिक चिंतन की, ये ही है माला,

अतीत को साधती, भविष्य सँवारती,
राष्ट्र की शक्ति को, निरंतर निखारती।

भाषाओं के उपवन में, एक अनुपम फूल,
राजभाषा हिंदी, ना भूले कोई मूल,
ज्योति बन फैली, कोने-कोने तक,
प्रकाश से भर दे, हर हृदय का फलक।



कलियुग की सन्तान



कमला शंकर मिश्रा
सहायक पर्यवेक्षक

जिन पुत्रों को माता-पिता ने, कष्ट सहन कर पाला है।
ठंडी रातों में ठिठुर-ठिठुर, पुत्रों पर चादर डाला है।
देव तुल्य निज मातु पिता की, अपमान नित्य वे करते हैं।
ऐसे सुत निज मातु पिता की, तुलना कुत्तों से करते हैं।
हो गये पतन के कारण वे, अपने कुकर्म आचरणों से।
दुराचार से ग्रसित भावना, दिख साचे निज कर्मों से।
हो गया नरक कलियुग में जीवन, सुन नित-नित अपने कानों से।
वृद्धावस्था के आने पर, जब ज्ञान चक्षु दिखलाई देंगे।
तब देर बहुत हो जायेगी, जब स्वयं पिता बन जायेंगे।
ऐसे अज्ञानी पुत्रों का, अभिमान ज्ञान सब भूलेगें।
बीती बातों को सोच-सोच, तब सिर वह अपना पीटेंगे ॥

वर्तमान समय में आये दिन ऐसी घटनायें समाज में घटित हो रही हैं जो एक संवेदनशील व्यक्ति के जीवन को झकझोर कर रख दे रही हैं समाचार पत्रों, दूरदर्शन चैनलों पर बहस तथा समाज में वृद्धशालाओं की वृद्धि बहुत कुछ स्वयं में बयाँ कर रही है। संपत्ति के लालच में मां-बाप की नृशंश हत्या आये दिन सुनने पढ़ने व कभी-कभी प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिल रहा है।

हमारा प्रयागराज



सत्य प्रकाश सिन्हा
लेखापरीक्षक

त्रिवेणी संगम का पावन धाम,
प्रयागराज की गाथा अनंत नाम ।
कुम्भ मेला की रंगीन रश्मि जाल,
सौंदर्य और इतिहास की मधुर ताल ।
अकबर किले की भव्य वेदिका,
अतीत की कहानी सुनाती प्रवीण रेखा ।
विश्वविद्यालय के पवित्र मनीषा ज्ञान,
ज्ञानता का दीपक, जीवन का वरदान ।
त्रिवेणी पर संगम की लहरें अनिला सी,
प्रयागराज की सुन्दरता विमला जैसी ।
घाटों की कोमल ढलान सुहानी सीधी,
आशा और आनंद की निधि सानी गहरी ।
प्रयागराज की पहचान, संगम तीर्थ स्थल,
तीर्थराज का शहर, जहां आते सब मिल ।
शहर की धरोहर अमूल्य, सुन्दर सार,
प्रयागराज की महिमा, सदा सुखद अपार ।



आँसू और मुस्कान



सुधीर कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

वो भी क्या वक्त होता था
जब पूरा परिवार रिश्तेदार को स्टेशन छोड़ने जाया करते
तो आँखे नम हो जाया करती थी.....
अब तो श्मशान में भी आँखे नहीं भीगती
"जन्म एवं मृत्यु"
अब और महंगे होते जा रहे हैं.....
आपरेशन के बिना कोई इस दुनिया में आता नहीं.....
और वेंटीलेटर के बिना कोई व्यक्ति जाता नहीं.....
कैसे हो पायेगी इस जहाँ में.....
अच्छे व्यक्ति की पहचान.....
आजकल दोनों ही नकली निकल गए,
आँसू और मुस्कान.....

SUPREME AUDIT INSTITUTE OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

डिप्रेशन यानी अवसाद

आज अचभित मैं हुआ हूँ,
कैसे कोई इस तरह अवसाद का शिकार हो जाता है ।
पता नहीं वह कैसे खुद से हार जाता है ।
देखा है हमने वक्त बदलते
नीचे से ऊपर- ऊपर से नीचे,
गिरते फासले को धरते ।



सुधानन्दन अकित

भ्राता -काशी कुमार /डी ई ओ

सुख दुख तो दो साथी हैं
कभी आँसू तो कभी हँसी तो आनी है ।
आज अचानक यह मन भयभीत है
ना जाने किस उलझन से ग्रसित है ।

दो टूक तू हँस ले मुस्कुराने की वजह को धर ले ।
ना जाने अगले पल क्या हो जाना है
क्या पता जीवन की डोर कब रुक जानी है ।
ना मन मैं कोई फरियाद रख
बेहिचक तू अपनी बात रख
मत सोच की दुनिया क्या कहेगी ,

क्या पता यह जिंदादिली तेरी पहचान बनेगी ।
तूनें जो चाहा है वह तुझे मिल जाएगा ,
उस वक्त तू थम जाएगा ।।
इसलिए कहता हूँ ,
कुछ खाहिशे अधुरी रहनी चाहिए
तभी तो जीने की आस बरकरार रहेंगी।

सच की परछाई



श्रीमती अन्जू कुमारी धवल
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

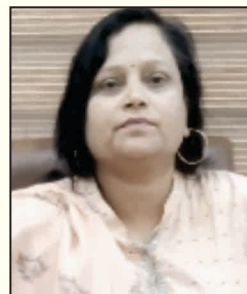
ईमानदारी, बेइमानी के आगोश में सिसक रही है।
व्यवस्था की नींव धीरे-धीरे दरक रही है।
वो भी दौर था जब चमकते चेहरों पे,
सच की झलक दिखाई देती थी
अब तो चेहरे पर सिर्फ नकली हँसी दिखाई देती है।

अंतरात्मा की आवाज में वो पीड़ा वो कसक है
फिर भी ऊँचाइयों पे पहुँचने की ही ललक है
चंद लोगों की जागीर हो गयी है हिन्दोस्ता की जमीन
सच बोलने वालों की तस्वीर फ्रेम में ही दिखाई देती है।
अब तो चेहरों पर सिर्फ नकली हँसी दिखाई देती है...

ऊँचाइयों पे पहुँचने का पैमाना बदल गया है
सलीका, शर्म, हया, ईमानादारी के मुँह पर ताला है
मिल जाती है मान, पद, प्रतिष्ठा पैसों वालों का बोल बाला है
टूटे हुए पिंजरों से भी चहक सुनाई देती है
अब तो चेहरों पर सिर्फ नकली हँसी दिखाई देती है...

SUPREME AUDIT INSTITUTE OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

मुझे चाहिए ऐसा भारत



मीनू श्रीवास्तव

मुझे चाहिए ऐसा भारत
मुझे संरक्षण की वह विधा चाहिए,
जिसमें समाहित हो जाएं,
कुछ आकाँक्षाएं, कुछ अभिलाषाएं,
मुझे जीवन की वह आस चाहिए,
जिसमें समाहित हो जाएं,
प्रातः सुबह की लाली,
मुझे मानवता की वह कृति चाहिए,
जिसमें समाहित हो जाएं,
प्रेम सद्भावना की लड़ी।

मुझे भारत की वह आभा चाहिए,
जिसमें हो सतरंगी जीवन की लाली,
हर कीर्ति समाहित हो जाए,
नव छवि समाहित हो जाए,
मुझे चाहिए ऐसा भारत - 2

बलिदानों और वीरों की हर छाया समर्पित हो जाए,
हम स्मृति करें, हम मृदु गीत गाएं,
करतालों से मधुर ध्वनि करें,
मुझे चाहिए ऐसा भारत।



वतन से ही मुहब्बत है



मीनू श्रीवास्तव

वतन से ही मुहब्बत है
वतन से ही इबादत है,
वतन पर ही मिट जाएं,
बस इतनी सी ही चाहत है।

वतन महबूब बन जाए
वही जज्बात रखते हैं,
वतन के वास्ते,
हम अपनी जान रखते हैं।

कलम तलवार बन जाए,
यही पैगाम लिखते हैं,
भले दुश्मन हजारों हों,
सिरो पर ताज रखते हैं।

शहीदों के बलिदान को
हम याद रखते हैं,
कि हँस कर दे दिया जीवन,
माँ की गोद में सोकर,
हम ऐसे लाल को,
प्रणाम बारंबार करते हैं।



वक्त यूँ निकलता जा रहा

कि उस पल के इंतजार में
आँखों की नमी बढ़ गयी
आगे चल के ये
नमी आँखों में उतर गयी
तकल्लुफ ए इंतजार का
आँखों से बहता जा रहा
कोई रोक ले इस वक्त को
वक्त यूँ निकलता जा रहा
किसी ने इन पलों को
काफिला खाहिशों का बताया
मर्ज -ए -दवा में
परहेज इन्ही खाहिशों से बताया
किसी ने तो भरी उड़ान
हौसलों की
मर्ज ए दवा में
थोड़ा और सब बताया



रोशनी कुमारी

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

इम्तेहान -ए- सब्र का
मै यूँ तो देता जा रहा
कोई रोक ले इस वक्त को
वक्त यूँ निकलता जा रहा
गर्दिशों ने वक्त को
क्या खूब आजमाया है
कुछ खास लोगो का रंग
मेरे आईने ने बतलाया है
खैर छोड़ो
आज उलझा हूँ खुद ही
सब कुछ सुलझाने में
शायद थोड़ा और वक्त लगेगा
उस वक्त को भी आने में
हां थक के इंतजार से
मै यूँ तो कहता जा रहा
कोई रोक ले इस वक्त को
वक्त यूँ निकलता जा रहा



सत्य असत्य

सत्य:

मैं सत्य हूँ, मैं शिव हूँ
मैं हर जगह हूँ
मैं जमीं में हूँ, मैं आसमां में हूँ
मैं सत्य हूँ, मैं हर जगह हूँ



रोशनी कुमारी

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

असत्य :

तेरा शिव क्या करेगा
तेरा राम क्या करेगा
वो मुरली बजाने वाला
घनश्याम क्या करेगा
तेरा शिव क्या करेगा
तेरा राम क्या करेगा

सत्य:

माना कि कलयुग है
ये युग ही तेरा काल बनेगा
रफ्तार भले ही हो तेरे असत्य की
तू सिर अंततः सत्य के सामने
ही झुकाएगा
कि टेक दे घुटने
अब तो
आखिर कहाँ तक भागेगा तू
मैं सत्य हूँ, मैं हर जगह हूँ
मैं जमीं में हूँ, मैं आसमां में हूँ
हां मैं सत्य हूँ, मैं हर जगह हूँ



दो छोटी कवितायें

(भीड़)

भीड़ से गुजरते हुए मैंने कहा
'सुना'

सहसा सारी भीड़
मेरी तरफ मुड़ गयी
उस रोज मैंने जाना
भीड़

असल में अकेलेपन का एक समूह है
जहां हर कोई
अपने पुकारे जाने की प्रतीक्षा में है
'अरे सुनो'

(आँखें)

आगाह करता हूं तुम्हें
कभी मत उतरना
मेरी इन आँखों में
सिर्फ इस खतरे के बरअक्स ही नहीं
कि

ये गहरी हैं
बल्कि दूसरा जोखिम कहीं ज्यादा बड़ा है
असल में

इनमे जो खारा पानी है
उसमे गर तुम डूब गए
तो

एक अजीबोगरीब इल्जाम अपने सर ले बैठोगे
तुम कि
जो खारा पानी तुमने किसी और को दिया
उसी में डूब कर खुद तुमने खुदकुशी कर ली



अंबरीष श्रीवास्तव
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



॥ शाश्वत जीवन ॥

शाश्वत सफर है जीवन
इसे किशतों में मत बांटना...

जो बिखर जाओ कभी
तो समेट लेना टुकड़ों को
टूट के कभी हार मत मानना
शाश्वत सफर है जीवन
इसे किशतों में मत बांटना ...

जो गुरुर हो कभी
खुशियों की छाँव का
पलट के गमों की धूप देख लेना
शाश्वत सफर है जीवन
इसे किशतों में मत बांटना...



अर्चना गुप्ता

बहन -सुश्री रीनू गुप्ता, क.अनुवादक

जो कांटे हो राह में
सब्र का मरहम लगा लेना
गर रात ही रात हो जीवन मे
मेहनत का सूरज उगा लेना
भोर आएगी सफलताओं की
बस उम्मीदों का साथ मत छोड़ना
शाश्वत सफर है जीवन
इसे किशतों में मत बांटना...

हो लहर भयानक कितनी भी
चलें हवाएं विपरीत ही
साहस का पतवार चला लेना
खुद को मंझधार में मत खोना
शाश्वत सफर है जीवन
इसे किशतों में मत बांटना...

हिंदी भाषा



शिव कुमार सेन
सहायक पर्यवेक्षक

आज अपने ही घर में कैद हो गयी, हिंदी
बेबसी, उदासी एवं एकाकी में है, हिंदी
कभी बोलबाला था हिंदुस्तान में हिंदी का
आज अंधेरे में गुम हो गयी है, हिंदी
अंग्रेजी की आंधी में बदहवास हैं, हिंदी

उस सख्ख का ओहदा भी कम हो गया, जिनके अल्फाज हैं हिंदी
अनेकों विख्यात कवियों की जुबान थी, हिंदी
मगर आसमान से उतरकर धरातल पर है, आज हिंदी
कभी, सभी भाषाओं के माथे की बिन्दी थी, हिंदी
आज तन्हाई में उदास है, हिंदी
प्रियतम, प्रियतमा के सँजोये सपनों का सुखद एहसास है, हिंदी
करोड़ों मजलूमों, गरीबों की आस है, हिंदी

मुझे बहुत अफसोस है, इसकी बेबसी और लाचारी पर
खूबसूरत अल्फाज की भाषा आश्रित हो गयी, दूसरों की बंदगी पर
अगर अब भी न चेते हम,
तो बंद बक्सों की धरोहर हो जाएगी, हिंदी



मुक्तक

सम्बन्ध बनाना
सम्बन्धों को जीना और बात है
सम्बन्धों को घोलकर पीना
उदरस्थ करना
उसके रस को रक्त बनाना
उसे भावना संग दौड़ना, कुछ और बात है।



(किट्टण लता)
सहायक निदेशक / राजभाषा

सपने देखना
सपनों का बन जाना और बात है
सपने को हकीकत बनाना उसी का हो जाना
खो जाना
ऐसे हालात बनाना कुछ और बात है।।

साथी बनाना
साथी का बन जाना और बात है
साथी को दिल से लगाना
दिल के गहरे ले जाना
मिट जाना
ऐसे जज्बात जगाना कुछ और बात है।

प्रेम करना
प्रेमी का हो जाना और बात है
प्रेम को मंजिल बनाना
देना ही देना
लेना भूल जाना
ऐसी ही बिसात बिछाना
कुछ और बात है।



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

खण्ड - 3

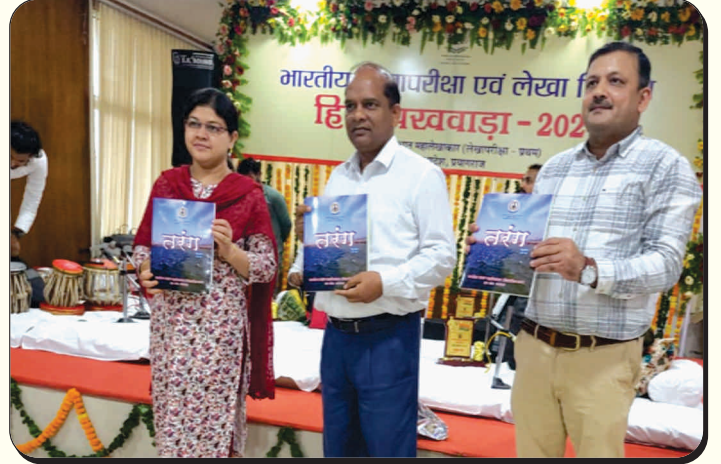
कार्यालय की गतिविधियां

हिंदी पखवाड़ा

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक 14.09.2024 से दिनांक 27.09.2024 तक कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

इस दौरान कार्यालय में अनेक हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनमें अधिक से अधिक संख्या में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रतिभाग किया।

समापन समारोह के दिन कार्यालय की हिंदी पत्रिका तरंग के 145-146 वें अंक का विमोचन किया गया एवं हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत कर उनका उत्साहवर्धन किया गया।



सेवानिवृत्ति

निष्ठापूर्वक अपनी सेवा अवधि पूर्ण करने के उपरांत सेवानिवृत्त हो रहे, विभिन्न अधिकारी व कर्मचारीगण को प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कार्मिकों ने कार्यालय से जुड़े अपने अनुभवों को साझा किया एवं सम्मान हेतु प्रधान महालेखाकार महोदय के प्रति आभार व्यक्त किया।



ऑडिट दिवस समारोह-2024

दिनांक 16 से 22 नवंबर 2024 तक प्रयागराज स्थित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के समस्त कार्यालय द्वारा ऑडिट सप्ताह मनाया गया। इस दौरान विभिन्न कार्यक्रमों जैसे रंगोली प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता, ऑडिट के विभिन्न विषयों पर 03 दिवसीय कार्यशाला एवं समापन समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का आयोजन कराया गया।





गणतंत्र दिवस-2025

कार्यालय में वरिष्ठ उपमहालेखाकार / प्रशासन महोदया द्वारा 76 वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर कार्यालय के अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित रहे। ध्वजारोहण के पश्चात तिरंगे को सलामी भी दी गई। अपने अध्यक्षीय भाषण के दौरान वरिष्ठ उपमहालेखाकार / प्रशासन महोदया ने सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं दीं तथा राष्ट्र एवं समाज की प्रगति हेतु अपने जिम्मेदारियों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने की बात कही। वरिष्ठ उपमहालेखाकार / प्रशासन महोदया ने बताया कि एक विस्तृत राष्ट्र को सफलतापूर्वक शासित करने हेतु संविधान की भूमिका अहम हो जाती है। हमारे संविधान निर्माताओं ने गणतंत्र की मूल भावना को केंद्र में रखते हुए 'जनता का शासन' स्थापित किया है। उन्होंने वर्तमान समय में संविधान और विधिक नियमों के प्रति और अधिक निष्ठा एवं अनुपालन सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल दिया।



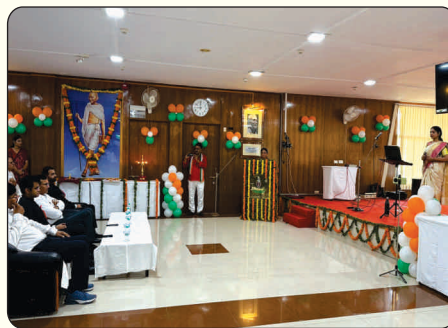
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

दिनांक 21 जून 2025 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर कार्यालय के प्रथम तल स्थित सरस्वती सभागार में एक योगाभ्यास सत्र का आयोजन किया गया। प्रातः 7 बजे से आयोजित इस योगाभ्यास सत्र में कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। योग प्रशिक्षक ने कार्यालय के काम-काज में योग की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला तथा अनेक योगासनों के माध्यम से कर्मिकों के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर करने का उपाय बताया। इस सत्र में प्रधान महालेखाकार महोदय एवं अन्य वर्गाधिकारीयों के साथ कार्यालय के कर्मिकों की सक्रिय भागीदारी रही तथा प्रधान महालेखाकार महोदय ने योग को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने की आवश्यकता पर बल दिया। सत्र के अंत में सभी अधिकारियों एवं कर्मिकों ने सत्र के सफल संचालन हेतु आमंत्रित प्रशिक्षक के प्रति आभार व्यक्त किया।



स्वतंत्रता दिवस 2025

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज में 79 वां स्वतंत्रता दिवस राष्ट्रीय उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदय, अन्य वर्गाधिकारी एवं शाखाधिकारी की गरिमामय उपस्थिति में ध्वजारोहण समारोह संपन्न हुआ। ध्वजारोहण के उपरान्त प्रधान महालेखाकार महोदय ने पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समझाते हुए वृक्षारोपण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया। इस कार्यक्रम के माध्यम से पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने का संदेश दिया गया। साथ ही महोदय ने देश के अमर शहीदों को नमन करते हुए उनकी सर्वोच्च बलिदान को याद किया और श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का सांस्कृतिक पक्ष भी अत्यंत मनमोहक रहा, जिसमें कार्यालय के समस्त कर्मियों ने उत्साहपूर्वक विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं, जिससे स्वतंत्रता दिवस की गरिमा और भी बढ़ गई। इस प्रकार यह महोत्सव देशभक्ति, एकता और समर्पण की भावना के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।



उत्तर क्षेत्रीय हॉकी टूर्नामेंट -2025

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), उत्तर प्रदेश प्रयागराज द्वारा दिनांक 6.03.2025 से 9.03.2025 तक उत्तर क्षेत्रीय हॉकी टूर्नामेंट-2025 का आयोजन कराया गया , जिसमें कार्यालय प्रधान महालेखाकार, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज की टीम ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुये उप विजेता रही।



विभिन्न सेमिनार का आयोजन

कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों के लिए कल्याण अनुभाग द्वारा वित्तीय जागरूकता के लिए विभिन्न बैंकों द्वारा बैंकिंग जागरूकता शिविर, **ART OF LIVING** द्वारा मानसिक शांति एवं उत्तम स्वास्थ्य हेतु स्वास्थ्य एवं प्रसन्नता के संदर्भ में एक शिविर तथा **CENTER FOR SIGHT** द्वारा अधिकारियों / कर्मचारियों एवं उनके परिजनों के लिए कार्यालय परिसर में नेत्र जाँच एवं नेत्र सम्बंधित अन्य समस्याओं के समाधान हेतु शिविर का आयोजन किया गया।

आर्ट आफ लिविंग की कुछ झलकियां



सितम्बर 2024 से अगस्त 2025 तक सेवानिवृत्त हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सूची

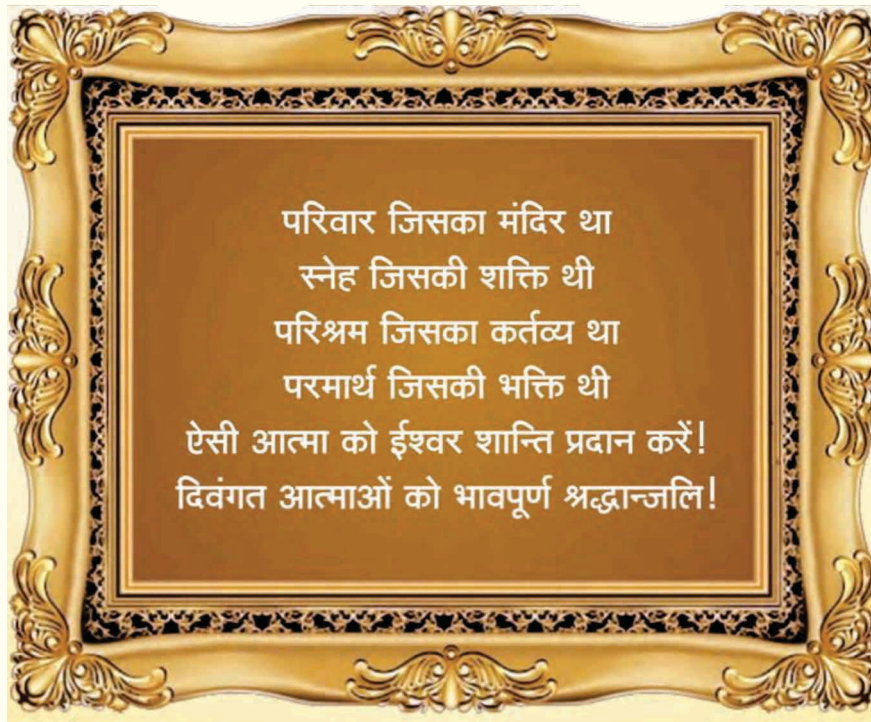
क्रम सं.	नाम	पदनाम	आई डी संख्या
1	सत्येद्र कुमार श्रीवास्तव	स.ले.प.अ.	UPALA3231844
2	सुरेश चन्द्र	एम.टी.एस.	UPALA3231561
3	विकास चंद्र	व.ले.प.अ.	UPALA3231663
4	श्याम किशोर	स.ले.प.अ.	UPALA3231744
5	श्याम बिहारी	स.ले.प.अ.	UPALA3230975
6	मजहर जिया	स.ले.प.अ.	UPALA3232845
7	अरुण कुमार	स.ले.प.अ.	UPALA3231826
8	शिव प्रसाद यादव	व.ले.प.	UPALA3231524
9	गणेश चंद्र	व.ले.प.अ.	UPALA3231822
10	लाल जी	स.ले.प.अ.	UPALA3232186
11	विजय बहादुर सिंह	पर्यवेक्षक	UPALA3230979
12	रत्नधर शुक्ला	स.ले.प.अ.	UPALA3232461
13	इंदु शुक्ला	स.ले.प.अ.	UPALA3231796
14	श्याम लाल	व.ले.प.	UPALA3231438
15	राजेश कुमार	व.ले.प.अ.	UPALA3231765
16	परदेशी लाल	स.ले.प.अ.	UPALA3231109
17	मनोज कुमार श्रीवास्तव	स.ले.प.अ.	UPALA3231004
18	कृष्णा नंदन	व.ले.प.	UPALA3231588
19	अजय कुमार मालवीय	स.ले.प.अ.	UPALA3231835
20	शिव कुमार पाठक	स.ले.प.अ.	UPALA3232470

21	वासु देव चटर्जी	व.ले.प.अ.	UPALA3230477
22	कैलाश राजपूत	स.ले.प.अ.	UPALA3231786
23	राज रानी यादव	व.ले.प.	UPALA3231721
24	इन्द्रजीत	व.ले.प.अ.	UPALA3231809
25	राजपत	व.ले.प.अ.	UPALA3231766
26	विवेक कुमार श्रीवास्तव	व.ले.प.अ.	UPALA3231660
27	रामेश्वर सहाय श्रीवास्तव	स.ले.प.अ.	UPALA3231748
28	राम बिहारी मिश्रा	स.ले.प.अ.	UPALA3231821
29	अजय कुमार	व.ले.प.	UPALA3231429
30	विनोद कुमार सिंह	ले.प.	UPALA3232087
31	रूप नाथ यादव	एम.टी.एस	UPALV3232061
32	नगेन्द्र भंडारी	व.ले.प.अ.	UPALV3230449
33	पंकज कुमार सिंह	व.ले.प.अ.	UPALA3231684
34	अविनाश चन्द्र	स.ले.प.अ.	UPALA3231752
35	आर.बी.एस. कुशवाहा	स.ले.प.अ.	UPALA3231770
36	रामकांत बाजपेई	स.ले.प.अ.	UPALA3232135
37	राजेश कुमार वर्मा	व.ले.प.	UPALA3231442
38	महेन्द्र कुमार मौर्या	लिपिक	UPALA3231523
39	मो. अहमद	व.ले.प.अ.	UPALB3231661
40	अच्छे लाल	व.ले.प.अ.	UPALV3231782
41	त्रिलोकी नाथ	स.ले.प.अ.	UPALA3231758
42	अजय कुमार राय	स.ले.प.अ.	UPALA3231783
43	सूर्य नारायण मिश्र	स.ले.प.अ.	UPALA3231848
44	शरद कुमार सोनकर	व.ले.प.	UPALV3231053

स्मृतिशेष

कार्यालय अपने प्रियजनों के असामयिक निधन से शोकाकुल है।
हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को
अपने ही श्री चरणों में स्थान प्रदान करें।

क्रम सं.	नाम (सर्व श्री)	पदनाम/व्यक्तिगत संख्या	देहावसान की तिथि
1.	अजय कुमार धुरिया	पर्यवेक्षक / UPALA-1405	अक्टूबर-24
2.	शीतला प्रसाद	एम.टी.एस /UPALA-2049	नवम्बर-24
3.	श्याम सुन्दर	वरि. लेखापरीक्षक / UPALB -1444	जनवरी-25
4.	संजय कुमार	एम.टी.एस /UPALV-1552	अप्रैल-25
5.	सुशील कुमार	एम.टी.एस /UPALV-2081	अप्रैल-25
6.	कल्लू	एम.टी.एस /UPALA-1626	जुलाई-25



राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष हिंदी दिवस पर आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा समारोह में देश भर के सभी केंद्र सरकार के विभागों एवं मंत्रालयों के राजभाषा से जुड़े अधिकारियों एवं अनुवादकों को आमंत्रित किया जाता है एवं सम्मिलित रूप से हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन किया जाता है।

हिंदी दिवस 2024 का उद्घाटन समारोह भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित किया गया था। समारोह की कुछ झलकियाँ -:



कार्यालय में आयोजित रंगोली प्रतियोगिता की कुछ झलकियाँ





SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रकाशक :

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



मुद्रक :

श्रद्धा इण्टरप्राइजेज

255-ए चक, जीरो रोड, प्रयागराज

मो. : 9415231308, 9305562491